यति नरसिंहानन्द सरस्वती ने अपने रक्त से लिखा सीएम योगी आदित्यनाथ को पत्र

वर्ष 9, अंक: 5, नवम्बर-2018

मूल्य: 10 रुपये

सूर्या बुलेटिन

RNI NO. UPHIN/2009/32604

नक्कार खाने में तूती बजाता एक सन्यासी

'हिन्दुओं किसी और काम पहले अपने नेताओं को चीन जैसे कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनवाने के लिए मजबूर करो'

:-यति नरसिंहानंद सरस्वती

माँ जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार

हिन्दू स्वाभिमान

सनातन धर्म रक्षा हेतु हिन्दू स्वाभिमान से जुड़े

जगदम्बा माह काली डासना वाली का परिवार

आपका हार्दिक स्वागत करता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष यति मां चेतनानंद सरस्वती

मो. 9359931727, 93111 39274

www.hinduswabhiman.com

सूर्या बुलेटिन

वर्ष: 9, अंक: 5
नवम्बर 2018

मुख्य मार्गदर्शक
यति मां चेतनानन्द सरस्वती जी

मुख्य संरक्षक मंडल
डॉ. आर.के. तोमर
श्री विनोद सर्वोदय
श्री हरिनारायण सारस्वत
श्री राजेश यादव
श्री नीरज त्यागी

सम्पादक
अनिल यादव

प्रबन्ध सम्पादक
शुभम मंगला

उप-सम्पादक
पृथ्वीराज चौहान (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)

सम्पादकीय मंडल
श्री संदीप वशिष्ठ
श्री प्रमोद शर्मा
श्री अक्षय त्यागी
श्री मुकेश त्यागी
श्री दिव्य अग्रवाल
श्री जतिन गोयल

कानूनी सलाहकार
श्री आरपी सिसौदिया (एडवोकेट)
श्री राजकुमार शर्मा (एडवोकेट)

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सीमा यादव द्वारा मै0 सुभाषिनी ऑफसैट प्रिन्टर्स एप-10 पटेल नगर तृतीय, गाजियाबाद से मुद्रित करवाकर प्राचीन देवी मंदिर डासना, गाजियाबाद उ.प्र. से प्रकाशित किया।
टाइटल कोड: UPHIN40005
सम्पादक: अनिल यादव
मो. 9311139274
suryabulletin@gmail.com
RNI NO. UPHIN/2009/32604

नोट: किसी भी लेख की जिम्मेदारी लेखक की खुद की रहेगी। किसी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा गाजियाबाद न्यायालय में ही होगा।

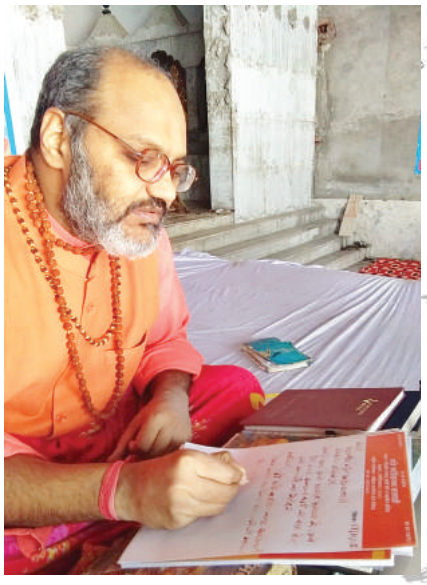

कवर स्टोरी

नक्कार खाने में तूती बजाता एक संन्यासी पेज-24

'धमार्धारित आतंकवाद एक सच्चाई' पेज-10

यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज को कमजोर और अकेला समझने की गलती न करे मोदी सरकार : यति माँ चेतनानंद सरस्वती पेज-38

'किसी के नाम से मशहूर होकर गाँव चलता है' पेज-40

क्या ...देवबंद मदरसा आतंकवाद का अड्डा है? पेज-46

सम्पादकीय

एक भी कंडील जलता है, कहीं पर भी न कोई

एक भी कंडील जलता है, कहीं पर भी न कोई,
जुगनुओं की रोशनी में काम चलता है शहर का।
इस कदरी अमृत सरेबाजार अपमानित हुआ है,
हो गया है भाव ऊंचा सब दुकानों पर जहर का।
लग रहा है फिर परीक्षित अब यहां कोई भरेगा,
रस विधायक स्वर सपेरों का समर्थन कर रहे हैं।
राष्ट्र के निर्माण की जो खूब बातें कर रहे थे
राष्ट्र के निर्मम लुटेरों का समर्थन कर रहे हैं।

एक संन्यासी जिनका नाम यति नरसिंहानंद है,शिव शक्तिधाम में 1नवम्बर, 2018 से आमरण अनशन की जिद ठान कर डासना के शिव शक्तिधाम में बैठा हुआ है। उसे लगता है कि सनातन धर्म और हिन्दू समाज के अस्तित्व पर घोर संकट है। उसके पास कुछ आंकड़ें हैं, जो उसने 22 साल इस्लामिक जिहाद के इतिहास का अध्ययन करके एकत्रित किये हैं। इस्लामिक जिहाद के इतिहास का एक-एक नंगा सच इस संन्यासी ने खोजा है और अपने इस विशिष्ट अध्ययन के कारण पूरी दुनिया के इस्लामिक जिहादियों के बारे में कही हुई इस संन्यासी की एक-एक बात सत्य सिद्ध होती है। अब यह संन्यासी भविष्यवाणी कर रहा है कि केवल 2019 में होने वाले आम चुनाव में अपनी जनसंख्या के माध्यम से मुसलमान इस देश में अपना प्रधानमंत्री बना लेंगे और उसके बाद सनातन धर्म का सूर्य हमेशा के लिए अस्त हो जाएगा। यह संन्यासी भारत सरकार से केवल इतना चाहता है कि यहां एक ऐसा कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बने कि एक देश में चाहे कोई किसी धर्म का मानने वाला हो, किसी जाति से सम्बन्धित हो, किसी प्रांत का रहने वाला हो,कोई भी भाषा बोलता हो, उसे किसी भी कीमत पर दो से ज्यादा बच्चे पैदा करने का अधिकार नहीं होना चाहिये। अगर कोई दो से ज्यादा बच्चे पैदा करता है तो उसे कठोर दण्ड मिलनाा चाहिये।

अनिल यादव

ऐसे समय में जब भारत के सभी नामचीन हिन्दू धर्माचार्य पूरी शक्ति से राममंदिर का मुद्दा उठाये हुए कहीं धर्मसंसद कर रहे हैं, कहीं धर्म सभा कर रहे हैं और धर्मादेश जारी कर रहे हैं। इस संन्यासी की बात नक्कारखाने में तूती की तरह लगती है और लगता है कि क्या यह व्यक्ति बेकार की जिद करे हुए बैठा है। सारे हिन्दू धर्मगुरु कैसे गलत हो सकते हैं। बड़े-बड़े जगद्गुरु, बड़े-बड़े महामंडलेश्वर,बड़े-बड़े महन्त, श्री महन्त और बड़े-बड़े उपाधिधारी,संन्यासी और संत राम मंदिर बनवा कर मोदी जी और योगी जी को साक्षात् भगवान श्रीराम का अवतार घोषित करने की तैयारी में यूं ही थोड़े बैठे हैं। अखिल भारतीय संत समिति के तत्वावधान में 3 और 4 नवम्बर,2018 को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में बड़े-बड़े सन्तों ने राम मंदिर बनवाने के धर्मादेश से ज्यादा 2019 में नरेन्द्र मोदी को दोबारा प्रधानमंत्री बनवाने का धर्मादेश दिया। सभी संतों को और हिन्दुओं के संगठनों को पूर्ण विश्वास है कि 2024 तक मोदीजी और उनके बाद अनन्तकाल तक योगी भारत पर राज करके भारतवर्ष को पुनः जगद्गुरु बनाकर ही दम लेंगे।

एकतरफ सभी धर्मगुरु इतने दृढ़ विश्वास के साथ पूरे भारत के हिन्दुओं को जगाने में लगे हुए हैं, दूसरी तरफ यति नरसिंहानंद सरस्वती जी हिन्दू का मनोबल तोड़ते हुए कह रहे हैं कि कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून नहीं बना तो राम मन्दिर को धरती की कोई ताकत बना ही नहीं सकेगी परन्तु जो आज मन्दिर हैं वो भी एक दिन मस्जिद बन जाएंगे।

उनका तो यह भी कहना है कि भारत विश्वगुरु तो जरूर बनेगा परन्तु वह इस्लाम का विश्वगुरु होगा जो कुरआन के आदेश पर चलते हुए दुनिया के हर काफिर को मिटाने का कार्य करेगा। उस स्थिति में भारत पूरी दुनिया का कैंसर सिद्ध होगा।

अब मुझे नहीं पता कि यह संन्यासी सही बोल रहा है या बाकी सारे धर्मगुरु सही हैं। मुझे यह भी नहीं पता कि भारत सनातन का जगद्गुरु बनेगा या इस्लाम के जिहाद का विश्व गुरु बनेगा। मुझे यह भी नहीं पता कि राम मंदिर बनेगा या बाकी सारे मंदिर टूटेंगे। आज मेरा मन चाहता है कि इस संन्यासी की एक भी बात सत्य न हो जाएं परन्तु मेरा दिमाग कहता है कि यह संन्यासी कभी झूठ नहीं बोलता और इसकी कोई भी भविष्यवाणी कभी किसी ने झूठी होते हुए नहीं देखी। अगर इस संन्यासी की ये सब भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हो गईं तो न जाने क्या होगा? क्या हम अपने सर्वनाश का खतरा मोल ले सकते हैं? इस देश का एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते, मैं देश के हर नागरिक से यह कहना चाहता हूं कि हर नागरिक इस संन्यासी की बात सुनें और इसकी बातों पर ध्यान दें। अगर उन्हें यह लगे कि इस संन्यासी की बात ठीक है तो उन्हें अपने नेताओं को भारत में कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने के लिए मजबूर करना चाहिये। इस संन्यासी की बात अगर गलत है तो इसे जेल या पागलखाने में होना चाहिये।

अब सच जो भी हो परन्तु हम सूर्या बुलेटिन की टीम इस संन्यासी की बात सुनेंगे जरूर और जरूर और आप तक पहुंचायेंगे भी।

हिन्दू शेर राजाराम जाट ने वीर गोकुल जाट की हत्या का प्रतिशोध

अकबर के मकबरे को तोड़ व कब्र खोद के अस्थियाँ जलाकर लिया

चौधरी अंजली आर्या (रोरी)

भारत में औरंगजेब का शासन चल रहा था और हिन्दुओं का जीना मुश्किल हो गया था। औरंगजेब, जिसने अपने पिता को भी कैद में डाल दिया था, उसने सत्ता के लिए अपने सगे भाइयों को भी मार दिया था। हिन्दुओं पर औरंगजेब के अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे थे। औरंगजेब से लोहा लेने एक वीर जाट खड़ा हो गया जिसका नाम था राजाराम। राजाराम जाट, भज्जासिंह का पुत्र था और सिनसिनवार जाटों का सरदार था। वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी था, वह एक साहसी सैनिक और विलक्षण राजनीतिज्ञ था। उसने बड़ी चतुराई से जाटों के दो प्रमुख कबीलों- सिनसिनवारों और सोघरियों (सोघरवालों) को आपस में मिलाया। सोघर गाँव सिनसिनी के दक्षिण-पश्चिम में था। रामचहर सोघरिया कबीले का मुखिया था। राजाराम और रामचहर सोघरिया दोनों ने मिलकर औरंगजेब के अत्याचारों से लड़ने का निर्णय लिया।

सिनसिनी से उत्तर की ओर, आऊ नामक एक समृद्ध गाँव था। यहाँ औरंगजेब ने एक सैन्य दल मालगुजारी के लिए नियुक्त कर रखा था। इस क्षेत्र से लगभग 2,00,000 रुपये सालाना मालगुजारी होती थी। इस क्षेत्र में व्यवस्था बनाने के लिए एक चौकी बनाई गयी थी। इस चौकी के अधिकारी का नाम था लालबेग, जो एक नीच पशु प्रवृत्ति का व्यक्ति था। एक दिन एक हिंदू अपनी पत्नी के साथ गाँव के कुएँ

पर विश्राम के लिए रुका हुआ था। लालबेग का एक कर्मचारी उधर से गुजर रहा था, वह हिन्दू युवती की सुन्दरता को देखकर तुरन्त लालबेग को खबर देता है। लालबेग अपने सिपाही भेजकर हिन्दू युवती को जबरन अपने चौकी पर उठा लाने के लिए भेज देता है , उसके सिपाही हिन्दू युवक को मार पीट कर भगा देते हैं और उसकी पत्नी को लालबेग के निवास में उठा लाते हैं।

यह खबर चारों तरफ फैल जाती है और राजाराम के कानों में पड़ती है। राजाराम ठान लेता है कि वह लालबेग को सबक सिखा के ही रहेगा। उसने अपने सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार किया और लालबेग को मारने की योजना बनाई। राजाराम ने अपने सैनिकों के साथ लालबेग की चौकी को चारों तरफ से घेरकर हमला किया इस दौरान भयंकर युद्ध में काफी संख्या में लालबेग और उसके सिपाही मारे गये। इस युद्ध के बाद राजाराम ने अपनी सेना को आधुनिक हथियारों से सुव्यवस्थित सेना बनाना प्रारम्भ कर दिया। आधुनिक व प्राचीन अस्त्र-शस्त्रों से युक्त उसकी सेना अपने नायकों की आज्ञा मानने को हमेशा तैयार रहती थी। राजाराम ने जाट-प्रदेश के सुरक्षित जंगलों में छोटी-छोटी कि ले नुमा गढ़ियाँ बना दीं। इन पर गारे की (मिट्टी की) परतें चढ़ाकर मजबूत बनाया गया जिन पर तोप-गोलों का असर बहुत कम होता था। राजाराम के चर्चे चारों दिशा में होने लगे। उसने औरंगजेब से विद्रोह कर उसे युद्ध के लिए ललकारा। उसने धौलपुर से आगरा तक की यात्रा के लिए प्रति व्यक्ति से 200 रुपये लेना शुरू किया। इस एकत्रित धन को राजाराम अपनी सेना के प्रशिक्षण पर खर्च करता था, जो मुगलों को ढूंढ़-ढूंढ़ कर मारती थी। जिस प्रकार मुगलों ने हिन्दू मंदिरों को तोड़ा था उसी प्रकार राजाराम उनके मकबरों और महलों को तोड़ता था। राजाराम के भय से मुगलों ने बाहर निकलना बन्द कर दिया था।

राजाराम की वीरता की बात औरंगजेब के कानों तक भी पहुंची। उसने तुरन्त कार्रवाई की और जाट- विद्रोह से निपटने के लिए अपने चाचा, जफरजंग को भेजा। राजाराम ने उसको भी धूल चटाई। उसके बाद औरंगजेब ने युद्ध के लिए अपने बेटे शाहजादा आजम को भेजा। लेकिन उसे वापस बुलाया और आजम के पुत्र बीदरबख़्त को भेजा। बीदरबख़्त बालक था इसलिए जफरजंग को प्रधान सलाहकार बनाया। बार-बार के बदलावों से शाही

फौज में षड्यन्त्र होने लगे। राजाराम ने मौके का फायदा उठाया, बीदरबख़्त के आगरा आने से पहले ही राजाराम ने मुगलों पर हमला कर दिया।

सन् 1688, मार्च में राजाराम ने सिकंदरा पर आक्रमण किया और 400 मुगल सैनिकों को काट दिया। कहते हैं कि राजाराम ने अकबर और जहांगीर के कब्र को तोड़ कर उनकी अस्थियों को बाहर निकाला और जला कर राख कर दिया।

मनूची का कथन है कि जाटों ने काँसे के उन विशाल फाटकों को तोड़ा। उन्होंने बहुमूल्य रत्नों और सोने-चाँदी के पत्थरों को उखाड़ लिया और जो कुछ वे ले जा नहीं सकते थे, उसे उन्होंने नष्ट कर दिया था। राजाराम के साहस की चर्चा होती थी और मुगल शासक उनसे डरते थे। जिस युद्ध के बीज औरंगजेब के अत्याचारों ने बोए थे, उसे राजाराम ने नष्ट कर दिया। औरंगजेब के अत्याचार, हिन्दू मन्दिरों के विनाश और मन्दिरों की जगह पर मस्जिदों का निर्माण करने से जनता के मन में बदले की भावना पनप चुकी थी। इसी कारण से लोग मुगल शासन के विरुद्ध विद्रोह करने लगे थे। राजाराम एक शूरवीर नायक थे । 4 जुलाई 1688 को राजाराम युद्ध के दौरान अपनी सेना की एक टुकड़ी का निरीक्षण कर रहे थे, उसी समय धोखे से उन पर मुगल सैनिक ने पीछे से गोली मारी, जिससे वीर योद्धा राजाराम वीरगति को प्राप्त हो गये और इस दिन रामचहर सोघरिया भी लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। हमारी सरकारों ने इन वीर योद्धाओं की याद में कोई बड़ा स्मारक भी नहीं बनवाया ताकि आने वाली पीढ़ी इनसे प्रेरणा ले सके और न ही हमें इतिहास की पुस्तकों में राजाराम जाट के बारे में पढ़ाया गया। हमें अपने शूर-वीर नायकों के बारे में नहीं पढ़ाया गया। इसी कारण आज हिन्दू भारत के छोटे से भू भाग में सिमटकर रह गया है और यहां पर भी सुरक्षित नहीं है। हम सभी को मिलकर राजाराम जाट , वीर गोकुल जाट , महाराजा सूरजमल , गौरा बादल आदि योद्धाओं पर उच्च कोटि की फिल्म बनानी चाहिए। ताकि हमारे बच्चे देश धर्म के लिए मर-मिटने को तैयार रहें । क्योंकि जो कौम बलिदान से डरने लगती है वो पारसियों, यजीदियो , कश्मीरी पंडितों की तरह अपने बच्चों को लेकर जगह-जगह भटकती फिरती है। हिन्दू को यदि शान से जीना है तो शान से लड़कर मरना सीखो।

दारा सिंह ने किंग कांग को अपने सिर के ऊपर उठाकर रिंग से बाहर फेंक दिया था

राजेश यादव
(महंत उत्तराधिकारी, डासना देवी मंदिर)

दारा सिंह का जन्म जाट परिवार में 19 नवंबर, 1928 को अमृतसर जिले के धर्मूचक गांव में सूरत सिंह रंधावा के घर हुआ था। दारा का पूरा नाम दारा सिंह रंधावा था। दारा अपने पहलवानों जैसे शरीर के चलते कुश्ती की ओर आकर्षित हुए थे। बचपन में वह अपने खेतों में काम करते थे। बाद में उन्हें अखाडे में पहलवानी सीखने के लिए प्रेरित किया गया। भारतीय कुश्ती टूर्नामेंट्स में दारा का नाम हमेशा प्रमुखता से लिया जाएगा।

दारा सिंह दुनिया के सबसे बड़े पहलवान थे। दारा सिंह का नाम जेहन में आते ही सबसे पहले उनकी विश्व चैंपियन किंग कांग के साथ कुश्ती की बात आती है।

भले ही उस मुकाबले को आज करीब 62 साल हो गये हों। लेकिन हमारे बुजुर्ग उस किस्से को आज भी गर्व के साथ सुनाते हैं। दरअसल इस मुकाबले ने दारा सिंह को रातों रात सुपर स्टार का दर्जा दिला दिया था। इस जीत से रुस्तमे हिंद दारा सिंह ने कुश्ती (अमेरिकी शैली की यानी

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ स्टाइल) के इतिहास में ऐसी मिसाल बना दी, जिसे बाद में भी कोई पार नहीं कर पाया।

दारा सिंह और किंग कांग के बीच सोनीपत के गांव भटगांव में 12 दिसंबर, 1956 को यह मुकाबला हुआ था। तब दारा सिंह की उम्र 28 साल थी और उनका वजन 130 किलो था। जबकि उनके ऑस्ट्रेलियाई चैलेंजर किंग कांग करीब 200 किलो वजनी थे।

किंग कांग का असली नाम एमिली काजा था। दारा सिंह ने लगभग 15-20 मिनट तक चले मुकाबले के बाद किंग कांग को अपने सिर के ऊपर उठाकर रिंग से बाहर फेंक दिया था। कहा जाता है कि उस समय दर्शकों में तत्कालीन सोवियत यूनियन के प्रधानमंत्री निकोलाई बुल्गानिन भी मौजूद थे। भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू भी यह मुकाबला देखने आने वाले थे, लेकिन किन्हीं कारणोंवश वह नहीं जा पाए।

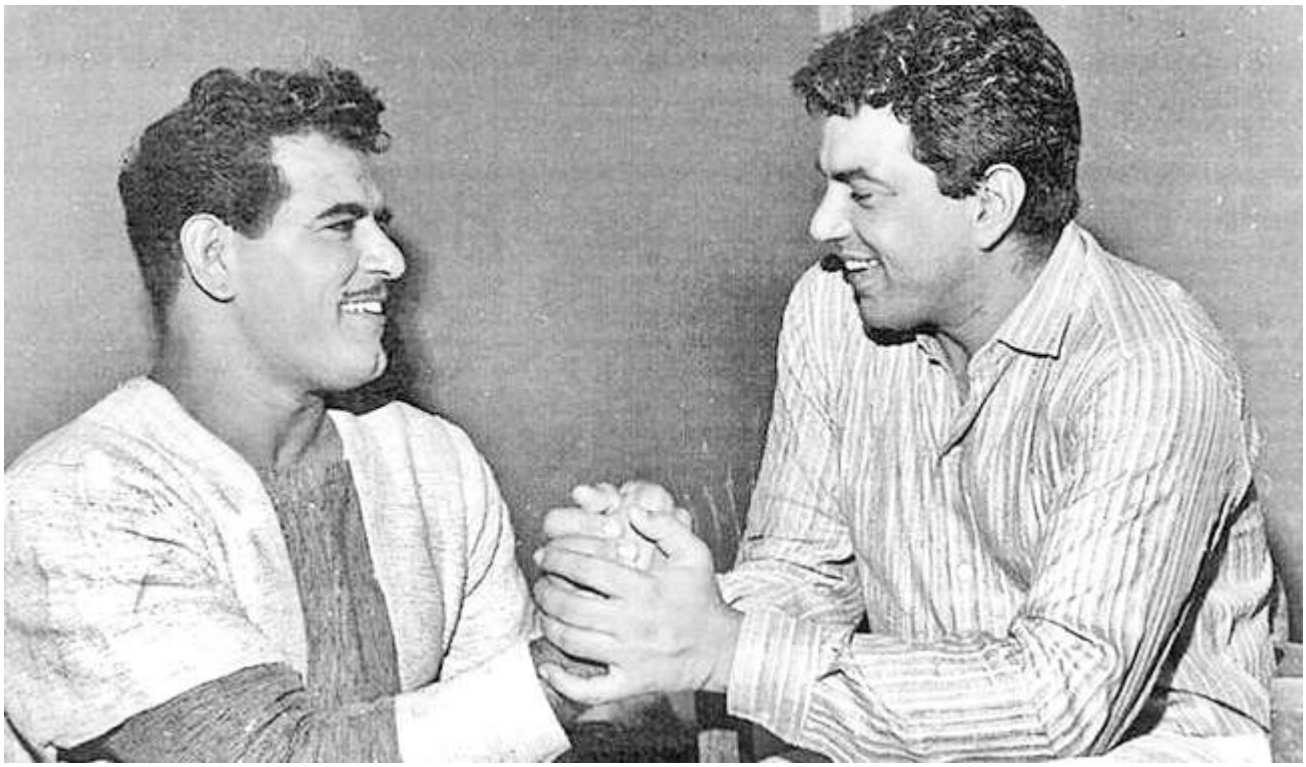

बचपन से ही था कुश्ती का शौक

दारा सिंह बचपन से ही कुश्ती के प्रति आकर्षित रहे, क्योंकि उनका कद लंबा और शरीर बलिष्ठ था। किशोरावस्था तक वह कई घंटे कसरत किया करते थे। दूध, मक्खन और बादाम उनका मुख्य आहार हुआ करता था। 1947 में वह सिंगापुर चले गए वहां उन्होंने तरलोक सिंह को हराकर मलेशियाई कुश्ती चैंपियनशिप जीती। इस जीत के बाद उनकी विजय यात्रा की शुरूआत हो गई। पेशेवर पहलवान के तौर उन्होंने काफी देशों का दौरा किया और अपना लोहा मनवाया। 1952 में वह भारत आ गए और यहां भी चैंपियन बने। इसके बाद उन्होंने राष्ट्रमंडल देशों का दौरा किया। उन्होंने 1959 में कलकत्ता में कनाडा के जॉर्ज गारडियांका और न्यूजीलैंड के जॉन डिसिल्वा को शिकस्त देकर राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप अपने नाम कर ली। फिर बारी आई विश्व चैंपियन अमेरिका के लाऊ थेज की मई, 1968 में थेज को हराकर दारा सिंह विश्व चैंपियन बने।

500 से ज्यादा कुश्ती जीतीं

दारा सिंह ने अपने करियर में करीब 500 कुश्तियां लड़ी और सभी में जीत दर्ज की. 1983 में 55 वर्ष की उम्र में उन्होंने कुश्ती से संन्यास लिया और जीवन भर अजेय रहे। उन्होंने करीब 36 साल तक अखाड़े में अपना दम-खम दिखाया। खास बात यह है कि दारा सिंह ने ज्यादातर बड़े पहलवानों को उनके घर में जाकर शिकस्त दी। अपराजेय रहने के लिए उनका नाम आर्ब्जवर न्यूज लेटर हॉल ऑफ फेम में दर्ज है। आज के पहलवानों को रुस्तमे हिंद दारा सिंह रंधावा को आदर्श मानकर उनकी तरह कहठन परिश्रम कर अपना व देश का नाम रोशन करना चाहिए।

भारत की समस्या नई दिल्ली है, चीन नहीं

चीन LAC पर राष्ट्रीय राजमार्ग बनाए और भारत Observation Post भी न बनाये
शौचालय में बैठकर इतिहास नही रचा जाता, चीन का जवाब उसी की नीति से देना होगा

1962 के परिणामों से हम सब वाकिफ हैं। हमारी और चीन की सीमाएं तीन सेक्टरों में बांटी जा सकती हैं।

पूर्वी सेक्टर में अरुणाचल प्रदेश , मध्य सेक्टर में उत्तराखण्ड और हिमाचल और पश्चिमी सेक्टर में सिक्किम और लददाख । कुल मिलाकर हमारी चीन के साथ सीमा की लम्बाई करीब चार हजार किलोमीटर है। वर्तमान में तो चीन ने सीमा की इस लम्बाई को करीब दो हजार किलोमीटर ही माना है। चीन का कहना है की लददाख के साथ लगने वाली सीमा तो हमारे मित्र देश पाकिस्तान के जम्मू और कश्मीर की है। इस विषय पर किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले हम दो भागों में विश्लेषण करेंगे । पहला , चीन की मंशा और दूसरा, हमें करना चाहिए।

कर्नल तेजेंद्र पाल त्यागी, वीर चक्र

1) चीन की मंशा - चीन और भारत के बीच में Line Of Actual Control (वास्तविक नियंत्रण रेखा) है। हम दिल्ली में ताकतवर हैं परन्तु जैसे-जैसे हम दिल्ली से दूर होते जाते हैं हमारी ताकत कम होती जाती है। जिस बिंदु पर यह ताकत शून्य हो जाती है उसे ही हम अपनी सीमा कहेंगे और यह वही बिंदु होता है, जहाँ करीब करीब दूसरे मुल्क की ताकत भी क्षीर्ण हो जाती है। चूँकि यह वास्तविक सीमा रेखा हैं इसलिए इसमें कुछ बदलाव सीमा पर तैनात सुरक्षा बलों की आक्रामक क्षमता के कारण भी होता रहता है। इसे ही हम Line Of Actual Control कहते हैं। इसकी अवहेलना चीन के द्वारा ही क्यों ?

यह कहानी प्रारम्भ होती है सन् 1986 से जब चीन ने अरुणाचल के सुमद्रोम चू इलाके में एक टेन्ट गाड़ा था। उस समय चीन की मंशा भारत की ताकत को भांपने में की थी। चीन यह देखना चाहता था कि क्या भारत आक्रमण मोड में है।

9 सालो तक चीन का वो टेन्ट गडा रहा और 1995 में उन्होंने स्वय ही उसे बंद कर दिया और वापस चले गये। उस समय चीन महाशक्ति नहीं बना था। अब बन गया है। 15 अप्रैल 2013 को चीन के कुछ सैनिक लददाख के दौलत बैग ओलडी में घुसे , फिर कुछ छोटे वाहन आये , फिर बड़े वाहन, फिर टेन्ट लगाया गया और फिर हेलिकापटर आये। सैनिकों के पास लाइट मशीन गन भी थी। यह करने से पहले चीन ने सोची समझी नीति के तहत चार कदम उठाये थे -

▸ 2006 में चीन के राजदूत ने पूरे अरुणाचल को अपना बताया था और इसका नाम रखा था जैग नैन।

▸ 2009 में चीन ने कश्मीरियों को स्टपेल्ड वीजा देना शुरू किया था और उत्तरी कमाण्ड के आर्मी कमाण्डर ले. जनरल जसवाल को वीजा देने से मना कर दिया था।

▸ 2010 में चीन ने घोषणा कर दी थी कि हमारी भारत के साथ पश्चिमी सेक्टर में कोई सीमा नहीं है। इसलिए कश्मीरियों को चीन आने के लिए वीजा की आवश्यकता नहीं हैं।

▸ 2011 में चीन ने पीपल लिब्रेशन आर्मी आफ चाइना के करीब 400 सैनिक पाकिस्तान ओक्युपाइड कश्मीर (POK) ने तैनात कर दिए थे।

▸ 2013 में चीन ने लददाख के दौलतबैग ओल्डी में पांच अस्थाई पोस्ट कायम की और बीस दिन बाद अपनी शर्तो पर वापस लौट गया।

उपरोक्त से स्पष्ट हो जाता है कि चीन की मंशा सोची समझी नीति के तहत भारत के सीमावर्ती क्षेत्र पर पूर्वी सेक्टर से लेकर पश्चिमी सेक्टर तक कब्जा करने की है।

हांगकांग के एक प्रतिष्ठित डेली न्यूज पेपर wen wei po ने एक लेख में छापा कि चाइना अगले 50 वर्षो में 6 युद्ध लड़ेगा। इस अखबार के मालिक People Republic ऑफिस China के हैं और इसके प्रधान संपादक चाइना क्युनिष्ट पार्टी के सदस्य हैं। लेख में बताया गया कि People Liberation Army (PLA) 2035 में दक्षिण तिब्बत को दुबारा जीतने के लिए युद्ध लड़ेगा। इस युद्ध में हिंदुस्तान द्वारा विरोध हो सकता है। चाइना का मानना है कि 20 साल बाद भारत चीन से बहुत पीछे रह जायेगा। चाइना की Strategy है कि भारत का विघटन कराया जाए इसके लिए पहले असम और सिक्किम को स्वतंत्र होने के लिए तैयार कराया जाए। उधर पाकिस्तान को Advanse weapon दिए जाए ताकि वो कश्मीर का एकीकरण कर सके। चूँकि भारत दो मोर्चो पर लड़ाई नहीं लड़ सकेगा इसलिए उसकी हार निश्चित है- ऐसा चीन का मानना है।

1 भारत को क्या करना चाहिए

2007 में माननीय रक्षा मंत्री श्री ए.के. एन्टोनी जी जब सिक्किम के नाथुला बार्डर पोस्ट पर गये तो उन्होंने कहा कि आज मेरी आंखें खुल गयीं क्योंकि उन्हें बार्डर तक आती हुई चीन की मेटल रोड और राष्ट्रीय राजमार्ग दिखाई दिए। इसका निष्कर्ष यह था कि PLA बहुत कम समय में पूरी तैयारी के साथ लड़ाई लड़ सकता है। उसे सीमा तक रसद पहुंचाने में समय नहीं लगेगा। भारतीय सेनाओं को सीमा तक पहुंचने के लिए कई-कई दिन और कई-कई मील का सफर पैदल और खच्चरों पर करना पड़ता

है। तब से अब तक 11 वर्ष गुजर गये हैं परन्तु भारतीय सीमा की स्थिति करीब-करीब जस की तस है। पिछले 3 वर्षो में थोड़ा काम हुआ है। 73 स्ट्रेटिजिक (Strategic) सड़को में से आधा ही अब बन पाई हैं जो 2012 तक पूरी होनी थी। 413 दूसरी प्रकार की सड़कें , 14 रेलवे लाइन के लिंक अब तक पूरे नहीं हुए हैं। जबकि चीन ने व्यापक रेल नेटवर्क और 58 हजार किलोमीटर लम्बी सीमावर्ती सड़कों का निर्माण कर लिया है। भारतीय सेना ने चीन के साथ लगने वाली सीमा पर रोड और रेलवे लाइन लिंक को गति प्रदान करने के लिए पर्यावरण विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र माँगा तो वहीं मामला अटक गया। हालांकि 2020 तक 26 हजार करोड़ और 2016 तक 9 हजार करोड़ रुपयें के काम सीमावर्ती क्षेत्र में प्रस्तावित हैं \ थोड़ी स्थिति बदल रही है।

लददाख के साथ चीन की लगने वाली सीमा की सुरक्षा की जिम्मेदारी 2010 तक भारतीय सेना के पास थी। इस जिम्मेदारी को ITBP (Indian Tibbetan Border Police) को क्यों सौप दिया गया ?आईटीबीपी मिनिस्ट्री आफ होम अफेयर्स के अन्तर्गत आती है। भारतीय सेना का प्रस्ताव है कि आइटीबीपी का Operational Control उसके अधीन कर दिया जाए। भारतीय सेना मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स के अंतर्गत आती है। विश्वसनीयता और संवेदनशीलता में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। यदि भारत सीमावर्ती इलाके में किसी तरह का कोई निर्माण करता है तो चीन की तरफ से सख्त आपत्ति दर्ज करा दी जाती है। आज भी चीन यह कह रहा है कि हम दौलत बैग ओल्डी में इसलिए आये है क्योकि भारत ने पूर्वी और पश्चिमी सीमा में ग्राउंड बंकरों का निर्माण किया है।

स्तम्भ , विश्वसनीय सूत्रों के मुताबिक , चीन मई 2013 में वापस अपनी शर्तो पर लौटा है। पहली तो यह की चुमार में बनी विस्तृत Observation Post को तुरंत ध्वस्त किया जाए और सीमावर्ती क्षेत्र में नये निर्माण न किये जाएं। चीन ने इस Observation Post पर लगे सर्विलांस कैमरों के तार भी काटे हैं। चीन की दूसरी शर्त यह भी है कि Daulat Beg Oldi, Fukche and Nyoma में बने Advance Landing Ground को Reactivate न किया जाए। हमारा मानना है कि कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसका

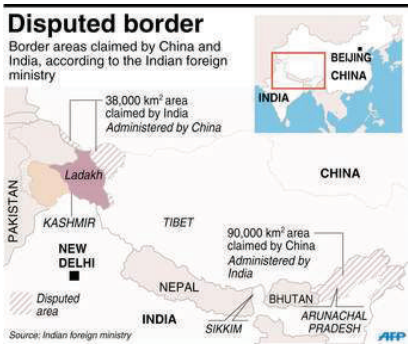

सावधान न हो। यदि हम पहले चरण में भारत चीन सीमा तक सड़कें बना लें और फिर बाद में रेल लिंक। और सड़कें बनाने में भी प्रथम चरण में हम सड़कों को केवल WBM (Water Bound Macadam) तक बनाएं जिसमे अधिक समय लगता है और जो गूगल मैपिंग में स्पष्ट दिखाई नहीं देता है। बाद में Bituminous Carpeting का कार्य पूरे क्षेत्र में एक साथ किया जाए जो अल्प समय में पूरा किया जा सकता है। जब तक चीन की तरफ से आपत्ति आएगी तब तक काम हो चुका होगा।

सन् 2008 में सिक्किम के फिंगर एरिया में भारत और चीन की बटालियन आमने-सामने आ गईं थीं। फिंगर चिप से एक महत्वपूर्ण वैली दिखाई देती है जिसका नाम है " Sora Funnel " यह क्षेत्र भारत के पास रहा है परन्तु चाइना ने वाटर शेड सिद्धांत के ऊपर इस क्षेत्र पर अपना कब्जा जताया परन्तु भारत अड़ा रहा और अन्ततोगत्वा वो पीछे चले गये। इससे यह साबित होता है कि भारत यदि मेज पर मुट्ठी मारकर बात रखे तो चीन मान सकता है क्योकि वर्तमान युग की लड़ाई बन्दूक से नही बल्कि डालर से होती है और इच्छा शक्ति से होती है। यहाँ यह भी बताते चलें कि भारत की कमजोर राजनैतिक इच्छा शक्ति के कारण कुछ समय पहले तक मालदीप में हमारे यहाँ व्यंग किये जाते थे। श्रीलंका हमारा दुश्मन बन गया था। बांग्लादेश को हम पर संदेह था , नेपाल अपने कंधे चढ़ा लेता था और पाकिस्तान हम पर हँसता था और चीन हम पर फब्ती कसता था।

भारत को ये करना चाहिए

1- सीमावर्ती क्षेत्र फौज के हवाले करे। आईटीबीपी को फौज के अधीन करे।
2- सीमावर्ती क्षेत्र में पहले सड़क और फिर रेल लिंक का निर्माण करे , सड़क में भी WBM तक करके छोड़ दे और फिर कारपेंटिंग एक साथ करे।
3- ब्रह्मपुत्र नदी में पानी के बहाव को नियमित करने वाले बांधो को चीन द्वारा निर्माण पर सख्त ऐतराज जताए।
4- पाकिस्तान द्वारा चीन के संचालन के लिए दिए गये बंदरगाह के खिलाफ प्रश्न उठाये और ईरान के साथ चाबाहार बंदरगाह का काम तेज करे।
5- आर्थिक स्तर पर चीन का मुकाबला करने क लिए स्वदेश में निर्मित उत्पादों पर टैक्स कम करे और स्वदेशी वस्तुओं का ही इस्तेमाल करे।
6- जापान एवं वियतनाम जैसे देशों को विश्वास में लेकर चीन की महत्वाकांक्षाओं के प्रतिद्रन्दी बने।
7- हिंदमहासागर में न्यूक्लियर सबमैरिन तैनात करे।

हिंदुस्तान के सिपाही की ताकत और शौर्य को चीन से कम न समझा जाए क्योंकि हमारा सिपाही न केवल सीमा की सुरक्षा करता है , न केवल यूनाइटेड नेशन के Peace Keeping Force में भाग लेता है बल्कि प्राकृतिक या कृत्रिम आपदा आने पर स्थिति को नियन्त्रण में भी करता है। लिहाजा इस बात से डरने की आवश्यकता नहीं है कि चीन की आर्थिक या सैनिक स्थिति हमसे कहीं अधिक ज्यादा मजबूत है। आखिर में बन्दूक के ट्रिगर के पीछे एक उंगली होती है और उस उंगली को हुक्म केवल स्वाभिमानी देशभक्त ही दे सकता है। अब तक हम सीमा पर Observation Post लगाकर चौकसी कर रहे थे , अब हमें पहले सड़कों और रेल लाइन का नेटवर्क तैयार करना है।

अत्यन्त आश्चर्य होता है जब सरकार में बैठे वरिष्ठ लोग यह कहते हैं कि हम चीन से लगने वाले सीमावर्ती इलाके में सड़कों और रेलवे लिंक का जाल इसलिए नहीं बिछा रहे हैं कि कहीं कल को इसका इस्तेमाल चीन न कर ले। इससे अधिक डरपोक सोच नहीं हो सकती। शौचालय में बैठकर सोचा तो जा सकता है परन्तु इतिहास नहीं रचा जा सकता। जिस लड़ाई को लड़ने से पहले दिल में डर व्याप्त हो जाए उसमे हार निश्चित है। हमे डरने की आवश्यकता नही क्योंकि नाथूलापास की घटना से चीन के सिपाही के दिल में भारत के सिपाही का खौफ बैठ चुका है।

'धमार्धारित आतंकवाद-एक सच्चाई'

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि अनेक अवसरों पर आतंकवादियों के समर्थन में बुद्धिजीवी व कट्टर मुसलमानों के अतिरिक्त ढोंगी धर्मनिरपेक्षता वादी और जयचंदी हिन्दुओं की सहभागिता होने से आतंक की जड़ पर प्रहार नहीं हो पाता । इन विपरीत परिस्थितियों के कारण हमारा समाज व राष्ट्र जिहादियों के अनेक षड्यंत्रों से घिरता जा रहा है। जिससे अनेक मोर्चों पर हमारे उदासीन रहने के कारण आतंकियों का दुस्साहस भी बढ़ रहा है। आतंकवाद को मिटाने वालों व आतंकवादियों की इस्लामी पहचान को ढाल बना कर बचाने वालों में जो सामाजिक विभाजन हो गया है वह एक खतरनाक भविष्य का संकेत है।

प्रायः हमें मंदिरो में जो धर्म की शिक्षा दी जाती है, उससे अच्छे-बुरे व पाप-पुण्य का ज्ञान अवश्य मिलता है परंतु इससे शत्रु की पहचान का भाव नहीं समझा जा सकता। जबकि मदरसों - मस्जिदों आदि

विनोद कुमार सर्वोदय
(राष्ट्रवादी लेखक व चिंतक)

में धर्म का अर्थ कट्टरता से जोड़ा जाता है, उन्हें कैसे सुरक्षित रहना है, बताया जाता है। काफिर व अविश्वासियों (गैर मुस्लिमों) से कैसे जिहाद करना है, सिखाया जाता है। अनेक प्रकार से उन्हें दारुल- इस्लाम अर्थात विश्व का इस्लामीकरण करने और उस पर मरने के लिए फिदायीन (suicide bomb) तक बनाया जाता है।

सन् 2008 में संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि तालिबान व अलकायदा आदि जिहादी संगठन पाक व अफगानिस्तान की सीमाओं पर अनेक छोटे-छोटे बच्चों को धन देकर व जन्नत का वास्ता देकर 'फिदायीन' बनाते हैं। तालिबान ने 'फिदायीन-ए-इस्लाम' नाम से वजीरिस्तान में तीन ऐसे प्रशिक्षण शिविर तैयार किये हुए हैं जिसमें हजारों की संख्या में कम आयु (10 से 13 वर्ष) के मासूम मुस्लिम बच्चे प्रशिक्षण पा रहे हैं। अफगानिस्तान की तत्कालीन सरकार के अनुसार इन बच्चों को चौदह हजार से साठ हजार डॉलर में खरीदा जाता है और इनके माँ-बाप को समझाया जाता है कि धन के

अतिरिक्त आपका बेटा इस्लाम के लिये शहीद होकर सीधे जन्नत पहुँचेगा। पाकिस्तान के कुनार व नुरिस्तान आदि क्षेत्रों में जो बच्चे आत्मघाती बनने को तैयार हो जाते है ,उन्हें घोडे पर बैठा कर दूल्हे की तरह सजा कर पूरे गाँव में घुमाया जाता है और गाँव वाले कुछ तालिबानियों के भय से व कुछ समर्थक आदि बच्चों के माँ-बाप को मुबारकबाद देने भी आते हैं। समाचारों से स्पष्ट है कि पाकिस्तान की सरकार भी इसको स्वीकार करती है। इसी प्रकार इस्लामिक स्टेट भी ऐसे क्षेत्रों में मुस्लिम बच्चों को इस्लाम के नाम पर 'भविष्य के जिहादी' तैयार करने में जुट गया है।

हमारे देश की सीमाओं पर अवैध मदरसे व मस्जिदें अबाध गति से बढ़ते जा रहे हैं। इनमें घुसपैठ करके दुर्दान्त आतंकियों को शरण मिल जाती है।

उनके द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों के मुस्लिम बच्चे जिहाद की शिक्षा व अन्य प्रशिक्षण पाते हैं। अक्टूबर 2014 के एक समाचार पत्र में छपे एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के लेख के अनुसार केवल बांग्लादेश से लगी हमारी सीमाओं पर ही लगभग 1680 मदरसे व 2800 मस्जिदें हैं और इनमें अरबी इस्लाम की शिक्षा दी जाती है,जो उन्हें भारत की मुख्य धारा से जुड़ने ही नहीं देती। कट्टरपंथी धार्मिक शिक्षाओं से छोटे-छोटे बच्चों के मन-मस्तिष्क पर इतना कुप्रभाव पड़ता है कि वे अपने परिजनों को भी काफिर समझने लगते हैं। इस प्रकार जिहाद के लिए आतंकियों की पौध हमारे देश में भी तैयार की जा रही है। यही नहीं देश के अनेक नगरों व गाँवों में अवैध मस्जिद व मदरसे भी जिहादी षड्यंत्रों का अप्रत्यक्ष सहयोग करते हैं।

लगभग 2 वर्ष पूर्व (19 दिसम्बर 2016) को बर्लिन में हुई आतंकी घटना पर अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रम्प ने ट्वीट किया था कि 'यह विशुद्ध रूप से धार्मिक संकट है, इसकी असलियत अब सामने है'। डोनॉल्ड ट्रम्प ने हमलावर का वीडियो देख कर यह भी ट्वीट किया कि जिस आतंकी ने जर्मनी (बर्लिन) में निर्दोषों का कत्ल किया था, उसने ऐसा करने से कुछ समय पहले यह भी कहा था कि 'ईश्वर की इच्छा से तुम्हारा कत्ल करेंगे'। ट्रम्प ने यह भी कहा कि 'इस तरह की नफरत से आखिर कब तक अमेरिका व अन्य सभी देश लड़ते रहेंगे'? वह आतंकी ट्यूनीशिया मूल का अनीस अमीरी था जो इस्लामिक स्टेट के लिए काम करता है ।

पूर्व के अनेक समाचारों से ज्ञात होता है व प्रायः यह पाया गया है कि आतंकवादी घटनाओं के बाद जिहादी संगठन उसकी जिम्मेदारी लेते हैं और ठोंक कर कहते हैं कि 'वे कुफ्र के विरुद्ध जिहाद कर रहे हैं। उनकी प्रेरणा इस्लाम है और इस्लाम की सेवा में वे अपने प्राणों की बाजी लगाकर काफिरों के प्राण लेने के लिए तैयार हैं।'

ध्यान रहे कि आतंकवादी किसी सनक, मूर्खता या धनलोभ के कारण ही अपनी जान नहीं देते। वे अल्लाह की राह पर अल्लाह के लिये अपनी जान देते हैं। 'कोई धर्म आतंकवादी नहीं होता और आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता 'यह जुमला अधिकतर आतंकवादी घटनाओं के बाद सेक्युलर नेताओं , मानवाधिकारवादियों व पत्रकारों द्वारा बोला जाता है लेकिन वे किसी आतंकवादी का धर्म नहीं बताते, क्यों ? यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आतंकवादी जिस धर्म के होते हैं, उसी में अपने अस्तित्व को पाते हैं। यह भी निंदनीय है कि जब कोई अपने धार्मिक ग्रंथों व दर्शन के कारण गैर मुस्लिमों व अविश्वासियों को काफिर मानेगा तो उस कट्टरपंथी समुदाय के निशाने से वह कब तक बच पायेगा ?

वह कौन सी मानसिकता है जो घृणा व वैमनस्यता फैला कर निर्दोष लोगों का सामूहिक कत्लेआम करने को उकसाती है? वह कौन सी संस्कृति है जो मासूम बच्चों व महिलाओं पर अमानवीय अत्याचारों का कहर बरपाने को भी ठीक मानती है? वह कौन सा दर्शन है जिससे ये 'अमानवीय शक्तियां' सम्पूर्ण संसार को अपनी मुठ्ठी में करने को उत्सुक हो रही हैं? वे कौन सी शक्तियां हैं जिनको बम ब्लास्ट करके सकून मिलता है और जो चाहते हैं कि इस्लामिक कानून (शरिया) के अनुसार चले दुनिया। आपको ज्ञात होगा कि 25-26 जुलाई 2008 को अहमदाबाद व बंगलौर में सीरियल बम ब्लास्ट हुए थे,उसमें आजमगढ़ का एक मौलवी अबुल बशर, जो 2001 से आतंकवादी संगठन सिमी में सक्रिय रहा, ने पकड़े जाने के बाद पुलिस को दिए बयान में यह खुलकर कहा था कि 'यही है तमन्ना कि इस्लामी कानून से चले दुनिया'। यह आतंकी मौलवी मुस्लिम लड़कों व सिमी के सदस्यों को भी कुरान की आयतें, हदीस, इस्लास्मिक शासन व अरबी पढ़ाता रहा था। इसकी तहरीर भी अनेक स्थानों पर मासूम मुस्लिमों को जिहाद के लिये भड़काती थी।

अतः यह भ्रमित व निराधार है कि 'आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता'। उदारता, सहिष्णुता , संवेदनशीलता व मानवता का अभाव जिसमें होगा और जो विश्व के इस्लामीकरण के लिए जिहाद की शिक्षाओं से बाहर आकर कोई मध्यम मार्ग नहीं बनाएगा तो फिर मानवता के उच्च मापदंड कैसे सुरक्षित रह पायेंगे ?

अधिकांश हिन्दू सहित वैश्विक समाज मानवता के विरुद्ध हो रहे ऐसे भयानक षड्यंत्रों को समझ ही नहीं पाते और इसी भुलावे में उसको अपने मित्र व शत्रु का भी आभास नहीं होता। वह अपने परिवार व समाज में तो छोटी-छोटी बातो में भाँहें तान लेते हैं पर अंदर ही अंदर होने वाली बड़ी हानि समझ नहीं पाते। वास्तव में ऐसी धार्मिक कट्टरता के विरोध से ही साम्प्रदायिकता को नष्ट किया जा सकता है। जिसके नष्ट होने से सामाजिक सौहार्द बनेगा और मजहबी आतंकवाद पर विजय मिल सकेगी । प्रचार के इस युग में मानवता की रक्षा के लिए समाचार पत्रों व टी वी चैनलों को भी ऐसे भयानक षड्यंत्रों का खुलासा करके समाज की सुरक्षा के लिए उसको सतर्क व सावधान करते रहना चाहिये ।आज सभी राष्ट्रवादियों व मानवतावादियों को धर्म व देश के संकट को समझ कर उसकी रक्षा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। ऐसे में अपने अस्तित्व व स्वाभिमान के लिए संघर्ष से बचने का मार्ग आत्मघाती होगा ।

आज विश्व के अनेक देशों की यही पीड़ा है और अधिकांश मानवतावादी इस पीड़ा को समझ चुके हैं। फिर भी इस अन्यायकारी व अत्याचारी जिहादी जुनून से मानवता की रक्षा के उपाय अभी अपर्याप्त हैं। इसलिये वैश्विक शान्ति व मानवता की रक्षार्थ प्रभावकारी उपाय करने ही होंगे अन्यथा इन मानवीय आपदाओं से पृथ्वी के विनाश को नियंत्रित करना संभव न होगा । वैसे अब कुछ आशा बँधी है कि जैसे-जैसे ट्रम्प, पुतिन व मोदी जैसे राष्ट्रवादी व मानवतावादी राष्ट्रनायक उभरेंगे वैसे-वैसे धार्मिक आतंकवाद 'जिहाद' पर अंकुश लगने की सम्भावनायें बढ़ेंगी। वैश्विक शान्ति और मानवता की रक्षा के लिए किसी भी 'धर्म' की निरंकुशता व हिंसात्मक गतिविधियों को नियंत्रित करना ही आज सबसे बड़ा धर्म है।

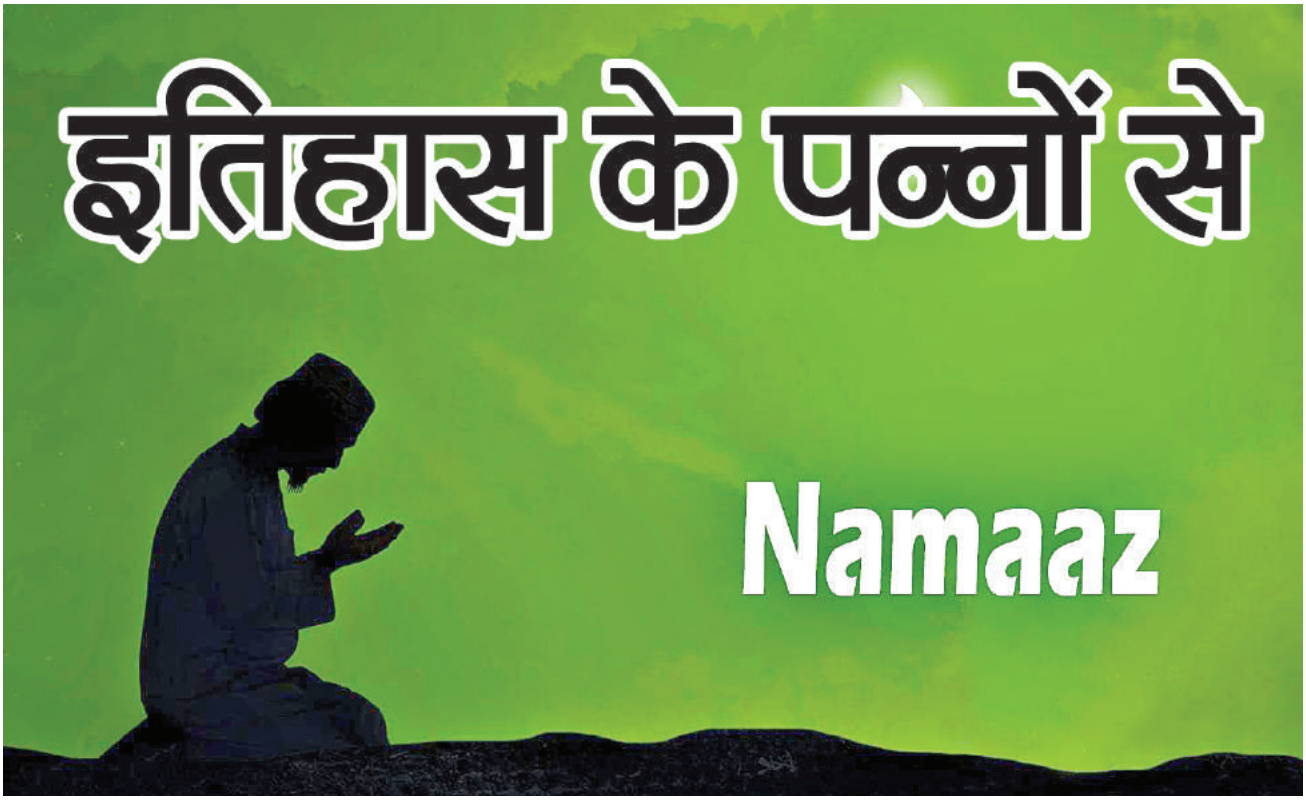

सूर्या बुलेटिन के माध्यम से हम अपने सभी बुद्धिजीवी पाठकों को इस अध्याय से मुस्लिम आक्रांताओं के द्वारा हुए रक्त रंजित इतिहास का बोध कराने की कोशिश करते हैं। पाठकों की मांग पर इस बार फिर आचार्य चतुरसेन की अति प्रसिद्ध कृति 'सोमनाथ की यात्रा' के कुछ अंश आपके सामने रखता हूँ।

मगरिब की नमाज

रत्न मंडप में आकर अमीर ने मगरिब की नमाज अदा करने को घुटने टेक दिये। सहस्त्रों नर-मुंड जो जहां थे झुक गए। हजरत अलबरूनी ने अमीर के नाम का खुतबा पढ़ा। उन्होंने कहा, ''गाज़ी अमीर महमूद शहंशाहे-गजनी, जिन पर परमात्मा की असीम कृपा है और रहेगी, दुनिया में खुदा के प्रतिनिधि हैं।''

इसके बाद उन्होंने महालय से कंगूरे पर चढ़कर बांग लगाई ,'' ला इलाइलिल्लाह-मुहम्मद रसूल अल्लाह।'' सबने ''आमीन! आमीन! कहा।'' अमीर ने जल्द-गम्भीर स्वर में कहा,'' मैं अमीर महमूद,खुदा का बन्दा,वही कहूंगा जो मुझे कहना चाहिए । और वही करूंगा जो करना चाहिए। खुदा के हुक्म से कुफ्र तोड़ना सबसे बड़ा सवाब है। और मैं खुदा का बन्दा महमूद,धर्म की इस तलवार को कुफ्र तोड़ने के काम में लाता हूं और आप सब इस सवाब के हिस्सेदार हैं।''

फिर सबने आमीन कहा। ज्योतिर्लिंग के रुद्राभिषेक के लिए जो गंगोत्री का पवित्र गंगाजल चांदी के घड़ों में गर्भगृह में भरा रखा था,उसी से उसने वजू किया और मगरिब की नमाज अदा की-उसी-रत्नमंडप में, जहां कभी देव-सान्निध्य में शत-सहस्त्र नेत्रों के सम्मुख रूपसी देवदासियों नृत्य लास करती थीं। इसके बाद उसने रत्न मंडप की पौर में कुर्बानी की। फतह मुहम्मद ने महालय के शिखर पर चढ़ गगनचुम्बी भगवाध्वज भंग कर महमूद का हरा झंडा फहरा दिया।

इस प्रकार अपने लाशरीक खुदा को प्रसन्न कर,उसके प्रति अपनी कृतज्ञता जता, वह अपने अश्व पर सवार हुआ। उसने महालय और देव पट्टन में अपनी आन फेरी,युद्ध बन्द करने का आदेश दिया। आदेश न मानने वालों को कैद करने या कत्ल करने का हुक्म दिया। सब प्रमुख नाकों,आगारों,महालयों पर पहरे-चौकी का प्रबंध कर दिया। और सिंहद्वार के फाटक उखाड़ कर उन्हें साथ ले, सब ओर से निश्चिन्त होकर तुरही,नफीरी,शहनाई और नक्कारे बजाता हुआ,जिहाद का हरा विजयी झंडा फहराता अपनी छावनी में लौटा। जब उसने घोड़े की पीठ छोड़ी, एक पहर रात बीत रही थी।

हजारों घायल,बे-घायल राजपूत बन्दी बना लिये गये। लाशों को उठाने का उस रात कोई बन्दोबस्त नहीं हुआ। जिस कक्ष में गंगा ने अग्निरथ-अभियान किया था, उसके आसपास के सब कक्ष जलकर राख हो गये थे। रात-भर वहां आग धधकती रही। किसी ने भी उसे बुझाने की चेष्टा नहीं की।

वृद्ध वीरवर कमा लाखाणी इस समय सैकड़ों घावों से लदे-फदे अपने प्रवहण में एक ओर खड़े

महालय के अंचल की उठती हुई लपटों के प्रकाश में भग्न भगवा ध्वज को आंसू भरी आंखों से देख रहे थे। प्रवहण में अचेत महाराज भीमदेव को चेत में लाने के लिए दामोदर महता और बालुकाराय अथक प्रयत्न कर रहे थे। संसार अन्धकार में डूबता जा रहा था और इस अन्धकार में एक गहरा काला धब्बा सा, वह प्रवहण लहरों पर हिलता-डोलता सा समुद्र-वक्ष पर बढ़ता हुआ, कच्छ की खाड़ी में सुरक्षित गंदावा दुर्ग की ओर बढ़ रहा था।

नष्ट प्रभात

रात ही में देवपट्टन में भगदड़ मच गई। हिन्दू योद्धा और पुजारी जल-थल की राह भाग चले थे। प्रभात होते ही तुर्कों के ही दल-बादल नगर महालय लूटने को अल्लाहो-अकबर का नाद करते टूट पड़े। शत्रु के भय से हिन्दू मछुए होड़ी आदि जो जिसके हाथ लगा,उसी पर बैठकर समुद्र में तैरने लगे। पर इस समय समुद्र भी अभागे हिन्दुओं का शत्रु हो गया था। उसमें बड़ी-बड़ी पहाड़ की चट्टान के समान लहरें उठने लगीं। अनेक अभागे उन लहरों की चपेट में आकर समुद्र-गर्भ में विलीनहो गए। अनेक लोग शत्रुओं के हाथ बन्दी हुए या कट मरे।

देखते ही देखते देवनगर धांय-धांय कर जलने लगा।महमूदअपने काले घोड़े पर सवार हो विजयोत्सव से भरा हुआ दल-बल सहित महालय की पौर में धंसा। इस विजय का महमूद को बड़ा गर्व था। हर्ष से उसका हृदय उछल रहा था। महमूद और उसके मन्त्रीगण आश्चर्यचकित होकर महालय की भव्य शोभा निहारने लगे। उस अगम्य देवस्थली में उनके भ्रष्ट पैरों के पड़ने से देवस्थान मलिन होने लगा। आंखों से कभी न देखी और कानों से कभी न सुनी हुई शोभा और ऐश्वर्य की राशि देख महमूद और उनके मंत्रीगण विमूढ़ हो गये। उसे अपनी गजनी के राजमहल के ऐश्वर्य का बड़ा गर्व था। परन्तु सोमनाथ महालय के ऐश्वर्य को देखकर उसका गर्व खंडित हो गया। वह आगे बढ़कर गर्भगृह में घुसा। ज्योर्तिलिंग के तीन टुकड़े बिखरे हुए पड़े थे। गंग सर्वज्ञ का छिन्न शरीर भी उसी भांति देव-सान्निध्य में पड़ा था। उनका रक्त बहकर सूख गया था। उसने मंदिर के पुजारियों और अधिकारियों के सम्मुख आने की आज्ञा दी। बहुत पुजारी भाग गए थे। जो शेष थे,वे कृष्णस्वामी को आगे करके डरते-कांपते अमीर के सम्मुख करबद्ध होकर खड़े हुए। कृष्णस्वामी ने हाथ जोड़कर कहा,'' पृथ्वीनाथ, जितना धन आपको चाहिये, दंड देने को तैयार हैं, परन्तु महालय को भंग मत कीजिये। यह हमारा हिन्दुओं का अति प्राचीन देवस्थान है। हम दीन जन आपसे अब यही भिक्षा मांगते हैं।''

महमूद ने कहा, '' जर-जवाहर के लालच से इस्लाम के बन्दों का खून बहाने मैं यहां नहीं आया हूं। मैं मूर्ति पूजकों के धर्म का तिरस्कर्ता, मूर्तिभंजक महमूद हूं,बुतपरस्ती के कुफ्र को दूर करना मेरा धर्म है। मैं मूर्ति बेचता नहीं, मूर्तियों को तोड़कर अल्लाताला खुदा के पैगम्बर मुहम्मद की आन कायम करता हूं।'' इतना कहकर उसने अपने हाथ की रत्नजटित सुनहरी छड़ी से तीन बार उस भग्न ज्योर्तिलिंग पर आघात किया और सब मूर्तियों तथा महालय को तोड़ने -फोड़ने का हुक्म दिया। देखते ही देखते उसके हजारों बर्बर सैनिक महालय की मूर्तियों,महराबो और तोरणों को तोड़ने फोड़ने और ढाने लगे।

अब महमूद ने कृष्णस्वामी से धन-रत्न कोष की चाबियां तलब कीं। अछता-पछताकर कृष्णस्वामी ने देवकोष महमूद के समर्पण कर दिया। उस देवकोष की सम्पदा को देखकर महमूद की आंखें फैल गईं। भू-गर्भ स्थित चहबच्चों में स्वर्ण,रत्न,हीरा,मोती,माणिक आदि भरे थे। उस दौलत का अन्त न था। उस अटूट सम्पदा को देखकर महमूद हर्ष से अपनी दाढ़ी नोचने लगा। उसने तुरन्त ही सब रत्नकोष उठाकर मंजूषाओं में भर-भरकर शिविर को रवाना कर दिया।अस्सी मन वजनी ठोस सोने की जंजीर, जिसमें महाघंट लटकता था, तोड़ डाली। किवाड़ों,चौखटों और छत से चांदी के पत्तर छुड़ा लिये। कंगूरों के स्वर्णपत्र उखाड़ लिये। मणिमय स्तम्भों पर जड़े हुए रत्न उखाड़ने में उसके हजारों बर्बर जुट गए। सोने-चांदी के सब पात्र ढेर कर उसने ऊंटों पर लाद लिए।

फिर भी उसे सन्तोष न हुआ। उसके गोइन्दों ने गुप्त कोष की तलाश में समूचे गर्भगृह को खोद डाला। ज्योर्तिलिंग के मूल स्थान में बहुमूल्य मणि-माणिक्य का एक महा-भंडार उसे और मिल गया। इससे उत्साहित होकर उसने समूचे महालय के गोख, फर्श,आलिन्दों को खोद-खोदकर गुप्त कोष ढूंढना प्रारम्भ किया। कृष्णस्वामी से उसने बहुत प्रश्न किया। अंत में उसे बांधने की आज्ञा दी। सैनिक कृष्णस्वामी को बांधने लगे। कृष्णस्वामी गिड़गिड़ाने लगे और प्राणों की भिक्षा मांगने लगे। चारों ओर तुमुल कोलाहल मचा रहा था। उस कोलाहल के बीच जैसे हृदय को विदीर्ण करती हुई एक तीव्र हुंकृति ने सभी को चौंका दिया। उस पागल क्षण में चीखती-चिल्लाती, न जाने कहां से रमादेवी,एक मोटी लकड़ी लिए भीड़ को चीरती हुई धंस गई। उसके वस्त्र फटे,नेत्र फैले हुए, बाल बिखरे हुए और मुंह विकराल था। उसने सैनिकों को पीछे धकेलकर कृष्णस्वामी को अपने आंचल में छिपाते हुए ललकार कर कहा, '' कहां है वह मुंडी काटा गजनी अमीर,आए मेरे सामने, देखूं कैसे वह मेरे आदमी को बंदी बनाता है।''

सैनिकों ने झपटकर रमाबाई को पकड़ लिया। धक्कामुक्की में उसके वस्त्र तार-तार हो गए। वह गिर गईं। परन्तु सिंहनी की समान गरज कर उसने उछाल भरकर सैनिकों को गिरा दिया। सैनिकों ने तलवारें खींचीं। सैकड़ों तलवारें रमाबाई पर छा गईं। फतह मुहम्मद अब तक चुपचाप अमीर की बगल में खड़ा हो था। अब वह तलवार सूंत एकदम रमाबाई के आगे छाती तानकर खड़ा हो गया। उसने ललकार कर कहा,'' खबरदार, जो कोई इस औरत को छुएगा उसके धड़ पर सिर नहीं रहेगा।''

नामदार अमीर महमूद की उपस्थिति में यह घटना असाध्य थी। महमूद अविचलित भाव से यह सब देख रहा था। अब उसने आगे बढ़कर कहा कहा कि उस औरत को छोड़ दो।

सिपाहियों ने रमाबाई को छोड़ दिया। छूटते ही उसने कृष्णस्वामी के बन्धन खोल दिए और फिर वह अपने हाथ की लकड़ी मजबूती से पकड़कर अमीर की ओर फिरी। उसने अपनी गोल-गोल आंखें घुमाते हुए कहा,'' तू ही वह अमीर है।''

'' हां,औरत मैं ही अमीर महमूद हूं।''

'' तूने सर्वज्ञ को मारा, देवलिंग भंग किया।''

'' हां, मैं विजयी मूर्तिभंजक महमूद हूं। लेकिन औरत, तू क्या चाहती है?''

'' मैं तुझसे पूछती हूं कि क्या तुझसे किसे ने यह नहीं कहा कि तू मृत्यू का दूत, जीवन का शत्रु और मनुष्या का कलंक रूप है?''

'' अय औरत, मैं तेरी सब बात सुनूंगा, कहती जा।''

'' तूने विजय प्राप्त की, पर किसी की भलाई नहीं की।''

'' मैं खुदा का बन्दा, खुदा के हुक्म से कुफ्र तोड़ता हूं।''

'' तू भगवान के पुत्रों को मारता है, जिन्होंने तेरा कुछ नहीं बिगाड़ा। उन्हें लूटता है उनके घर-बार जलाता है। तू कंकड़-पत्थरों का लालची है, औरआदमी का दुश्मन है। तेरा खुदा यदि तेरी इन काली करतूतों से खुश है तो वह खुदा नहीं शैतान है।''

महमूद की भवों में बल पड़ गये। किन्तु वह चुपचाप अपने होठों को दबाता हुआ इस दबंग औरत को देखता रहा,जिसके साहस और शक्ति का अन्त न था। वह इस औरत की बात का मर्म समझ गया। उसने फतह मुहम्मद की ओर देखा- वह उसी भांति तलवार नंगी किये रमादेवी के आगे छाती तानकर खड़ा था। महमूद ने कहा '' अय बहादुर , क्या इस औरत को जानता है?''

'' जानता हूं जहांपनाह।''

'' कौन है यह?''

'' मेरी मां।''

महमूद बड़ी देर तक उस औरत की ओर ताकता रहा,एक हल्की सी मुस्कान और करुणा की झलक उसके नेत्रों में आई। उसने जल्द गंभीर स्वर में कहा,'' औरत तलवार के विजेता महमूद के समने तूने जो सच कहा, वह बादशाहों के लिए इज्जत की चीज है। दुनिया में दो चीजों लोगों को जिन्दगी बख्शती हैं-एक सूरज की किरणें और दूसरा मां का दूध। तूने जिन्दगी से प्यार करने की ओर मेरा ध्यान दिलाया है। ठीक कहा तूने औरत। और तू मां है, मां के बिना महमूद पैदा न हो सकता था। फिरदौसी, अलबरूनी,अरस्तु, शेख सादी, ये सब मां के बच्चे हैं। अय मां आगे बढ़ और इस बच्चे के सिर पर हाथ रखकर उसे दुआ बख्श, जिसने तीस वर्ष तक धरती को अपने पैरों से कुचल कर उसे लोहू से लाल किया है।''

दो कदम आगे बढ़कर महमूद सिर झुकाकर एक बालक की भांति रमाबाई के आगे बढ़कर आ खड़ा हुआ।

रमाबाई का रुद्र-भाव एकबारगी जाता रहा और उसने हाथ की लकड़ी फेंक कर आगे बढ़कर महमूद के मस्तक पर हाथ रखा और आंखों में आंसू भरकर कहा,''कैसे तू जिन्दा आदमी मार सकता है, उनका घर-बार लूट सकता है। अरे महमूद उनकी भी तेरी सी जान है, उन्हें कितना दुख होता होगा, बोल तो? '' रमाबाई का गला भर आया। उसकी आंखों से झर-झर आंसू बह चले।

महमूद ने सिर ऊंचा किया। उसने कहा,''बहुत लोग मुझसे अपने राज्य और दौलत के लिए लड़े लेकिन इंसान के लिए आज तक मुझसे कोई नहीं लड़ा। मैं खुदा का बन्दा महमूद वही कहूंगा जो मुझे कहना चाहिये। यह औरत, जो मेरे सामने खड़ी है,उसने मुझे एक नई बात बताई है,जिसे मैं नहीं जानता था। इसके हाथ में तलवार नहीं है, तलवार का डर भी इसे नहीं है। यह रोती और गिड़गिड़ाती भी नहीं। बादशाहों के बादशाह महमूद को फटकारती है,इंसाफ के प्यार ने इसे इस कदर मजबूत बनाया है। इसके बाद आंसुओं का मोल तमाम दुनिया के हीरे मोतियों से भी नहीं चुकाया जा सकता। इसने महमूद को मां की तरह नसीहत दी है औरअब मैं, महमूद खुदा का बन्दा, वही कहूंगा जो मुझे कहना चाहिये। दो सौ घुड़सवार जिनकी सरदारी फतह मुहम्मद करेगा,इज्जत के साथ इस बादशाहों के बादशाह की मां को इसके घर तक पहुंचा दें और जितनी दौलत चाहे, ले जाए और जो चाहे वही उसे हुक्म दे।''

लेकिन रमा देवी ने कहा,'' महमूद, मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं केवल यही चाहती हूं कि तू अभी,इस देवपट्टन से चला जा और अब अधिक विनाश न कर। और जान रख कि तू जैसे खुदा का बन्दा है वैसे ही और सब लोग भी हैं। वे सब तेरे भाई हैं महमूद उन्हें प्यार कर, तेरी नामवर तलवार उनकी रक्षा के लिए है, उनकी गर्दन काटने के लिए नहीं।''

महमूद ने तलवार ऊंची करके कहा ''महमूद खुदा का बन्दा, इस औरत का हुक्म मानकर इसी क्षण इस देवपट्टन को छोड़कर कूच करने का हुक्म देता है ।''

महमूद ने तलवार को म्यान में किया और अपना घोड़ा मंगाया। उसके सब सैनिक चुपचाप अपनी तलवारें नीची किये उसके पीछे-पीछे चले। केवल फतह मुहम्मद अपने दो सौ सवारो के साथ रह गया।

'' अब तू, देवा, तू भी जा,'' रमा देवी ने उसे देखकर कहा।

'' मां, क्या तुम मुझसे नाराज हो?''

'' जो कुछ तूने किया, वह होनहार था। पर अब तू जा और इस अपने संगी साथियों को भी ले जा। तेरी आंखों के आगे सर्वज्ञ का हनन हुआ। यह महापाप तेरे ही ऊपर है। पर मैं तुझे दोष नहीं दूंगी। सर्वनाश का क्षण ही आ गया था।''

कुछ देर फतह मुहम्मद सिर नीचा किए खड़ा रहा। वह शोभना के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता था,पर कुछ सोचकर चुप रह गया। फिर उसने कहा,'' मां, और कुछ कहना है?''

'' ना, तू जा अब।''

फतह मुहम्मद चुपचाप चला गया। उसने आंख उठाकर एक बार भी कृष्णस्वामी की ओर नहीं देखा। उसके पीछे दो सौ सवार भी गए। कृष्णस्वामी नीचा सिर किये खड़े थे। अब कृष्णस्वामी और रमाबाई को छोड़कर और कोई वहां पर उपस्थित न था। रमाबाई ने भरे हुए बादलों के स्वर में कहा,'' अब इस तरह खड़े रहने से क्या होगा,चलकर पहले सर्व का ऊर्ध्व दैहिक करो,पीछे और कुछ।''

और वे दोनो प्राणी उस नष्ट प्रभात में अपनी ही पग ध्वनि से चौकते हुए खंडहरों,मलवों और भग्न मूर्तियों के सूने ढेरों से उलझते,भय-आतंक और भूख-प्यास से जर्जर उस भग्न गृह में घुस रहे थे। जहां अब केवल सर्वज्ञ का छिन्न-भिन्न शरीर भूमि पर पड़ा था। ज्योर्तिलिंग के भग्न खंड, धन-रत्न भंडार के साथ ही अमीर के आदमी ले गए।

गंदावा दुर्ग

महमूद को देवपट्टन की यह विजय बहुत महंगी पड़ी। यद्यपि यहां से उसे अथाह संपदा मिली,परन्तु उसका सैनिक बल छिन्न-भिन्न हो गया। अब उसे यह भय होने लगा कि वह अतोल सम्पदा को लेकर सही-सलामत गजनी पहुंच सकेगा भी या नहीं। उसकी सेना के प्रायः सारे ही हाथी इस युद्ध में नष्ट हो चुके थे। बहुत से मर चुके थे, जो बचे थे वे अंग भंग, कमजोर और घायल थे। उनमें से अच्छे ऊंट और हाथी चुनकर उसने उन पर सोना,रत्न और लूटा हुआ धर-माल लदा। पचास हाथी और दो सौ ऊंटों पर यह सब सम्पदा लादी गई। सबके बीच एक गजराज पर सिंह-द्वार के चन्दन के फाटक और ज्योर्तिलिंग के तीन टुकड़े थे। चुने हुए दस हजार उत्कृष्ट सवार इस खजाने की रक्षा के लिए देकर और सेनापति मसऊद को उसका नायक बनाकर अनहिल्ल पट्टन की ओर सीधा रवाना कर दिया। बन्दी,घायल,रोगी तथा

अनावश्यक सामग्री भी उसने उनके साथ ही भेज दी।

महासेनानी महमूद को पता लग चुका था कि उसका परम शत्रु भीमदेव घायल अवस्था में गंदावा दुर्ग में जा छिपा है तथा उसके साथ बहुत से राजपूत भी हैं। निश्चय ही वह पीछे से आक्रमण कर सकता है। भला महमूद जैसा अनुभवी योद्धा कैसे शत्रु को बगल में छोड़कर आगे बढ़ सकता था। वह भीमदेव को सांस लेने का अवसर भी नहीं देना चाहता था। उसका दल क्षीण हो गया था और सहायता मिलने की उसे आशा न थी। अतः वह नहीं चाहता था कि शत्रु संगठित हो या उसे शक्ति संचय का समय मिले। अभी गुजरात में बहुत बल था और लौटना निरापद न था, इसलिए उसने अपने प्रबलतम किन्तु घायल, विपन्न शत्रु भीमदेव की ओर अपनी दृष्टि की और निर्णय किया कि जैसे भी हो, उसे आमूल नष्ट करना ही श्रेयस्कर है। इन सब बातों पर विचार करके उसने चुने हुए तीन सहस्त्र धनुर्धर देकर फतह मुहम्मद को आगे गंदावा दुर्ग भेज दिया। फतह मुहम्मद यहीं का निवासी तथा सब घर-घाट से परिचित था। उसे जहां जितनी नौका मिलीं, उन्हें लेकर तथा बांसों के बेड़े बनाकर कच्छ की खाड़ी में घुसा और शीघ्र से शीघ्र बढ़कर गंदावा दुर्ग के उपकूल पर जा धमका।

अमीर शेष सत्रह हजार सुगठित वीरों को लेकर स्थल मार्ग से दुर्ग की ओर बढ़ा। यह किला कच्छ के किनारे पर महासागर के खड्ड में था। किला बहुत मजबूत और सुरक्षित था। एकाएक उस पर किसी शत्रु का आक्रमण संभव नहीं था। दुर्ग का तीन भाग सागर गर्भ में था। बहुत बार गुर्जर पतियों ने विपत्ति-काल में इस दुर्ग का आश्रय लेकर धन,मान और प्राण बचाए थे।

फतह मुहम्मद की सेना ने सूर्य छिपते-छिपते दुर्ग के जल मार्ग को घेर लिया। इस समय दुर्ग कमा लाखाणी की कमान में था। दामोदर महता और बालुकाराय महाराज भीमदेव की रोग शय्या पर बैठे उन्हें होश में लाने की तथा उनके घाव पूरे करने की चेष्टा कर रहे थे। महाराज भीमदेव यद्यपि अब मूर्च्छित न थे, परन्तु उनकी चेतना शक्ति जाती रही थी। वे बारम्बार उठ-उठकर प्रलाप करते हुए भाग रहे थे और किसी को पहचानते भी न थे। उनके शरीर में से बहुत सा रक्त निकल गया था। अभी उनके जीवन की आशंका बनी थी। राजवैद्य उपचार कर रहे थे, तथा भरुकच्छ और खम्भात से चिकित्सक बुलाए गए थे,जिनकी प्रतीक्षा हो रही थी। इसी समय फतह मुहम्मद के नेतृत्व में अमीर की सेना ने दुर्ग पर आक्रमया कर दिया।

महाराज भीमदेव यद्यपित अब मूर्च्छित न थे, परनतु उनकी चेतना शक्ति जाती रही थी। वे बारम्बार उठ-उठकर प्रलात करते हुए भाग रहे थे और किसी को पहचानते भी न थे। उनके शरीर में से बहुत सा रक्त निकल गया था। अभी उनके जीवन की आशंका बनी थी। राजवैद्य उपचार कर रहे थे, तथा भरुकच्छ और खम्भात से चिकित्सक बुलाए गए थे,जिनकी प्रतीक्षा हो रही थी। इसी समय फतह मुहम्मद के नेतृत्व में अमीर की सेना ने दुर्ग पर आक्रमया कर दिया।

संकट काल उपस्थित देखकर दुर्ग के अधिवासियों ने एक छोटी सी युद्ध मन्त्रणा की। उस मन्त्रणा में केवल तीन व्यक्ति थे। घायल और वृद्ध कमा लाखाणी, बालुकराय और दामोदर महता। कुछ परामर्श हुआ। अन्तिम निर्णय के अनुसार दुर्ग कमा लाखाणी को सौंप दिया गया। आहत भीमदेव तथा दूसरे घायलों को लेकर महता और बालुकाराय अत्यन्त प्रच्छन्न भाव से खम्भात को रवाना हो गए। यह कार्य ऐसे तुर्त-फुर्त और सावधानी से हुआ कि किसी को भी कानोकान पता न लगा। लाखाणी ने आग्रहपूर्वक प्रायः सब लड़ने योग्य योद्धा महासेनापति भीमदेव के साथ खम्भात भेज दिए थे। अब शेष दोनों प्रवहण भी खम्भात रवाना कर दिये गये। दुर्ग में अब छोटी जाति के सौ-पचास मनुष्य और सौ योद्धा बच रहे थे। भोजन सामग्री की भी दुर्ग में कमी थी। इससे कम से कम मनुष्यों को ही वहां रहने की व्यवस्था की गई। उन्हीं सौ योद्धाओं कोलेकर वीरवर कमा लाखाणी सब बुर्जों पर चौकी-पहरे की व्यवस्था करके तथा दुर्ग द्वार भलीभांति बंद करके बैठ गए। उनकी गिद्ध दृष्टि अब शत्रु की गतिविधि पर थी।

दुर्ग अत्यन्त दृढ़ और अजेय था। समुद्र से घिरी तीनओर की ढालू फिसलती हुई चट्टानों पर किसी भी तरह मनुष्य का चढ़ना संभव नहीं था। दुर्ग का मुख्य तोरण बहुत ऊंचा था और वहां तक पहुंचने के लिए तीन मील टेढ़ी-मेढ़ी पेंचीली पहाड़ी पगडंडी पर चढ़ना पड़ता था। जहां कठिनाई से केवल एक आदमी चल सकता था। घोड़ा-हाथी तो वहां जा ही न सकते थे। सारा पर्वत जंगली लता पुष्पों गुल्मों एवं कटीली झाड़ियों से भरा था। किले के कंगूरों पर सौ धनुर्धर आक्रमणकारियों के विफल प्रयास का तमाशा देख रहे थे।

इस समय समुद्र में ज्वार आ रहा था और अमीर की जल युद्ध से अनभिज्ञ सेना समुद्र की तूफानी पर्वत सी तरंगों की चपेट में उछल रही थी। उसकी नौकाएं उलट रहीं थी, या दूर- दूर लहरों पर बिखर रहीं थी। उसके साथ साहसी और कुशल मल्लाह भी नहीं थे। फतह मुहम्मद बहुत साहसी योद्धा था, परन्तु यहां उसे सफलता नहीं मिल रही थी। किसी तरह वह लहरों पर काबू नहीं पा रहा था। तीर तक नावों का पहुंचना संभव नहीं था। लहरें उन्हें पीछे फेंक देतीं थीं। अनेक नावें लहरों से उठाई जाकर चट्टानों से टकराकर चूर-चूर हो रहीं थी। कुछ साहसी योद्धा नावों पर से तीर चला रहे थे, पर वे दुर्ग के इस ओर ही प्राचीर से टकराकर गिर रहे थे। दुर्गस्थ वीर उनका प्रयास देख-देखकर हंस रहे थे।

सारी रात फतह मुहम्मद विफल प्रयास करता रहा। भोर होते-होते अमीर अपनी वीरवाहिनी लेकर दुर्ग के सामने आ डटा। समुद्र भी शान्त हुआ और गुस्से से उबलता हुआ फतह मुहम्मद खीझ भरा सा अमीर के सामने जा खड़ा हुआ। अमीर ने देखा,उसका सारा सैन्य बल निरर्थक है। किले के फाटक पर पहुंचना सम्भव नहीं है और घेरा डालकर महीनों-वर्षों में भी किले का कुछ नहीं बिगाड़ा जा सकता। उधर अमीर के लिए एक-एक क्षण भारी हो रहा था। नीचे से कोई तीर किले तक नहीं पहुंच पा रहा था। एक-एक,दो-दो आदमी, जो उन बीहड़ पगडंडियों के रास्ते से दुर्ग द्वार पर पहुंच रहे थे, वह दुर्ग से बरसते हुए तीरों से बिंध-बिंध कर और लुढ़क-लुढ़क कर अमीर के सम्मूख ढेर हो रहे थे। अमीर की घुड़सवार सेना

बेकार प्रमाणित हो रही थी। क्योंकि वहां घोड़ा दौड़ाने का स्थान ही नहीं था। क्रोध और खीझ से पागल होकर अमीर दुर्ग के बाहर बसे छोटे लोगों, खेड़तों की बस्ती पर टूट पड़ा। स्त्री-बच्चों और निरीह बूढ़ों तक को उसने काट डाला। अभी एक और के सामने सिर झुकार इस खुदा के बन्दे ने जो वचन दिया था उसे भूल गया। पर यह हत्याकांड करके भी उसे कुछ लाभ नहीं हुआ। उसे न दुर्ग को छोड़ते बनता था, न आक्रमण करते। वह सोच ही न पा रहा था कि क्या करे। भीमदेव जैसे शत्रु को वह अछूता नहीं छोड़ सकता था और दुर्ग भंग करना उसके बूते से बाहर की बात थी।

निरुपाय उसने दुर्ग का घेरा डाल दिया और स्थिर होकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। फिर कुछ सोच समझकर उसने फतह मुहम्मद को दूत बनाकर किलेदार के पास सुलह की शर्तें लेकर भेजा। सुलह की शर्तें सिर्फ यहीं थी कि यदि किलेदार महाराज भीमदेव को उनके सुपुर्द कर दे तो वह किला छोड़ सकता है।

फतह मुहम्मद सफेद झंडा फहराता हुआ किले की पौर पर पहुंचा। पौर की बुर्ज पर चढ़कर वृद्ध कमा लाखाणी ने आमीर का सुलह सन्देश सुना। सुनकर हंसा, हंसकर कहा,''अमीर नामदार से हमारा सलाम कहना और कहना, अभी नहीं, परन्तु उपयुक्त काल में मैं महाराज को लेकर अमीर की सेवा में हाजिर हूंगा। अभी महाराज भीमदेव बीमार हैं, अमीर के अभ्यर्थन के योग्य नहीं हैं।''

सन्देश में कितना व्यंग्य और कितना तथ्य था, यह अमीर नहीं समझ सका। उसने दुर्ग में घुसने योग्य कोई गुप्त मार्ग हो, उसे खोज निकालने या कोई दरार चट्टानों में बनाने तथा किसी तरह दुर्ग में घुसने की कोई न कोई तदवीर निकालनी की, चारों ओर अपने जासूस रवाना कर दिये।

अट्ठासी तलवारें

दिन बीतते चले गए, पर कुछ लाभ नहीं हुआ। एक-एक करके सात दिन बीत गए। दुर्ग में अन्न-जल केवल एक ही दिन का शेष रह गया। वृद्ध कमा लाखाणी ने वीरों को एकत्रित करके कहा,''भाइयों, खेद है कि समय ने हमारी सहायता नहीं की। हमने कितनी भूल की है कि दुर्ग में यथेष्ट अन्न-जल का प्रबंन्ध नहीं किया। परन्तु अब भूख-प्यास से तड़प कर मरने का क्या लाभ है? और दो दिन बाद यदि हमने साहस किया तो हमारा

बल बाधा रह जाएगा। भूख-प्यास से हम जर्जर हो जाएंगे। इससे चलो, अपने हिस्से का शेष कार्य आज ही, अभी पूरा कर दें। शत्रु की सेना पर प्रबल पराक्रम से टूट पड़े और वीरगति प्राप्त करें।'' उसने गिनगिनाकर कहा,'' हम अट्ठासी वीर हैं। सब स्वस्थ हैं, सबके पास शस्त्र हैं, फिर विलम्ब काहे का? चलो, अपने-अपने प्राणों का मूल्य चुकाएं। वीरवर सोरठ के राव के धर्मक्षेत्र में तिल-तिल कट मरे, अब आज हम भी उनकी राह चलें।''

वीरों ने दर्प से हुंकार भरी। सभी ने अपना अंन्तिम भोजन डट कर किया। जो खाद्य-सामग्री बची, उसे नष्ट कर दिया। जल भी सुखा दिया। कुआं पाट दिया और अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो दुर्ग द्वार खोल दिया। एक-एक वीर बाहर निकला। सबसे आगे वीरवर कमा लाखाणी अपनी सफेद दाढ़ी फहराते हुए चले। उनके पीछे अन्य योद्धा। अमीर ने सोचा, क्या सचमुच वे आत्मसमर्पण कर रहे हैं। उसने सेना को सज्जित होने की आज्ञा दी। घोड़े पर सवार होकर वह सेना के आगे खड़ा हुआ। राजपूत नीरव और निस्तब्ध नीचे आ रहे थे। उनकी तलवारें नीचीं थीं। अमीर ने एक भी तीर न छोड़ा। दोनों सेनाएं केवल एक तीर के फासले पर आमने-सामने खड़ीं हो गईं। परन्तु एक तरफ बीस हजार सज्जित सेना और दूसरी ओर केवल अट्ठासी नर-व्याघ्र।

अमीर ने ललकार कर कहा,''क्या गुजरात का राजा हमारे ताबे हुआ ?'' उत्तर में वीर कमा लाखाणी ने अपनी तलवार छाती से लगाई। घोड़े को जरा आगे बढ़ाया और हवा में फहराती हुई अपनी सफेद दाढ़ी की छटा दिखाते हुए कहा ,'' यदि तू गजनी का अमीर है तो हमारे पास अट्ठासी तलवारें हैं, ले, एक-एक गिन।''

उन्होंने तलवार ऊंची की। घोड़े को एड़ मारी

।काठियावाड़ी पानीदार घोड़ा हवा में उछला और सीधा अमीर पर टूट पड़ा। अमीर फुर्ती से बगल में दब गया, और कमा लाखाणी की तलवार, जो अमीर के सिर को लक्ष्य कर चुकी थी,उसके घोड़े के मोढ़े पर पड़ी। अट्ठासी तलवारें उन बीस हजारों पर बाज की भांति टूट पड़ीं। अमीर अवाक रह गया। वीर धुरन्धर कमा और उसके अट्ठासी योद्धा इस तरह उस महासैन्य को चीरते चले गए। जैसे खरबूजे को चाकू चीरता है। वे सेना के मध्य भाग तक पहुंच गए। चारों ओर मुंह करके वृद्ध कमा लाखाणी को केन्द्र में रखकर वे चौमुखी तलवार चला रहे थे। क्षण-क्षण पर तेजी से उनकी संख्या कम होती जा रह थी, पर उससे अधिक तेजी से वे अपनी राह निकाल रहे थे। सेना के समुद्र के अट्ठासी वीर इस प्रकार पार कर रहे थे जैसे मगरमच्छ पानी को चीरता जा रहा हो।

शत्रु हैरान थे और अमीर विमूढ़ बना इन वीरों के शौर्य को देख रहा था। अन्त में वे शत्रु दल को भेदने में सफल हुए,परन्तु अट्ठासी में से कुल दो योद्धा अब जीवित थे।एक उनमें कमा लाखाणी थे। वे रक्त से सराबोर थे। शत्रु सैन्य से बाहर होते ही दूसरा योद्धा घोड़े से गिर पड़ा। कमा लाखाणी ने रास मोड़ी और घोड़े से कूद कर अपने दुर्घर्ष योद्धा का सिर अपनी जांघों पर रख लिया। योद्धा ने एक बार सूखे होठों पर जीभ फेरी और आंखें पलट दीं। कमा लाखाणी ने वहीं थोड़ी मिट्टी ऊंची कर उसका सिर टेक दिया। वे उठकर खड़े हुए, तब तक हजारों शत्रुओं ने उन्हें घेर लिया था। अमीर ने ललकार कर कहा,''खबरदार, इस बुजुर्ग का बाल भी बांका न होने पाए ।'' योद्धा हट गए और कमा लाखाणी अपनी तलवार हाथ में लिए खड़े रहे। घावों से उनके शरीर पर रक्त बह रहा था।

अमीर घोड़े से कूद पड़ा। उसने कहा,''अय बुजुर्ग, तुझ पर आफरीं, तू कौन है? अपना नाम बताकर महमूद को ममनून कर ।''

''मैं कच्छ का धनी कमा लाखाणी हूं, परन्तु अमीर महमूद, अब मैं खड़ा नहीं रह सकता। दो घड़ी पहले, जब मैं तेरे सामने आया था, मेरे पास अट्ठासी तलवारें थीं, परन्तु अब केवल एक है। यह मैं सिर्फ तुझे देना चाहता हूं। जल्दी कर,मेरी आखें भी जवाब दे रहीं हैं। तलवार उठा ।'' वृद्ध कमा लाखाणी ने हवा में तलवार घुमाई,पर उनका शरीर झूल गया। अमीर ने लपककर उन्हें आंचल

में भर लिया। उसकी आंखों में आंसू भरआए। उसने कहा ,''कच्छ के विजयी महाराज,आपकी इस अकेली तलवार ने दिग्विजयी महमूद को जेर किया है, महमूद की क्या ताब कि इसे छुए ।''

वीरवर कमा लाखाणी ने कान में महमूद के पूरे शब्द नहीं पड़े। अमीर की गोद में उनका सिर ढुलक गया। उनको गोद में लेकर अमीर महमूद वहीं भूमि पर बैठ गया। एक बार वीरवर ने आंखें खोलीं, होठ हिले और सदा के लिए निःस्पन्द हो गए।

अमीर ने आंख उठा कर देखा तो उसके योद्धा चुपचाप खड़े खड़े यह तमाशा देख रहे थे। अमीर ने हुक्म दिया ,''अय बहादुरों,घोड़ों से उतर पड़ो, हथियार जमीन पर रख दो और बहादुरों के बादशाह इस बुजुर्ग की इस तलवार के सामने सिर झुकाओ ।'' बीस हजार बर्बर दुर्दान्त खूनी डाकुओं ने भूमि पर घुटने टेक कर अपने-अपने हथियार जमीन पर रख सिर झुका दिया।

अमीर की आंखों से झर-झर आंसू बह चले। उसने दोनों हाथों से वृद्ध व्याघ्र की तलवार लेकर आंखों से लगाई। उसे चूमा और उसे वीरवर के वक्ष स्थल पर स्थापित कर अपना सिर भी निःस्पन्द वक्ष पर झुकादिया।

आत्म यज्ञ

कक्ष में आकर सर्वज्ञ ने देखा,गंगा जल्दी-जल्दी चिता बनाने में जुटी है। उसने पास-पास दो चिताएं बनाईं हैं। वह फुर्ती से जलने योग्य जो सामान वहां जुटा सकती थी, जुटा रही थी। सर्वज्ञ ने देखा तो कहा,''यह क्या?''

''चौलुक्य के लिए अग्नि-रथ।''

''और दूसरी?''

''गंगा के लिए,'' वह हंस दी। परन्तु गंग रो दिए। उनका वीतराग हृदय जैसे बालक की भांति अधीर हो गया। गंगा ने उनके अत्यन्त निकट आकर उनके वक्ष पर अपना सिर रखकर कहा,''आप भी रोते हैं?''

''गंगे, हिमालय की हिम धवन की चट्टानें भी पिघलतीं हैं, परन्तु अब तो मुझे जाना ही होगा। आ, मैं तुझे विदा कर दूं।'' उन्होंने उसके मस्तक पर हाथ फेरा। और बड़े देर तक उसे वक्ष से लगाए निस्पन्द खड़े रहे।

इसी समय उनके एक अन्तरंग शिष्य ने आकर कहा,''देव,अन्तर्कोट गिर गया, अब अन्तर्कोट पर शत्रु धावा कर रहे हैं। कुछ ही क्षण में वे रत्न मंडप तक पहुंच जाएंगे।''

''एक क्षण ठहर तुत्र, तू जा, और कृष्णस्वामी से कह कि रत्न कोषण की समुचित सुरक्षा व्यवस्था करें। मैं गंगा को मोक्ष देकर अभी आता हूं।'' शिष्य मस्तक नवाकर चला गया। सर्वज्ञ ने कहा, ''आ गंगी।'' उन्होंने अपने हाथ से उसका केश विन्यास किया। अंग-प्रत्यंग चन्दन चर्चित किया,फिर हाथ पकड़कर चिता पर बैठाया,कुछ

क्षण मौन रह,कम्पित वाणी से कहा,''जा कल्याणी,कैलासवासिनी हो।''

गंगा ने सर्वज्ञ की चरण-रज को मस्तक पर चढ़ाया, और आंो बन्द करके ध्यानस्थ बैठ गई। सर्वज्ञ ने घी और कपूर के बड़े-बड़े डले चिता पर रख अग्नि-स्थापना कर दी।

दोनों चिताएं शीघ्र ही धधकने लगी। धुआं कक्ष में फैल गया। किन्तु वह दृश्य देखने सर्वज्ञ वहां रुके नहीं,तेजी से गर्भगृह की ओर लपक चले।

शत्रु रत्न-मंडप में घुस आए थे। सबसे आगे अमीर महमूद था। उसकी हरी पगड़ी पर पन्ने पर तुर्रा झलक रहा था और लाल दाढ़ी हवा में फहरा रही थी। उसके हाथ में नंगी तलवार थी। उसके एक पार्श्व में एक भारी बुर्ज हाथ में लिए फतह मुहम्मद था, और दूसरे पार्श्व में श्मश्रुधारी प्रसिद्ध अरबी विद्वान अलबरूनी था। उसके हाथ में एक लम्बी तलवार थी।

अमीर ने संकेत से सबको आगे बढ़ने से रोक दिया। तीनों व्यक्ति आगे बढ़े। रत्न-मंडप के मणिजटित खम्भों पर अस्तंगत सूर्य की रंगीन किरणें झिलमिला रहीं थीं। उस अप्रतिम मणिमय प्रासाद को देखकर अमीर आश्चर्य से जड़ हो गया। सहमते हुए, वह गर्भगृह में घुसा। उसने देखा,घृत के दीपक अपनी पीली आभा और सुगन्ध बिखेर रहे थे। और नितान्त शान्त वातावरण में गंग सर्वज्ञ स्वर्ण-थाल हाथ में लिए देवाधिदेव सोमनाथ की आरती उतार रहे थे।

क्षण-भर अमीर भाव-विमोहित-सा मुग्ध खड़ा रहा। कुछ देर बाद उसने सतेज स्वर में कहा,''यहां कौन है?''

'' मैं और मेरा देवता,'' गंग ने शान्त स्वर में कहा। फिर बिना ही अमीर की ओर मुंह फेरे उन्होंने कहा ,''वत्स महमूद,कुछ क्षण ठहर जा।''

वे अपनी अर्चना सम्पन्न करने लगे,मानो कुछ हुआ ही न हो। महमूद और उसके दोनों साथी इस अप्रतिम देव और उस देव के सेवापुरुष को अनिमेष देखते खड़े रहे।

शीघ्र ही सर्वज्ञ ने अर्चना-विधि समाप्त की। भूमि में गिरकर देवता को प्रणाम किया। फिर बिलकुल ज्योर्तिलिंग से सटकर बैठ गए। बैठकर वैसी ही शान्त-स्निग्ध वाणी से उन्होंने कहा,'' अब तू अपना काम कर महमूद।''

गंगा ने शांत वाणी से कहा,''पुत्र, चौलुक्य तो कैलास-वासी हुए। परन्तु महाराज सेनापति केवल मूर्च्छित हैं। उनकी रक्षा का भार मैं तुम्हें सौंपता हूं। पुत्र, गुजरात के गौरव की रक्षा करने को भी भीमदेव जीवित रहें, ऐसा ही देवादेश है। अब समय कम और काम बहुत है, एक-एक क्षण मूल्यवान है। आओ मेरे साथ!''-यह कहकर सर्वज्ञ ने अनायास ही महाराज भीमदेव का शरीर अपने बलिष्ठ हाथों से कन्धे पर उठा लिया।

उन्होंने नेत्र बन्द कर लिए। देखते ही देखते उनका शरीर निस्पन्द हो गया। अमीर ने साथियों से दृष्टि-विनिमय किया। फिर वह फतह मुहम्मद के हाथ से गुर्ज लेकर आगे बढ़ा।

ज्योर्तिलिंग के निकट जाकर उसने कहा,''मैं, खुदा का बन्दा महमूद वही कहूंगा जो मुझे कहना चाहिए। अय बुजुर्ग, दूर हट जा और बुत-शिकन को कुफ्र तोड़ने दे।''

परन्तु गंग सर्वज्ञ ने और भी ज्योर्तिलिंग को अपने अंक में लपेट लिया। उन्होंने आंख खोलकर करुण दृष्टि से महमूद की ओर देखा, और धीर स्वर से कहा,'' पहले सेवक और उसके पीछे देवता।''

उन्होंने ज्योर्तिलिंग पर अपना हिमधौत सिर रख दिया। अमीर ने गुर्ज का भरपूर वार किया। सर्वज्ञ का भेजा फट गया और उनके गर्म रक्त से ज्योर्तिलिंग लाल हो गया। उनके मुंह से ध्वनि निकली,''ओउम्,'' और प्राण पखेरू ब्रह्मरन्ध्र को भेद कर उड़ गए। अमीर ने गुर्ज का दूसरा वार और फिर तीसरा वार किया। ज्योर्तिलिंग के तीन टुकड़े हो गए। दूज का क्षीण चन्द्र आकाश में चढ़ रहा था। इधर-उधर तारे टिमटिमा रहे थे।

धर्मानुशासन

रत्न मंडप की पौर पर दामोदर महता उसी प्रकार अचल भाव ने निस्पन्द खड़े रहे। वो सोच रहे थे,दासी-पुत्र के शौर्य पराक्रम,विनय और उच्चाशयता की बात। कुछ ही क्षणों में उन्हें प्रतीत हो गया कि सिंह-द्वार का पतन हो गया और अमीर की सेना अन्तरायण में धंसी चली आ रही है। क्या करना चाहिये,इसका कुछ भी निर्णय वह कर्मठ राजपुरुष इस समय न कर सका। वह देख रहा था, आज उसी के नेत्रों के सम्मुख गुजरात के उस विश्रुत देव-स्थान के भंग होने का क्षण आ लगा। कैसे वह उसे दो,कैसे वह उसे रोके? उसके हाथ में अमीर की दी हुई तलवार थी, क्या वह उसके नाम पर अमीर से याचना करे, उस अमीर से, जिसे उसने एक बार प्राण-दान दिया था। नहीं,नहीं। उसने वह तलवार म्यान में कर ली और गुर्जर तलवार सूंत ली। उस साहसी पुरुष ने इस पुण्य पर्व पर प्राणोत्सर्ग का निर्णय कर लिया। उसने अपने ही आपसे कहा,'नहीं-नहीं, इस पौर पर मेरे रहते म्लेच्छ का पांव नहीं पड़ेगा।'

शोर और अल्लाहो-अकबर का नाद निकट आ रहा था। शस्त्रों की झनझनाहट और मरने वालों के आर्तनाद बढ़ रहे थे। परन्तु इस स्थान पर एक भी पुरुष न था। सामने गर्द उड़ती आ रही थी। और कुछ ही क्षणों में शत्रु इस भूमि की रजकण को रक्त-रंजित करने आ पहुंचेंगे, यह वह जानता था। दामो महता और एक पौर नीचे उतरे। इसी समय किसी ने पीछे से उन्हें छुआ। उलटकर देखा, तो गंग सर्वज्ञ। वहीं शान्त मुद्रा,वहीं अचल धैर्य। सर्वज्ञ ने करुण नेत्रों से गुजरात के मन्त्री को देखा और स्थिर स्वर से कहा,''आ पुत्र!''

उस वाचाल राजपुरुष के मुंह से एक शब्द भी न निकला। उसने आंखों में आंसू भरकर गंग की गंभीर मुद्रा देखी और चुपचाप बालक की भांति उनके पीछे-पीछे हो लिया। गर्भगृह में जाकर सर्वज्ञ ने गर्भगृह के द्वार बन्द कर लिये। फिर ज्योर्तिलिंग के ठीक पीछे जा एक गुप्त द्वार उन्होंने खोला और कुछ दूर तक अन्धकारपूर्ण सुरंग में चलकर एक छोटे कक्ष में जा पहुंचे।

कक्ष में महाराज भीमदेव और चौलुक्य के शरीर भूमि पर पड़े थे। बालुकाराय शोक-सन्तप्त चुपचाप खड़े थे। नंगी तलवार उनके हाथ में थी, उनकी तलवार और शरीर पर लगा रक्त सूख गया था। पास ही में गंगा स्तब्ध-निश्चल खड़ी थी।

गंगा ने शांत वाणी से कहा,''पुत्र, चौलुक्य तो

कैलास-वासी हुए। परन्तु महाराज सेनापति केवल मूर्च्छित हैं। उनकी रक्षा का भार मैं तुम्हें सौंपता हूं। पुत्र, गुजरात के गौरव की रक्षा करने को भी भीमदेव जीवित रहें, ऐसा ही देवादेश है। अब समय कम और काम बहुत है, एक-एक क्षण मूल्यवान है। आओ मेरे साथ!''-यह कहकर सर्वज्ञ ने अनायास ही महाराज भीमदेव का शरीर अपने बलिष्ठ हाथों से कन्धे पर उठा लिया।

बालुक ने बाधा देकर कहा,''गुरुदेव यह क्या? यदि ऐसा ही है तो वह भार मुझे दीजिए।''

''नहीं पुत्र,तुम्हारी भुजाओं पर तलवार का भार है, वही रहे। यह मेरा धर्मानुशासन है, बाधा मत दो। अपनी तलवार ले सावधानी से मेरे पीछे आओ। फिर गंगा की ओर घूमकर कहा,गंगा, अब तू?''

''जहां आपके श्रीचरण।''

''जिसे देखना मेरा व्रत है, उसे ही देखूंगी,इसके लिए मैने महासेनापति का राज्यानुशासन भी नहीं माना, आपका धर्मानुशासन भी नहीं मानूंगी।''

''तो घड़ी भर यहीं ठहर, मैं अभी आता हूं। तब चौलुक्य के शरीर की व्यवस्था करेंगे।''

गुरुदेव रुके नहीं। मूर्च्छित महाराज भीमदेव का अंग कन्धे पर लादकर उस अंधेरी गुहा में बढ़ चले,पीछे नंगी तलवार हाथ में लिए दामोदर महता और बालुकाराय चले।

वे चलते गये। धीरे-धीरे अन्धकार कम होने लगा और वे उन्मुक्त आकाश के नीचे आ खड़े हुए। सामने समुद्र हिलोरें ले रहा था। नौका तैयार थी। महाराज भीमदेव का शरीर नौका पर रख, उन्होंने बालुकाराय और महता को भी नौका पर चढ़ाकर कहा,''पुत्रों, आशीर्वाद देता हूं। सुखी होओ। यह प्रवाहण खड़ा है,जितना शीघ्र हो गंदावा दुर्ग पहुंच जाओ। महाराज की रक्षा करना। जाओ तुम्हारा कल्याण हो।''

सर्वज्ञ एकबारगी ही पीछे लौटकर तेजी से उस अन्ध-गुहा में घुस गए। दोनों राजपुरुषों ने उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उसकी नाव प्रवहण की ओर बह चली।

खम्भात

खम्भात गुजरात का बैकुंठ कहलाता था। वहां की प्रकृति-शोभा अपूर्व थी। प्रकृति और कला, दोनों के हीं संयोग ने इस कल्याण नगरी को गुजरात को शिरोभूषण नगर बना रखा था। नगर का बहुत बड़ा विस्तार था। महत्वपूर्ण समुद्र तट पर होने के कारण उसकी व्यापार-महत्ता और बढ़ गई थी। अरब और रोम के व्यापारी जहाज खम्भात ही के द्वार पर भूस्पर्श करते थे। देश विदेश के वाणिक-व्यापारी यहां सदैव बने ही रहते थे। समुद्र-तट की तर-गरम वायु, तरंगित समुद्र की सुषमा, और जल-थल के पक्षियों का कलरव एवं पुष्पों की सुगंध,केला-नारियल,आम आदि वृक्षों की सघन घन-छटा देखते ही बनती थी। सान्ध्य बेला में अस्तंगत सूर्य-किरणों की लालिमा अकथ शोभा विस्तार करती थी। नगर में अनेक उपवन, ताल, बावड़ी और रमणीय स्थान थे। वहां के लोग भी अत्यन्त सम्पन्न,सुरुचिपूर्ण, स्वच्छ और सभ्य थे। नगर की समृद्धि इतनी थी कि वहां व्यापारियों की हाट में हीरा,मानिक,मोती और मुहरों के ढेर लगे रहते थे। अरब समुद्र से निकलने वाले गजमुक्ताओं की उन दिनों खम्भात ही सबसे बड़ी मंडी थी। इस समय नगर का क्षेत्रफल पन्द्रह गांव की सीमा में तीस मील तक फैला था।

नगर के प्रान्त में समुद्र-तट पर भूरे रंग के पत्थर का दुर्ग था। दुर्ग बहुत विशाल और ऊंचा था। उसके चारों ओर की खाईं साठ हाथ चौड़ी और इतनी ही गहरी थी, जो सदा समुद के जल से भरपूर रहती थी। धनी जनों की हवेलियां पत्थर की तथा सर्वसाधारण के मकान दो फीट की लम्बाई वाली पैंतीस-पैंतीस सेर की वजनी, भट्ठी में पकाई हुई समचौरस या लम्बचौरस ईंटों के बने हुए थे। परन्तु इस समय खम्भात का गौरव-स्वरूप देवाधिष्ठान अचलेश्वर महादेवालय था, जो समुद्र के मस्तक पर अति भव्य उत्तम श्रृं पर भूरे रंग के पत्थर का बना सुशोभित हो रहा था। जिसके स्वर्णकलश मध्यान्ह के सूर्य में जगमग करते दस-दस गांव को लोगों को दीख सकते थे। मन्दिर में सैकड़ों ब्राह्मण निरन्तर शिवस्तोत्र का पाठ करते थे। मन्दिर का विशाल मंडप स्फटिक के खम्भों पर आधारित था। जहां

जगह-जगह वेद,पुराण आदि के वाक्य तथा देवमूर्तियां खुदी हुईं थीं। इसे कैलास मंडप कहा जाता था। मन्दिर में प्रतिष्ठित शिवलिंग की प्रतिष्ठा,सोमनाथ के बाद अग्रगण्य थी। लिंग के सम्मुख ही स्फटिक ही का विशाल नन्दी था। देवता ही नहीं, देवता के पुजारी नृसिंह स्वामी की कीर्ति भी गुजरात में दिगन्त व्याप्त थी। राजा और प्रजा, दोनों ही उन्हें एकनिष्ठ ब्रह्मचारी और महापुरुष की भांति पूजते थे। नृसिंह स्वामी गत तीस वर्षों से देव-सेवा कर रहे थे। उनके उन्नत ललाट और प्रसन्न मुद्रा देखते ही छोटे-बड़े सब मोहित हो जाते थे। वे सभी की श्रद्धा और भक्ति के पात्र थे। इसके अतिरिक्त और भी अनेक भव्य देवालय थे। जहां प्रत्येक प्रभात,मध्यान्ह और सन्ध्याकाल के स्तवन से समस्त खम्भात नगर मुखरित हो उठता था। खम्भात उद्योग-शिल्प में भी वाणिज्य की भांति ही प्रख्यात था। हरएक वस्तु के पृथक-पृथक बाजार थे। नगर का राजमार्ग बड़ा विशाल था। नगर दृढ़ प्राचीर से घिरा था। इसमें इतने बड़े-बड़े बुर्ज व बड़े-बड़े द्वार थे, जहां अम्बारीवाले हाथी अनायास ही निकल सकते थे।समुद्र तट नगर से कोई पौन मील के अन्तर पर था। यह अति विशाल और भव्य था। मार्ग के दोनों ओर विशाल वन,उपवन,बावड़ी,धर्मशाला, अतिथिगृह और वाटिकाएं बनीं थीं। जहां विविध फल-फूल लदे हुए थे तथा भांति-भांति के पक्षी कलरव करते थे। वसन्तघोषी कोयल आम्र-मंजरी पर बैठी कुहू की ध्वनि करती और आम चम्पा, तमाल,अशोक वृक्षों की सघन छाया में स्त्री-पुरुष स्वच्छन्द विहार करते तथा उन्मुक्त नैरोग्य समुद्री वायु का सेवन करते थे। इन दिनों खम्भात में बहुत भीड़ हो गई थी। देव पट्टन के सब ब्राह्मण परिवार, सेठ, उनके परिजन और इधर-उधर के भागे हुए लोग वहां भर गए थे। सैनिक भी बहुत थे। सोमनाथ और गंदावा दुर्ग के पतन के समाचार सुनकर सावन्तसिंह चौहान को दुर्ग सौंप, महाराज वल्लभदेव अपना सर मुकाम यहां से उठाकर बहुत से धनी परिवारों तथा ब्राह्मणों सहित अपने सैन्य ले आबू को रवाना हो गए थे। इससे सर्वत्र उदासी,बेचैनी और चिन्ता की लहर फैल रही थी। कारोबार ढीले हो रहे थे। लोग आशंका से भरे थे।

रक्त-गन्ध

अमीर ने बहुत खोज की,पर दुर्ग में एक भी जीवित क्षत्रिय न मिला जो वीरवर कमा लाखाणी की ऊर्ध्वदैहिक क्रिया करता। अमीर ने तब अपने उमराव क्षत्रिय सरदारों को आदरपूर्वक वीर की अन्तिम क्रिया धर्मानुसार करने की आज्ञा दी। वह स्वयं भी नंगे पैर पांव-प्यादा कुछ दूर तक अर्थी के साथ चला तथा इस वृद्ध के सम्मान में अपनी सारी सेना की तलवार नीचे झुकी रखने के आदेश दिया। लूटमार करने योग्य वहां कुछ भी शेष न बचा था। दुर्ग सूना था, वहां न एक प्राणी था, न एक दाना अन्न, न एक बूंद पानी पानी। दुर्ग के तल भाग में बसी बस्ती प्रथम ही जलाकर छार कर डाली गई थी। सब लोग कट-पिट चुके थे, जो बच सके थे, वे प्राण लेकर भाग गए थे। लाशें सड़ रहीं थीं,गीध मंडरा रहे थे। वायु का सांय-सांय शब्द और समुद्र की उत्ताल तरंगें भयानक दीख रहीं थीं। अमीर की सारी सेना त्रस्त, थकित,भूखी-प्यासी और अशान्त थी। वहां न उनके घोड़ों को घास और दाना-चारा था, न सिपाहियों के लिए अन्न-जल।

वीर का सत्कार कर चुकने के बाद इस सिंह-व्याघ्र का ध्यान फिर अपने प्रमुख शत्रु भीमदेव की ओर गया। क्या भीमदेव बचकर भाग निकला था, या इसी युद्ध में मर कट गया? परन्तु ऐसा होता तो उसका पता अवश्य लग जाता। अमीर ने बहुत से गोइन्दे इसकी टोह में लगा दिये थे। स्वयं फतह मुहम्मद अपने सवारों सहित खोज में निकला था।

तीसरे पहर फतह मुहम्मद समाचार लाया कि भीमदेव बचकर खम्भात को रवाना हो गया है। अमीर के पाषाण-सम कठोर हृदय पर जो मूर्ति अंकित थी,वह भी खम्भात में थी। अब तक अमीर अपने रण-रंग में उसे भूला था, अब एकबारगी ही वह मूर्ति उसके रक्त-बिन्दुओं में ऊधम मचानी लगी। उसने मन-ही-मन याद करके उसका नाम दुहराया-चौला,चौला। और वह लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा। उसके नथुने जलने लगे। इसी समय उसे ख्याल हुआ कि उसका शत्रु भीमदेव खम्भात में है। और वह उसकी माशूका नाजनीं भी। एक अज्ञात ईर्ष्या से उसका रोम-रोम जल उठा। एक प्रच्छन्न भावना से अभिभूत होकर उसने अपने मन में कहा-नहीं,नहीं, ये दोनों कभी नहीं मिलने पाएंगे। कभी नहीं। उसे स्मरण हुआ, वह प्रथम दर्शन, भीमदेव का अकस्मात आकर तलवार उठाना और फिर गंग के आने से निरुपाय लौटना। उसने धरती पर पैर पटककर कहा,''हुंह, जब तक यह तलवार है,उसे दूसरा कोई न छू सकेगा। वह महमूद की दौलत है। उसकी संचित सारी दौलत से अधिक ।उसकी सत्रह बड़ी-बड़ी दिग्विजयों से भी अधिक मूल्यवान।''

परन्तु गर्व और गौरव ने किसी के सामने उसे अपने हृदय की इस भूख को प्रकट नहीं करने दिया। वह मन-ही-मन ताव-पेच खाता रहा। अन्त में उसने फतह मुहम्मद को एकान्त में बुलाकर कहा, ''क्या तू खम्भात की राह-बाट जानता है?''

''जानता हूं।''

''राह में दाना-घास पानी है?''

''बहुत है।''

''खम्भात देखा है?''

''देखा है हजरत।''

''वहां की गली-गूचों से वाकिफ है?''

''अच्छी तरह। मैं वहां रह चुका हूं।''

''और वह नाजनीं?''

''मेरी एक आंख उस पर है हुजूर।''

''क्या तुझे उसकी कुछ खबर है?''

''वहां जाते ही मिल जाएगी।''

''किस तरह?''

''मेरा आदमी उसके साथ है।''

''वह क्या भरोसे का है?''

''मेरी बीवी है।''

''तो चल अभी कूच कर। अपने तीन हजार सवार चुन ले और तीन टुकड़ियों में बांटकर मुझसे तीन कोस आगे चल। हर टुकड़ी का आधे कोस का फसला रख।''

''जो हुक्म।''

''और तुझे मैं सिर्फ उस नाजरीं के ऊपर छोड़ता हूं,लड़ाई से दूर रहकर, सिर्फ उसी पर आंख रख।''

'' जो हुक्म हुजूर।''

और तेरी बीवी, यदि सिपहसालार की बीवी बनने की फख्र हासिल करना चाहती है, तो उस नाजनी की साया में रहे, यह बात उसे कह देना।

''कह दिया हुजूर।''

''तू दानिशमन्द खुशगवार बहादुर है। मैं तुझसे खुश हूं।''

फतह मुहम्मद ने अमीर का दामन चूमा और सिर झुकाकर तेजी से चल दिया।

और कुछ ही क्षणों के बाद अमीर का लश्कर खम्भात की राह-बाट जा रहा था। जैसे कोई रक्त पिपासु हिंसक पशु अपने मारे हुए शिकार की गंध लेकर उसके पीछे जाता है।

सूर्या बुलेटिन के संपादक अनिल यादव (छोटे नरसिंहानंद) व अरविन्द तिवारी जी गाजियाबाद के एसएसपी उपेन्द्र अग्रवाल जी से मिले और अपनी पत्रिका के लिए उनसे उनके विचार पूछे।

सूर्या बुलेटिन के संपादक अनिल यादव (छोटे नरसिंहानंद) व अरविन्द तिवारी जी ने शिव शक्ति धाम डासना की पत्रिका हिन्दुओ को एक मात्र आवाज सुर्या बुलेटिन गाजियाबाद के सिटी मजिस्ट्रेट हिमांशु गौतम जी को भेट की।

धारा 376 के दुरुपयोग से समाज में कम होता जा रहा है महिलाओं का सम्मान

संजू चौधरी (रोरी)
राष्ट्रीय प्रचार मंत्री, धर्म रक्षक वीरांगना सेना

आज कल बलात्कार की शिकायतें पुलिस स्टेशन में बहुत अधिक लिखी जाने लगी हैं , सामाजिक कार्यकर्ता होने के कारण मैं इस तरह के केस पर ध्यान रखती हूं। कुछ शिकायतें तो मौखिक ही होतीं हैं जिसमें पुलिस या समाज के लोग आपस में समझौता कर देते हैं ।इस तरह के केस में महिला का उद्देश्य यही रहता है कि वो समाज में दिखा सके कि उसकी पुलिस में बहुत सुनवाई होती है यदि आगे से मुझे परेशान किया तो जेल भिजवा दूंगी और फिर वो सभी घर परिवार वालों को गांव मोहल्ले वालों को धमकाती रहती है।

कुछ महिलाओं का उद्देश्य झूठे मुकदमे दर्ज कराकर धन कमाना होता है । जेसे ही आरोपी पुरुष से धन मिला । महिला पुलिस अधिकारी के समक्ष अपना बयान बदल देती है या अपनी तहरीर वापस ले लेती है । यदि सौदेबाजी में देर हो जाती है और केस कोर्ट में पहुंच जाता है । तो महिला कोर्ट में अपने बयान बदल देती है।

आज कल कुछ पुरुष अपने घर की महिलाओं को आगे कर उनसे 376 में झूठा मुकदमा इसलिए कर देते हैं ताकि उनके ऊपर चल रहे मुकदमे से इस झूठे मुकदमे के दबाव में समझौता हो जाये।लेकिन जिस पुरुष पर झूठा मुकदमा धारा 376 के तहत दर्ज हो जाता है। उसका तो पूरा कैरियर नष्ट हो जाता है। इसके पीछे गलती समाज की उस

मानसिकता की है जो ये निर्धारित कर चुकी है कि अगर कोई लड़की किसी लड़के पर बलात्कार का इल्जाम लगाती है तो वो सच ही होगा। पर ऐसा क्यों?

आपको लगे कि बलात्कार जैसे संगीन अपराध के बारे में मैं बात करते हुए पुरूषों का बचाव कैसे कर सकती हूं, या फिर उनसे सहानुभूति कैसे दिखा सकती हूं? तो माफ कीजिएगा, मेरी सहानुभूति उन पुरुषों के साथ नहीं है, जो सच में इस घिनौने अपराध के दोषी हैं।

मैं भी इस बात के पक्ष में हूं कि ऐसे पुरुषों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए, लेकिन मैं उन पुरुषों के साथ हूं, जो बिना किसी जुर्म के इस इल्जाम में फंस जाते हैं और मुझे लगता है कि ऐसे पुरुषों के लिए भी आवाज उठाई जानी चाहिए।

आपको शायद ये जानकर हैरानी होगी अप्रैल 2013 से जुलाई 2014 के बीच दिल्ली में रेप के 2753 मामले दर्ज हुए, जिनमें से 1464 मामले झूठे थे। आंकड़े सच में चौंका देने वाले हैं। (इंडिया टुडे) इन आंकड़ों से एक बात तो साफ है कि हमारे देश में कई ऐसी महिलाएं हैं, जो अपने मतलब के लिए, अपने किसी घटिया मकसद के लिए या फिर कई बार सिर्फ पैसे के लिए किसी पुरुष पर रेप जैसा घटिया इल्जाम लगाने से भी पीछे नहीं हटती।

वैसे मैं आपको बता दूं कि इन झूठे मुकदमें दर्ज करने का खामियाजा सिर्फ उन पुरुषों को ही नहीं भुगतना पड़ता जो इन आरोपों का शिकार बनते हैं, बल्कि उन महिलाओं को भी भुगतना पड़ता है,जो वास्तव में रेप पीड़िता होती हैं। इन शातिर महिलाओं की वजह से असल रेप विक्टिम्स को न्याय मिलने में दिक्कत व देरी होती है ।

रेप केसेज में आंख बंद कर महिलाओं पर

विश्वास करने की कई वजहें हैं, जिनमें से एक वजह महिलाओं को कमजोर समझा जाना है। इसके अलावा हमारे देश में महिलाओं के खिलाफ जिस तरह से क्राइम केसेज बढ़ते जा रहे हैं, उस वजह से भी झूठे मामलों को भी सच्चा मान लिया जाता है।

दरअसल सच ये है कि 'स्त्रीत्व' और 'पौरुष' की लड़ाई में औरतों का 'विक्टिम कार्ड' खेलना आसान होता है। और झूठे इल्जामों के इस भंवर में कुछ बेकसूर पुरूष इस तरह फंसते हैं कि सिर्फ उन्हें ही नहीं, बल्कि उनके पुरे परिवार को भी कई परेशानियां भुगतनी पड़तीं हैं। औरतों के लिए लड़ने वाले तो बहुत हैं लेकिन पुरुष भी समाज में महिलाओं द्वारा शोषित हो रहे हैं, जिनके लिए कोई आवाज नहीं उठा रहा है। मैंने आपने व्यक्तिगत जीवन में कई बार देखा है कि पुरुष की कोई छोटी सी गलती होती है फिर भी उस पर बलात्कार जैसे गम्भीर आरोप में मुकदमा दर्ज कर दिया जाता हैं। कुछ मामलों में लड़का व सगे सम्बन्धी बदनामी के डर से घर से बाहर निकलना भी बंद कर देते हैं। आज जहां भी देखो वहां सिर्फ महिलाओं के हक की बात की जाती है। इतना ही नहीं महिलाओं के हक में कई कानून भी बनाए गए हैं ताकि किसी भी महिला के साथ कोई अन्याय न हों सके ।इस लेख के बाद कुछ औरतें मुझे महिला-विरोधी होने जैसे आरोप भी लगा सकती है लेकिन मेरा मानना है कि किसी एक लिंग के लिए काम नहीं करना चाहिए , अगर अन्याय पुरुषों के साथ हो रहा है, तो वो भी गलत है। मैं महिलाओं के खिलाफ नहीं हूं। मै उस अन्याय के खिलाफ हूं जो बेकसूर के साथ हो रहा है। चाहे वो महिला हो या पुरुष। समाज के लोगों के लिए भी जरूरी है कि महज एक औरत के इल्जाम लगा देने से किसी पुरूष को चरित्रहीन या दोषी नहीं मान लेना चाहिए। और ऐसा झूठा इल्जाम लगाने वाली महिलाओं से मैं बस इतना ही कहना चाहूंगी कि अपने किसी भी घटिया मकसद के लिए इस हद तक गिरना आपके नारी होने की गरिमा को शोभा नहीं देता। आपकी इस तरह की हरकत से सभी महिलाओं पर उंगली उठाती हैं। इससे समाज में महिलाओं का सम्मान कम होता चला जायेगा ।

आज जहां भी देखो वहां सिर्फ महिलाओं के हक की बात की जाती है। इतना ही नहीं महिलाओं के हक में कई कानून भी बनाए गए हैं ताकि किसी भी महिला के साथ कोई अन्याय न हों सके। इस लेख के बाद कुछ औरतें मुझे महिला-विरोधी होने जैसे आरोप भी लगा सकती है लेकिन मेरा मानना है कि किसी एक लिंग के लिए काम नहीं करना चाहिए , अगर अन्याय पुरुषों के साथ हो रहा है, तो वो भी गलत है।

नक्कार खाने में तूती बजाता एक सन्यासी

'हिन्दुओं किसी और काम पहले अपने नेताओं को चीन जैसे कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनवाने के लिए मजबूर करो' : यति नरसिंहानंद सरस्वती

गाजियाबाद के डासना स्थित शिवशक्तिधाम में एक संन्यासी एक नवंबर 2018 से आमरण अनशन पर बैठ गया। इस संन्ययासी का नाम यति नरसिंहानंद सरस्वती है। इस संन्यासी की केवल एक मांग है कि इस देश में चीन की तरह का एक कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाया जाये, जिससे इस देश में कोई भी व्यक्ति चाहे वो किसी धर्म,जाति या सम्प्रदाय का मानने वाला हो,चाहे वो किसी भी भाषा में बात करता हो और चाहे वो किसी भी प्रान्त का रहने वाला हो,यदि वह भारत का नागरिक है, तो उसे किसी भी कीमत पर दो से ज्यादा बच्चे पैदा न करने दिये जाएं। यति नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज की यह कोई नई मांग नहीं है। वो इस प्रश्न को 20 से भी ज्यादा वर्षों से उठा रहे हैं। इसी कानून को बनवाने का वादा उनसे संघ और विश्व हिन्दू परिषद के शीर्षस्थ नेताओं ने किया था। मोदी सरकार बनने के 6 महीने बाद उन्होंने बहुत मुखर होकर इस मांग को उठाना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने हरिद्वार में,दिल्ली में, देवबन्द में, उज्जैन में, गाजियाबाद में, गुरुग्राम में इसी समस्या को लेकर लगातार धर्मसंसद का आयोजन किया और धर्मगुरुओं,राजनीतिज्ञों,बुद्धिजीवियों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं को लगातार इन समस्या के प्रति जागरुक किया। उन्होंने देश के वरिष्ठ संन्यासियों और हिन्दूवादी कार्यकर्ताओं के रक्त से साढ़े बारह हजार से ज्यादा पत्र इस कानून के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लिखे। इनमें सबसे पहला पत्र हरिद्वार से उन्होंने अपने गुरु जिनकी अवस्थ उस समय 110 वर्ष थी,स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज के रक्त से लिखा। जब वहां से कोई भी उत्तर नहीं मिला तो उनके शिष्य सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता श्री पृथ्वीराज चौहान ने इस विषय को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की जो सुप्रीम कोर्ट ने नकार दी। इसके बाद शिवशक्ति धाम डासना से पचास हजार से ज्यादा रक्तपत्र सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को लिखे गये जिनका कभी कोई उत्तर नहीं मिला। जब कहीं से कोई उत्तर नहीं मिला और फिर से 2019 का आम चुनाव सर पर आ गया तो थक-हार कर यति नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज अपने शिवशक्ति धाम डासना में ही आमरण अनशन पर बैठ गये। इस आशा में शायद उनके बाद देश की राजनीति और समाज उनके द्वारा उठाये गये प्रश्नों के महत्व को समझ सके।

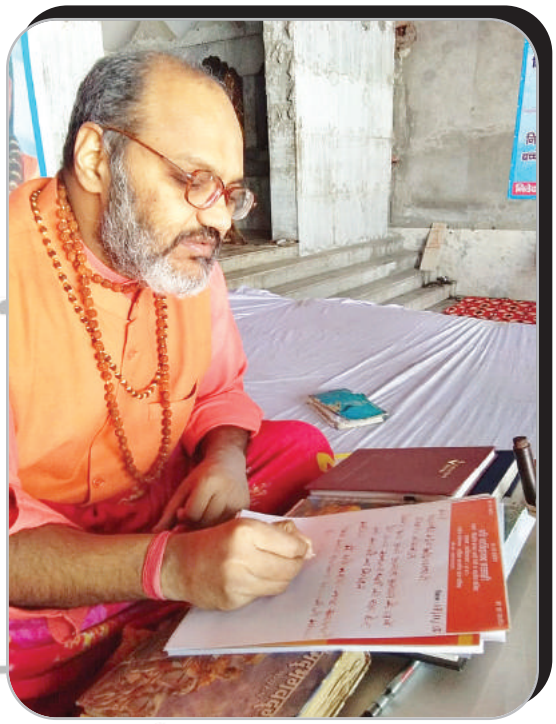

सूर्या बुलेटिन की तरफ से हम यह नहीं कहना जाते कि यति नरसिंहानंद सरस्वती सही हैं या गलत हैं। हम तो यह निर्णय अपने पाठकों पर छोड़ना चाहते हैं। इसलिये हम शिवशक्तिधाम डासना से इस आमरण अनशन को लेकर जो आधिकारिक प्रेस विज्ञप्तियां अभी तक जारी की गईं हैं,उन्हें बिलकुल वैसा ही आपके सामने रख रहे हैं ताकि आप एक बूढ़े संन्यासी की बात समझ सकें।

कायर और धूर्त नेताओं के भरोसे बैठकर अपने बच्चों के साथ विश्वासघात कर रहा है हिन्दू समाज: यति नरसिंहानंद

सौ से ज्यादा संगठनों और संतो के समर्थन के साथ शिवशक्ति धाम डासना में यति नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज ने शुरू किया आमरण अनशन

चीन जैसे कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती जो महाराज ने शिव शक्ति धाम डासना में आमरण अनशन आरम्भ किया।इस अवसर पर सौ से ज्यादा संगठनों के प्रतिनिधियों और सन्यासियों ने यति नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज का समर्थन किया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा की ये तय है कि हिन्दुओ के नेताओ में इतना मनोबल नही है की अब वो कोई ऐसा कार्य कर सके जिससे मुस्लिम समुदाय नाराज हो इसलिये कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून अब कभी नही बनेगा।मैं आमरण अनशन केवल इसीलिये कर रहा हूँ की हिन्दू समाज अपने कायर और धूर्त नेताओ की असलियत को जल्दी से जल्दी समझ ले।अगर हिन्दू समाज अपने धूर्त और कायर नेताओ के भरोसे यूँ ही बैठा रहा तो वह दिन दूर नही जब ये देश इस्लामिक हो जाएगा और मुस्लिम यहाँ की एक एक बेटी को सामूहिक बलात्कार करके मंडी में बेच देगे और बेटो का कत्ल कर देंगे जैसा उन्होंने एक हजार साल भारत मे किया है और अब भी दुनिया के हर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में कर रहे हैं।

उन्होंने कहा की आज सनातन धर्म और भारत राष्ट्र को बचाने का केवल एक मात्र तरीका यही है की यहाँ चीन की तरह एक कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून बनाया जाए परन्तु किसी भी नेता से इसकी कोई आशा करना व्यर्थ है।उन्होंने बताया की उनका अनशन प्रयागराज कुम्भ में प्राणदान के साथ समाप्त होगा।

आज अनशन स्थल पर लाल बाबा, बाबा परमेन्द्र आर्य, यति कृष्णानन्द सरस्वती जी,यति रामस्वरूपानंद सरस्वती जी,यति धर्मस्वरूपानंद सरस्वती जी, स्वामी रुद्रानंद, यति रविंद्रानंद सरस्वती जी, स्वामी सत्यानंद, स्वामी बजरँगानंद, स्वामी धर्मानन्द और स्वामी जय गिरी जी महाराज ने यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज के साथ कुम्भ में प्राणदान का संकल्प लिया।

कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून बनाने के लक्ष्य से आमरण अनशन पर बैठे अखिल भारतीय सन्त परिषद के संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती जी के समर्थन में हिन्दू समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष कमलेश तिवारी जी , सुदर्शन न्यूज के संस्थापक सुरेश चोहाँके जैसी हस्तियां पहुंची साथ मे हजारों कार्यकर्ता व जन समर्थन मिला ।

अंग्रेजों से ज्यादा संवेदनहीन है वर्तमान सरकार: नीरज त्यागी

एक सही मुद्दे पर अनशन करने वाले संत की उपेक्षा निंदनीय : अक्षय त्यागी

देश और धर्म की रक्षा के लिये कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर अनशन करने वाले संत की घोर उपेक्षा करके वर्तमान सरकार और प्रशासन ने आज हिन्दू समाज को हिन्दुओं की असली औकात बताने का कार्य किया है। शिवशक्ति धाम,डासना में अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द को अनशन करते हुए बारहवां दिन है परन्तु शासन और प्रशासन ने एक बार भी उनकी सुध लेने की कोशिश नहीं की है जबकि अंग्रेजी राज में भी अनशनकारियों का दैनिक स्वास्थ्य परीक्षण और उचित सुरक्षा व्यवस्था की जाती थी।

अंग्रेजी राज के समय से हीअनशन व्यवस्था के प्रति विरोध प्रदर्शन का एक अंग रहा है जिसका पूरी दुनिया के लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सम्मान किया जाता है। गाजियाबाद शहर यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज के कई अनशनों का गवाह है परंतु जितनी संवेदनहीनता इस सरकार ने दिखाई है,उतनी कभी देखने को नहीं मिली।ऐसे में यदि यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज को कुछ होता है तो उसके लिये पूर्ण रूप से उत्तर प्रदेश सरकार और गाजियाबाद का प्रशासन जिम्मेदार होंगे।' ये विचार शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान के अध्यक्ष नीरज त्यागी जी ने एक प्रेस वार्ता के माध्यम से रखे।

उन्होंने कहा कि धर्म के लिये लड़ने वाले यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज की पूरे भारतवर्ष विशेषरूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपना एक विशेष स्थान है।सरकार और प्रशासन उन्हें अकेला और कमजोर समझने की भूल न करे।

शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान के महामंत्री श्री अक्षय त्यागी ने कहा कि आज भारतवर्ष का हर जागरूक और देशभक्त नागरिक यहाँ के जनसँख्या विस्फोट को रोकने के लिये कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून बनते देखना चाहता है परन्तु सरकार वोट बैंक की राजनीति में फँसकर जनता की इस मांग को अनदेखा कर रही है।जो संत जनता की इस मांग को सरकार के सामने रख रहा है, उसकी इस तरह से उपेक्षा घोर निंदनीय है जिसे गाजियाबाद के जागरूक नागरिक सहन नही करेंगे और हर लोकतान्त्रिक तरीके से इसका विरोध दर्ज करवाएंगे।

उन्होंने बताया कि शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान के तत्वावधान में यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी के समर्थन और शासन,प्रशासन के रवैये के विरोध में मंगलवार 13 नवम्बर को एक मार्च घण्टाघर से जिला मुख्यालय तक निकाला जाएगा और गाजियाबाद के जिलाधिकारी के माध्यम से एक ज्ञापन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेजा जायेगा। यदि इससे सरकार और प्रशासन नहीँ चेते तो एक प्रचण्ड आंदोलन शुरू किया जायेगा, जिसकी रुपरेखा शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान के कार्यकर्ता सभी हिन्दू संगठनों और कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर बनाएंगे। प्रेस वार्ता में श्री नीरज त्यागी व श्री अक्षय त्यागी मोरटा हिन्दुत्व विचारक श्री विनोद सर्वोदय, मुकेश त्यागी गलैहता, संजय बहेडी, नरेंद्र काकडा, विकास त्यागी भटौला, राजकुमार त्यागी अध्यक्ष, पकंज त्यागी, आदि उपस्थित रहे।

हाकाली डासना मंदिर, गाजियाबाद में जनसंख्या नियंत्रण कानून अतिशीघ्र बनाने की मांग को लेकर आमरण अनशन पर बैठे अखिल भारतीय संत परिषद के संयोजक स्वामी श्री यति नरसिंहानंद जी महाराज को केंद्रीय मंत्री गिरीराज सिंह, राज्यमंत्री अतुल गर्ग, साहिबाबाद विधायक सुनील शर्मा, मुरादनगर विधायक अजीतपाल त्यागी एवं लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर तथा मोदीनगर विधायक मंजू शिवाच सहित कई बड़ी हस्तियों ने अपना समर्थन दिया।

यति नरसिंहानन्द सरस्वती ने अपने रक्त से योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर जनसंख्या नियंत्रण कानून के लिये गुहार लगाई

दिल्ली संत महामण्डल ने एकमत से यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी के आमरण अनशन का समर्थन किया

शिवशक्ति धाम डासना में अपने आमरण अनशन के 17 वें दिन यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने रक्त से योगी आदित्यनाथ जी को पत्र लिखकर उनसे सनातन धर्म को बचाने की प्रार्थना की।

योगी आदित्यनाथ जी को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा कि आज न केवल उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं अपितु संपूर्ण सनातन धर्म के मानने वालों की आशा के साक्षात् सूर्य भी हैं। भारतवर्ष में बढ़ती हुई मुस्लिम जनसँख्या ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि अगले दस वर्ष बाद इस देश का प्रधानमंत्री कोई मुस्लिम होगा और उसके बाद सारी पृथ्वी हार चुका सनातन धर्म समाप्त हो जायेगा। नेताओं से ज्यादा इसके जिम्मेदार हम धर्मगुरु होंगे, जिन्होंने अपने धर्म के प्रति कर्तव्य को पूरा नहीं किया। आप हिन्दुओं की अंतिम आशा हैं, शायद आप कुछ कर सकें। यदि आपने भी कुछ नहीं किया तो सनातन धर्म का विनाश तो तय है ही पर इतिहास और धर्म आपको कभी क्षमा नहीं करेंगे क्योंकि आप और नरेंद्र मोदी दो ऐसे व्यक्ति हो,जो कभी ये नही कह सकेंगे कि हिन्दुओ ने आपका साथ नहीं दिया। मेरा आपसे बहुत विनम्र निवेदन है कि किसी भी तरह से मुस्लिम जनसँख्या के विनाशकारी विस्फोट को रोकने के लिये ठोस कानून बनवाइये। अगर आप ऐसा करेंगे तो सनातन धर्म और संपूर्ण मानवता सदैव आपकी आभारी रहेगी।

यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज को आज एक बड़ी सफलता मिली जब राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के संतो की सबसे बड़ी संस्था दिल्ली संत महामण्डल के संतों ने एकमत से उनके आमरण अनशन का समर्थन किया और उन्हें अनशन स्थल पर आकर समर्थन पत्र दिया।

दिल्ली संत महामण्डल के महामंत्री महामण्डलेश्वर स्वामी नवलकिशोर दास जी महाराज की ओर से जारी समर्थन पत्र को महामण्डलेश्वर स्वामी हरिओम गिरी जी महाराज,महामंडलेश्वर स्वामी कंचन गिरी जी महाराज,श्री महंत अगस्त गिरी जी महाराज,महंत सतीश दास जी महाराज और स्वामी गिरिजानन्द सरस्वती जी महाराज के साथ सैकड़ो संतो ने आकर यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी को दिया। यति जी ने समर्थन के लिये सभी संतों और जागरूक हिन्दुओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनसंख्या नियंत्रण कानून अतिशीघ्र बने महामण्डलेश्वर स्वामी ईश्वरदास जी महाराज

संतों का स्वामी यति नरसिंहानंद के आमरण अनशन को समर्थन, हजारों युवाओं ने संकल्प लिया कि वोट उसी को देंगे जो कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून का समर्थन करेगा

महाकाली डासना मंदिर, गाजियाबाद में जनसंख्या नियंत्रण कानून अतिशीघ्र बनाने की मांग को लेकर आमरण अनशन पर बैठे अखिल भारतीय संत परिषद के संयोजक स्वामी श्री यति नरसिंहानंद जी महाराज के समर्थन में संतों, समाज सेवियों और आम जन ने बाहुल्यता से जुटना शुरू कर दिया है।

अनशन के 18 वें दिन अखिल भारतीय संत समिति, उत्तराखंड के अध्यक्ष महामंडलेश्वर गोभक्त स्वामी श्री ईश्वर दास जी महाराज हरिद्वार से अपने शिष्यों के साथ डासना पधारे। स्वामी श्री ईश्वर दास जी ने कहा कि भारत में कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून से बहुत सारी समस्याओं का तुरंत समाधान हो जाएगा। अनियंत्रित बढ़ती जनसंख्या भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बहुत बड़ी समस्या है, जिस कारण आतंक, व्याभिचार और जिहाद जैसी क्रूरतापूर्ण गतिविधियों से पूरा राष्ट्र ही नहीं समस्त मानवता संकट में है। जनसंख्या नियंत्रण कानून से इनपर लगाम लग पाएगी। राष्ट्र और संस्कृति के उत्थान के लिए अतिशीघ्र इस कानून का बनना अतिआवश्यक है। उन्होंने स्वामी जी के अनशन का समर्थन करते हुए कहा कि स्वामी जी का आमरण अनशन सरकार और आम जनता को इस समस्या के प्रति जागरूक करना है । भारत की संस्कृति के पोषक संतों का यह उद्घोष सरकार को इस समस्या के प्रति आगाह करना है,जिससे सरकार शीघ्र जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाकर राष्ट्र और संस्कृति को समय रहते बचा सके।

अनशन पर बैठे स्वामी जी ने कहा कि मेरे जीवन से ज्यादा महत्वपूर्ण मेरा देश, मेरी भारतीय संस्कृति और ऋषि-कृषि संस्कृति वाले वो भोले भाले भारतीय हैं जो गुलामी और अत्याचार के भीषण दौर से त्रस्त थे ,जो इन चार वर्षों में थोड़ा कुछ कहने भर की हिम्मत जुटा पाएं हैं। लेकिन एक जिहादी कौम की बढ़ती जनसंख्या भारत, भारतीय संस्कृति और भारत की भोलीभाली जनता को नष्ट करने पर उतारू है। यदि इस बढ़ती जनसंख्या को रोका नहीं गया तो भारत को पाकिस्तान जैसे आतंकी देश बनने को कोई नहीं रोक सकता। अतः अतिशीघ्र कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनना बहुत जरुरी है और सरकार से हमारी यही अपेक्षा भी है।

नोएडा से श्रीमहंत अदित्यकृष्ण गिरी जी महाराज,महंत ओम भारती जी महाराज,स्वामी विवेकानन्द जी महाराज, महंत प्रेमानन्द जी महाराज के साथ अनेक सन्यासियों ने आकर यति जी के अनशन को समर्थन दिया।

अन्नपूर्णा के आंचल में वो जो भूखा लेटा है

संदीप वशिष्ठ
(एक कदम गौ रक्षा और मानवता के लिए)

अन्नपूर्णा के आंचल में वो जो भूखा लेटा है,
यति नाम है उस साधू का महादेव का बेटा है।
मातृभूमि की रक्षा के हित जिसके मन में द्वन्द्व मिला,
हमें फख है हमको इस युग यति नरसिंहानंद मिला।
जिसने सम्मुख आये हर हिन्दू को प्रणाम किया,
सदियों याद रखेगा भारत एक संत ने जो काम किया।
भोग विलासी जीवन जीकर कितने ही तो चले गये,
भारत में हम राजनीति से बार-बार ही छले गये।
लेकिन जो अब होने वाला समझो कि वो काफी है,
साधू हठ से सिंहासन को मिली कहाँ पर माफी है।
जनसंख्या कानून बना तो देश तरक्की पर होगा,
भूखा प्यासा इस भारत का ना कोई भी घर होगा।
बीस साल जो मौन रहे तो शायद ही जिन्दे होंगे,
हर घर में ही बसे हुए अल्लाह के बंदे होंगे।
हिन्दुस्तां में हम हिन्दू दमन नहीं होने देंगे,
गौरी गजनी के बेटों का वतन नहीं होने देंगे।
सावरकर ने आजादी पर हमको ये चेताया था,
भारत हिन्दू राष्ट्र बना दो बार-बार चिल्लाया था।
बचे खुचे ये सभी मुसलमां सारे ही भग जायेंगे,
जिस दिन सोये सारे हिन्दू एक साथ जग जायेंगे।
उस दिन जो ये हुई थी गलती फिर से ना दोहराओ जी,
जनसंख्या पर रोक लगे अब कानून बनाओ जी।
सच कहता हूँ सुनो गौर से खेल घिनोने मत खेलो,
सड़कों पर ये शुक्रवार को बिछे बिछोने मत झेलो।
आओ अब 'हुंकार' भरे हम हिन्दुस्तां की रक्षा को,
शहर-शहर में पहुंचा दें हम यति गुरू की शिक्षा को।
भारत माँ के साथ-साथ ही गैया यहाँ सुरक्षित हो,
शस्त्र शास्त्र से हिन्दू का बच्चा-बच्चा शिक्षित हो।
संकल्प लिया है जो साधू ने उसको पूरा करना है,
सिर्फ वतन की रक्षा के हित केवल जीना मरना है।
आओ अब मन को पावन कर लो नहीं वासना को लाओ,
यति गुरू को सम्बल देने चलो डासना को आओ।।

राष्ट्रवाद की परिभाषा का पाठ पढ़ाने वालों को

नितिन चौहान
(कोर कमेटी अध्यक्ष, भगवा हिन्दू राष्ट्र सेना)

राष्ट्रवाद की परिभाषा का पाठ पढ़ाने वालों को
आज चुनौती देता हूँ मैं संसद के रखवालों को

बूढा एक संन्यासी तुमसे मांग रहा है जी
एक देश एक कानून का वादा मांग रहा है जी

दो बच्चों का कानून बना विजय तुम्हारी ही होगी
19 छोड़ो सदा सत्ता में सरकार तुम्हारी ही होगी

लेकिन फिर संन्यासी का धीरज डोल रहा है जी
बेबस चीख-चीख के वो सबसे बोल रहा है जी

दो बच्चों का कानून बस तुमसे मांग रहा है वो
सारी दुनिया से लड़कर बस तुमसे मांग रहा है वो

वो सत्ता के आगे ऐसे घुटने टेक नहीं सकता
अपनी आंखों के आगे हिन्दू कटते देख नहीं सकता

इसी लिए वो आमरण अनशन पर बैठ गया है जी
धर्म बचाने की खातिर वो डट के बैठ गया है जी

अभी नहीं बना कानून फिर तुमसे कभी नहीं होगा
धर्म बचाने फिर कोई नरसिंहा नन्द नहीं होगा

डॉ प्रवीण भाई तोगड़िया जी ने दिया यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज के अनशन को पूर्ण समर्थन

शिवशक्ति धाम डासना में कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर आमरण अनशन कर रहे यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज के आमरण अनशन के 19 वें दिन भारतवर्ष के सबसे बड़े हिंदूवादी नेता डॉ प्रवीण भाई तोगड़िया जी ने शिवशक्ति धाम आकर अपना पूर्ण समर्थन दिया और हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

डॉ तोगड़िया जी ने कहा की जिस तरह से भारतवर्ष में हिन्दुओ का जनसँख्या अनुपात घट रहा है,वह बहुत चिंताजनक है। इसी का इलाज करने के हम सबने अपनी जान पर खेलकर मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाया था परंतु हिन्दू हृदय सम्राट नरेंद्र मोदी जी ने मंदिर छोड़कर मस्जिद को चुन लिया और लव जिहाद से हमारी बेटियो को बचाने की जगह मुस्लिम महिलाओं की वकालत शुरू कर दी।

आज हिंदुत्व का पाठ पढ़ाने वाले आरएसएस ने मुस्लिमो को हिंदुत्व के लिये जरूरी बताना शुरू कर दिया। ये बताने वालों को ये भी जानना चाहिये की जिन देशों में मुस्लिम जनसँख्या बढ़ जाती है वहाँ से हिन्दू मिटा दिया जाता है। जिस लड़ाई को महाराज जी लड़ रहे हैं,हम सब उसका पूर्ण समर्थन करते हैं क्योंकि हम जानते हैं की सनातन धर्म का अस्तित्व बचाने के लिये देश में बढ़ती हुई मुस्लिम जनसँख्या पर अंकुश लगना बहुत जरूरी है।

शिव शक्ति धाम,डासना में यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी ने डॉ तोगड़िया जी का बहुत मन से स्वागत हुए उन्हें वर्तमान युग में हिन्दुओ का सबसे बड़ा धर्म योद्धा बताते हुए कहा की आज तोगड़िया जी संपूर्ण हिन्दुओ की आशा का केंद्र हैं।तोगड़िया जी के सनातन धर्म के संघर्ष में हम सब सदैव उनके साथ है। हम सबका लक्ष्य सनातन धर्म को बचाना है और उसके लिये हम सब कुछ करेंगे। शिवशक्ति धाम डासना की महंत यति माँ चेतनानन्द सरस्वती जी ने शॉल उढा कर डॉ तोगड़िया का स्वागत किया। डॉ तोगड़िया जी का

स्वागत करने वालो में विनोद सर्वोदय,डॉ आर के तोमर,राजेश यादव,पिंकी चौधरी, धीरज नागर, शशि चौहान,प्रमोद बंसल,सतीश गर्ग,अनिल यादव तथा अन्य हिंदूवादी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अगर जबरदस्ती अनशन तुड़वाने की कोशिश की तो चित्तौड़ बनेगा शिवशक्ति धाम डासना-यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज

अगर गुरु के सम्मान के लिये पुलिस की गोली भी खानी पड़ी तो पीछे नही हटेंगे यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज के शिष्य

एक नवम्बर से चीन जैसे कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर शिवशक्ति धाम डासना में अनशन पर बैठे अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने आज अपने शिष्यों और साथियो के माध्यम से अपना एक संदेश जारी किया।

यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज का संदेश एक प्रेस वार्ता के माध्यम से हिन्दू विचारक श्री विनोद सर्वोदय,बाबा परमेन्द्र आर्य, अखिल भारतीय अजगर महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ आर के तोमर,हिन्दू रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष पिंकी उर्फ भूपेंद्र तोमर,हिन्दू स्वाभिमान के महामंत्री श्री अनिल यादव,अखिल भारतीय त्यागी ब्राह्मण सभा के महानगर अध्यक्ष राजकुमार त्यागी,हिन्दू जागरण मंच के अध्यक्ष सतेंद्र त्यागी तथा यति जी के अन्य शिष्यों ने जारी किया।

यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी का बयान निम्नलिखित है

'मैं यति नरसिंहानन्द सरस्वती शिष्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और जगद्जननी माँ जगदम्बा की शपथ लेकर कहता हूँ कि मैं अपने धर्म और अपने लोगों के हित की रक्षा के लिये अन्न का त्याग करके अनशन पर बैठा हुआ हूँ। मेरी केवल यह मांग है कि भारत सरकार देश और सनातन धर्म का विनाश रोकने के लिये चीन के जैसा कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून बनाये। यदि केंद्र सरकार के पास मेरी मांग के सम्बन्ध में कोई आश्वासन है तो वो मुझे बताया जाए।अगर मेरी मांग अनुचित है तो मुझे बताया जाये कि क्यों मेरी मांग गलत है। अगर केंद्र सरकार के पास मुझे बताने के लिये कोई ठोस बात नही है तो मुझे अनशन करने दिया जाये। अगर सरकार ने पुलिस और प्रशासनिक गुंडागर्दी के द्वारा मेरा अनशन तुड़वाने का प्रयास किया तो सरकार समझ ले की मुझे शिवशक्ति धाम डासना से जीवित बाहर ले जाना सरकार के लिये सम्भव नही होगा। पुलिस मुझे केवल लाश के रूप में शिवशक्ति धाम से बाहर ला सकेगी,जीवित नहीं।' प्रेस वार्ता में कारगिल का युद्ध लड़ चुके बाबा परमेन्द्र आर्य ने कहा कि इस समय हमारे गुरु जी यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज हम सबके बच्चों के अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं और उनकी लड़ाई बिलकुल निःस्वार्थ है। हमारे गुरु जी ने अपने जीवन में न कभी सिद्धांतों से समझौता किया है और न ही कभी कोई गलत लड़ाई लड़ी है। यदि एक बूढ़ा संन्यासी हम सबके लिये अपनी जान देने को तैयार है तो हम सबका भी कर्तव्य है कि कुछ भी करके अपने गुरु के सम्मान की रक्षा करें। केंद्र और राज्य सरकार ये अच्छी तरह समझ ले कि अपने गुरु के सम्मान और अपने बच्चों के अस्तित्व की रक्षा के लिये इस बार हम पुलिस की गोली खाने के लिये तैयार बैठे हुए हैं।

भूपेंद्र तोमर उर्फ पिंकी चौधरी ने कहा कि अगर केंद्र और राज्य सरकार को ताकत दिखानी है तो आतंकवादियों और सेना पर पत्थर बरसाने वाले पत्थरबाजो पर दिखाये। एक बूढ़ा संन्यासी जो बिलकुल शांतिपूर्वक तरीके से अपने मंदिर में बैठ कर केवल अनशन कर रहा है,उसको ताकत दिखाने से पहले ताकत दिखाने वालो को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये।

जन-आंदोलन बनने लगा है यति नरसिंहानंद सरस्वती का अनशन

आशित त्यागी

जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने की मांग को लेकर शिवशक्ति धाम डासना मंदिर के महंत एवं संत परिषद के संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती के अनशन को व्यापक जन समर्थन मिलने लगा है। जनता यति के समर्थन में सड़क पर उतरने लगी है, मगर ये अलग बात है कि अभी तक शासन-प्रशासन उदासीन रवैये पर अड़ा हुआ है। लोग कहने लगे हैं कि भाजपा सरकार स्वामी सानंद की ही तरह यति नरसिंहानंद सरस्वती की भी बलि लेने पर तुल गई है। याद हो कि स्वामी सानंद ने अविरल गंगा धारा की मांग पर 111 दिन के अनशन के बाद प्राण त्याग दिए थे। अविरल गंगा धारा की मांग स्वामी सानंद की कोई व्यक्तिगत मांग नहीं थी। बल्कि यह हिन्दुत्व और राष्ट्र से जुड़ी मांग थी, भाजपा सरकार ने स्वामी को मर जाने दिया। यति नरसिंहानंद सरस्वती की जनसंख्या नियंत्रण की मांग भी उनकेकिसी व्यक्तिगत हित के लिए नहीं है। यति भी हिन्दुत्व और राष्ट्र हित में इस कानून की मांग कर रहे हैं। यति की भूख हड़ताल को आज 19 वां दिन है। यति का स्वास्थ्य लगातार बिगड़ रहा है। इसी के साथ उनका समर्थन भी बढ़ रहा है। कई मंदिरों के महंत, कई महामंडलेश्वर, देव सेना, अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा, हिन्दू रक्षा दल, अखिल भारतीय त्यागी ब्राह्मण सभा जैसे अनेक संगठन यति के अनशन के समर्थन में आ चुके हैं। गाजियाबाद में

दो बड़े पैदल मार्च, मोदीनगर के रोरी में जनसभा, लुधियाना में अनशन, दोघट में पैदल मार्च यति के समर्थन में हो चुके हैं। प्रदेश सरकार के मंत्री अतुल गर्ग और मुरादनगर के विधायक अजितपाल त्यागी भी यति के अनशन को समर्थन दे चुके हैं। 24 नवंबर को हरिद्वार में पैदल मार्च का आयोजन है। गाजियाबाद के सैंकड़ों गांवो के हजारो युवा यति के समर्थन में डासना मंदिर पहुँच रहे हैं। शासन प्रशासन यति के आंदोलन को गंभीरता से नहीं ले रहा है, मगर जनता यति की मांग को समझने लगी है। इसीलिए यति का अनशन अब बड़े जन आंदोलन बनने की ओर है। शिवशक्ति धाम डासना के महंत यति नरसिंहानंद सरस्वती का जिक्र किए बिना आजकल कोई आर्टिकल पूरा होना संभव ही नहीं है। जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग पर आमरण अनशन को आज पन्द्रहवां दिन है। यति का स्वास्थ्य लगातार गिर रहा है। जनप्रतिनिधियों को तो यति की कोई चिंता है नहीं, प्रशासन भी इस मामले पर गंभीर नहीं है। स्वामी सांनद जी के बाद लगता है शासन-प्रशासन ने यति की भी बलि लेने की सोच ली है। मगर शासन-प्रशासन को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यति के साथ लगातार लोग जुड़ रहे हैं, यह अनशन धीरे-धीरे जनांदोलन में बदल रहा है। ऐसा न हो कि गाजियाबाद का खुफिया विभाग फेल हो जाए और गाजियाबाद को किसी अप्रिय घटना का सामना करना पड़ जाए। क्योंकि यति के अनशन की उपेक्षा से लोगो में गुस्सा पनपने लगा है

जनसंख्या नियंत्रण कानून से किसका व्यक्तिगत हित होना है, यह अंधभक्त ही बेहतर समझा सकते हैं। संत परिषद के संयोजक, डासना देवी मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद सरस्वती जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग पर 11 दिन से भूख हड़ताल कर रहे हैं। इससे पहले गंगा की अविरल धारा की मांग पर स्वामी ज्ञान स्वरूप सानंद ने 111 दिन अनशन करके अपने प्राण त्याग दिए थे। इसी मार्ग पर अब यति नरसिंहानंद भी हैं। जिस तरह से यति के स्वाथ्य में दिनोंदिन गिरावट आ रही है उससे लगता है कि स्वामी सानंद के बाद एक और बुरी खबर सुनने को मिल सकती है। हैरानी इस बात की है कि हिन्दुत्व, राममंदिर, सबरीवाला मंदिर के दुहाई देने वाली भाजपा मुंह सिले बैठी है। और सीधी बात है जबगंगा आंदोलन के जुड़े संत की मौत का भाजपा सरकार पर कोई फर्क नहीं पड़ा तो यति से ही क्या पड़ेगा। मगर संतों और किसानों की आह बड़ी भारी पड़ेगी। संत और किसान ही भाजपा के अंत की शुरूआत बनेंगे।

मेरी जनता से अपील है कि संत यति नरसिंहानंद सरस्वती की मांग का समर्थन करें, क्योंकि इसी से आपका और आपकी आने वाली पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित हो सकेगा। यति को डायबिटीज और हाई ब्लड प्रेशर जैसी कई बीमारियां पहले से ही हैं। वो शायद इसलिए क्योंकि एक संत के प्राण त्याग देने से किसी को कोई फर्क ही नहीं पड़ता। और फर्क पड़े भी क्यों न तो संत के पीछे बड़ा वोट बैंक खड़ा है, न यति के मर जाने से प्रशासन के सामने कोई समस्या आने वाली है। रही बात सरकार की, जब गंगा को बचाने के लिए एक संत पहले ही देह त्याग चुके और सरकार पर कोई असर नहीं हुआ तो जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर कोई मर जाता है तो सरकार क्यों उसकी परवाह करे। मगर उन लोगों का क्या जो सोशल साइट्स पर खुद को सबसे बड़ा राष्ट्र प्रेमी, सबसे बड़ा राष्ट्र भक्त घोषित करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। राष्ट्र की सबसे बड़ी जरूरत जनसंख्या नियंत्रण कानून है जिसे यति मांग रहे हैं मगर सोशल मीडिया के राष्ट्र भक्त बिल से बाहर नहीं आ पा रहे हैं। गाजियाबाद की जनता देश के भविष्य से बेखबर अपने घरों दफ्तरों में मौज काट रही है। काटे भी क्यों न जब यति नरसिंहानंद सरस्वती जैसे संत उनका भविष्य बचाने के लिए अपने प्राण गंवाने को तैयार बैठे हैं। प्रशासन का उदासीन रव्वैया भी निंदनीय है।

एक भूखे संन्यासी की आवाज पर डासना में उमड़ पड़ा हिन्दू समाज

भाजपा सरकार केवल हिन्दू हित में बात करती आ रही है लेकिन अब समय आ गया है सरकार जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाकर दिखाये : महा मंडलेश्वर यतिन्द्रानन्द गिरि

यति नरसिहानन्द सरस्वती जी के आह्वान पर बुलवाई गई हिन्दू महापंचायत में जगद्गुरु शंकराचार्य अमृतानंद देवतीर्थ जी महाराज,महामंडलेश्वर प्रबोधनंद गिरी जी महाराज, महामण्डलेश्वर भैयादास जी महाराज,राज्यसभा सदस्य अनिल अग्रवाल, विधायक डॉ. मंजू शिवाच के साथ लगभग दस हजार लोगों ने पहुँच कर यति नरसिहानन्द सरस्वती जी की जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग का समर्थन किया। पंचायत में सभी बिरादरियों के गणमान्य लोगों के साथ-साथ आमजन भी पहुंचा। पंचायत में पश्चिम उत्तर प्रदेश के प्रत्येक गांव से लोग पहुंचे। पंचायत में हरियाणा , उत्तराखण्ड , दिल्ली से महिलाओं और पुरुषों की काफी संख्या पंचायत में पहुंची।

पंचायत की अध्यक्षता हिन्दू धर्म विचारक विनोद सर्वादय जी ने की। पंचायत का संचालन अनिल यादव ने किया।

यति नरसिहानन्द सरस्वती जी ने पंचायत में आये हुए सभी वक्ताओं व श्रोताओं से कहा कि मेरा अनशन समाप्त करने का कोई भी प्रयास न करें । जिस दिन देश में चीन की तरह कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बना जायेगा मैं अपना अनशन स्वयं समाप्त कर लुंगा।

बाबा परमेन्द्र आर्य ने कहा कि यदि पुलिस प्रशासन ने स्वामी यति नरसिहानन्द सरस्वती जी का अनशन तुड़वाने का प्रयास किया तो डासना मंदिर चमकौर का मैदान बन जायेगा।

वीरेंद्र गुर्जर ने सहारनपुर में बहुत बड़ा आंदोलन स्वामी जी यति नरसिहानन्द सरस्वती जी के समर्थन में खड़ा करने का ऐलान किया।

पंचायत को समर्थन देने के लिए शेखर त्यागी तलैहटा अपने साथियों के साथ पहुंचे और शेखर त्यागी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि विश्व की आबादी की 18 प्रतिशत आबादी भारत में रहती हैं और हमारे पास केवल विश्व की 2.5

प्रतिशत जमीन है। यदि जनसंख्या इसी तरह देश में बढ़ती रही तो देश की पूरी व्यवस्था खराब हो जाएगी और भारत की स्थिति भी सीरिया , सोमालिया जैसी हो जायेगी। आज के युवा प्रधानमंत्री जी से केवल जनसंख्या नियंत्रण कानून बनवाने की प्रार्थना करते हैं।

चौधरी ममता आर्या ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज देश के संसाधन दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं और देश में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। ये बढ़ती हुई जनसंख्या एक दिन देश में गृह युद्ध का कारण बन सकती है। देश में जो प्रदूषण की समस्या है। उसके पीछे बढ़ती हुई जनसंख्या ही है। यदि देश को प्रदूषण से बचाना है तो बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण करना होगा।

चौधरी अंजली आर्या ने अपने सम्बोधन में कहा कि भारत की आयरन लेडी पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने देश की बढ़ती हुई जनसंख्या के दुष्प्रभाव को बहुत पहले ही समझ लिया था । इसलिए उन्होंने ने फैमिली प्लानिंग शुरू की थी। लेकिन विपक्ष ने फैमिली प्लानिंग स्कीम का विरोध शुरू कर दिया । जिस कारण देश में फैमिली प्लानिंग स्कीम ठीक से लागू नहीं हो पाई। यदि उस समय विपक्ष गम्भीर होता तो तभी जनसंख्या नियंत्रण कानून बन जाता ।

वीरांगना संजू चौधरी ने कहा कि भाजपा सरकार साधु-संतों के आशीर्वाद से बनी है । लेकिन अब सरकार साधु-संतों की कोई बात नहीं सुन रही है । जिस कारण साधुओं, संन्यासियों का भाजपा से मोहभंग हो रहा है । जो व्यक्ति दो से अधिक बच्चे पैदा करे उन्हें दस साल की सजा देने का कानून बनाना चाहिए।। यदि सरकार ने जनसंख्या नियंत्रण कानून चुनाव से पहले नहीं बनाया तो हिन्दू समाज चुनाव में नोटा का बटन दबाकर अपनी नाराजगी जाहिर करेगा। प्रबोधानन्द सरस्वती जी ने कहा कि मोदी सरकार हम सभी साधु-संतों के आशीर्वाद से बनी है। अब सभी संन्यासी आप से जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग कर रहे हैं। राम मंदिर निर्माण से पहले मोदी जी जनसंख्या नियंत्रण कानून की देश को जरूरत है । इसलिए जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाकर हिन्दुओं पर उपकार करने की कृपा करें।

यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज को कमजोर और अकेला समझने की गलती न करे मोदी सरकार: यति माँ चेतनानंद सरस्वती

हम मोदी के घर उनकी माँ के सामने जाकर अनशन करेंगे : राजबाला तोमर

यति माँ चेतनानंद सरस्वती
(श्रीमहंत, सिद्धपीठ प्रचण्ड चण्डी देवी व महादेव मंदिर, डासना)

शिवशक्ति धाम डासना में 30 दिन से कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर आमरण अनशन कर रहे यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज के समर्थन में जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार की महिलाओं ने गाजियाबाद जिला मुख्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ आक्रोश प्रदर्शित किया। महिलाओ ने अपने रक्त से पत्र लिखकर भी नरेंद्र मोदी को ज्ञापन के रूप में जिलाधिकारी द्वारा भेजा।

महिलाओ के रक्त से लिखे गए ज्ञापन में मोदी सरकार को प्रचण्ड नारी आंदोलन की चेतावनी दी गयी और उन्हें ये बताया गया की यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज को अकेला समझने की गलती न करे मोदी सरकार।आज यति नरसिंहानन्द सरस्वती कुछ देश द्रोही मुस्लिम परस्त नेताओ को छोड़कर बाकी 100 करोड़ हिन्दुओ की आवाज हैं। उनकी आवाज यदि नहीं सुनी गयी तो जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार की महिलाएँ गुजरात जाकर नरेंद्र मोदी के घर जाकर उनकी माँ के सामने अनशन करेंगी और उनसे अपने बच्चों की जान की भीख मांगेगी।

ज्ञापन देते समय शिवशक्ति धाम डासना की महंत यति माँ चेतनानन्द सरस्वती जी ने कहा कि हिन्दू के लिये गूंगी बहरी हो चुकी सरकार को जगाने के लिये जो कुछ भी करना पड़ेगा,हम वो सब करने को तैयार हैं। हम अपना दर्द मोदी जी की माँ को बतायेगे और उनसे कहेंगे की वो अपने बेटे से

कहें कि जिन सौ करोड़ हिन्दुओ ने उन्हें इतना मान, सम्मान और गौरव दिया हैं, उन्हें अपने वोट बैंक की राजनीति के लिये इस तरह धोखा न दें वरना इतिहास उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा।

चौधरी अंजली आर्या ने कहा यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी की मांग देश हित में है। सभी हिन्दू महिलाएं चीन की तरह भारत में भी कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनवाने के पक्ष में हैं। यदि शीतकालीन सत्र के प्रथम दिन जनसंख्या नियंत्रण कानून को लेकर चर्चा नही हुई तो भारतीय जनता पार्टी को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। जो सरकार जी एस टी,एससी/एसटी एक्ट, तीन तलाक पर मजबूत फैसले ले सकती है, वो क्यों देश के भविष्य के लिये जनसँख्या नियंत्रण कानून नही बना रही है,ये हमारी समझ से परे है।प्रदर्शन करने वालो में जयवंती देवी, ओमकारी , सरोज देवी, माया देवी, सुनिता , बबली , विमला , राजबाला कौशिक तथा अन्य महिलायें शामिल थीं।

'किसी के नाम से मशहूर होकर गाँव चलता है'

संदीप वशिष्ठ

एक कदम गौ रक्षा और मानवता के लिए

किसी के नाम से मशहूर होकर गाँव चलता है'

तुम्हारी शख्सियत से ये सबक लेंगी नई नस्लें,
वही मंजिल पे पहुंचा है जो अपने पाँव चलता है।
डुबो देता है कोई नाम तक भी खानदानों के,
किसी के नाम से मशहूर होकर गाँव चलता है।।

ना जाने कितने संत/कवि/शायर/राजनीतिज्ञ मासूम साहब की इन पंक्तियों को कोट करते हैं।

राष्ट्र जागरण के पुरोधा कवि/शायर मासूम गाजियाबादी जी से एक आम आदमी की संवेदना को इतनी बारीकी से उकेरने वाली वह कलम सचमुच किसी परिचय की मोहताज नहीं है, जिसे लोग मासूम गाजियाबादी के नाम से जानते हैं। शायरी और गजल की दुनिया में मासूम साहब का जवाब नहीं, लगता है कि कुदरत ने भी रहमत एक सही व्यक्ति को देखकर ही बखेरी है।

मासूम गाजियाबादी जी का नाम मैंने बचपन से ही घर पर आने वाले विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में पढ़ा था और लेकिन श्री मासूम साहब से मुलाकात 16 फरवरी 2014 को प्रखर साहित्यकार मंच के स्थापना दिवस पर हुई जिसमें उन्हें वरिष्ठ कवि सम्मान से नवाजा गया तो उन्होंने उस सम्मान के लिए कुछ ऐसा पढ़ा

''मेरी औकात से बढ़कर न शोहरत दे मेरे मालिक,
जरूरत से जियादा रोशनी अंधा बनाती है।''

वह अपने निर्माण में जिन लोगों ने सहयोग दिया है, उनका धन्यवाद करना और उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना भी नहीं भूले। इसलिए बड़ी सहजता से कह दिया-

''दरो दीवार तक यूं ही नहीं पहुंचा मेरे हमदम,
मैं वो छप्पर हूं जिसको सबने मिल जुलकर उठाया है।''

मासूम साहब की अभी तक चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। जिनके नाम हैं-

'देखा कभी आपने',
'अहसास के पर,
'तुम्ही से तो गिला है'
'बोझ रोशनी का'

अपने ही विचारों के संसार में मस्त रहने वाले गंभीर प्रकृति के धनी श्री मासूम जी जनपद गौतमबुद्ध नगर के ग्राम चिपियाना बुजुर्ग के मूल निवासी हैं।। जनपद गौतमबुद्ध नगर के निर्माण से पूर्व यह गांव जनपद गाजियाबाद में आया करता था, इसलिए मासूम साहब के नाम के पीछे 'गाजियाबादी' लग गया।

वैसे उनका अपना बचपन का माता-पिता के द्वारा दिया गया नाम नरेन्द्र है। वह अपनी कविता के विषय में बताते हैं कि उन्हें कविता का शौक बचपन से ही था और जब मैं कक्षा पांच में पढ़ता था, तब गाजियाबाद के घंटाघर पर जाकर महेन्द्र पाल सिंह नामक व्यक्ति से उर्दू शेरो-शायरी की पुस्तक खरीदता था। उन्हें पढ़ता था और उनके कठिन शब्दों के अर्थ कभी शब्दकोश से तो कभी किसी शेर के नीचे लिखी तालिका में खोजता, या किसी जानकार व्यक्ति से उसका अर्थ पूछता। वह कहते

हैं कि मुझे उर्दू लिपि का ज्ञान तो नहीं था परंतु उर्दू भाषा का ज्ञान अवश्य होने लगा और मेरी जबान में उर्दू छाने लगी। अपनी यात्रा के शुरुआती दिनों की ओर जाते हुए मासूम साहब फरमाते हैं कि तब मेरी कवितायें 'मुक्तिद्वीप' नामक एक समाचार पत्र में छपा करती थीं। जिन्हें कवियों/शायरों ने पढ़कर अपनी सकारात्मक प्रोत्साहन से भरी हुई प्रतिक्रियाएं दीं।

एक जनवरी 1953 को जन्मे 65 वर्षीय मासूम जी के पिता का नाम श्री बनवारीलाल तथा माता का नाम श्रीमती परमेश्वरी देवी था। वह बताते हैं कि अपने पिता की हम केवल दो ही संतानें हैं, मेरा एक अन्य भाई भी है। अपने मासूम नाम के दिये जाने का रहस्य बताते हुए वह कहते हैं कि लोकगीतों के सुप्रसिद्ध गायक पीरू जी के द्वारा उन्हें यह नाम दिया गया।

...और सचमुच मासूम साहब ने हर व्यक्ति को निर्दोष (मासूम) बनाने के लिए अपनी कविता को जो बुलंदियां दीं, उन्हें देखकर लगता है कि उन्होंने यथानाम तथागुण वाली कहावत को चरितार्थ करने का सार्थक और गंभीर प्रयास किया है। वह कहते हैं-

''उसे किसने इजाजत दी गुलों से बात करने की।
सलीका तक नहीं जिसको चमन में पांव रखने का।''

मतलब साफ है कि गुलों से यदि बात करना चाहते हैं, सपने यदि ऊंचे लेना चाहते हो तो इस दुनिया रूपी चमन में और कुदरत के इस विशाल बगीचे में पांव रखना पहले सीखो।

शायद इसीलिए मासूम जैसा कवि दिलों को बदलने की ताकत केवल कविता में देखता है। जिसके माध्यम से बात दिल से निकलकर दिल में ही जाती है, और आदमी को गहराई से सोचने के लिए प्रेरित और बाध्य करती है। उनकी ये पंक्तियां बहुत कुछ कहती हैं-

''वतन क्या हम वतन क्या है, ये लगता है सियासत से,
कि जैसे कातिलों की परवरिश का काम सौंपा था।''

मासूम साहब कहते हैं कि वर्तमान में राजनीति जिस दिशा में जा रही है, वह चिंता का विषय है। राजनीति को वह सबसे बड़ा धर्म मानते हैं और यदि इस धर्म में गिरावट आ गयी तो सारा सामाजिक परिवेश ही दूषित-प्रदूषित हो जाएगा। इसलिए उनका मानना है कि राजनीति में व्यवस्था परिवर्तन होना चाहिए। ऊपरी परिवर्तन को वह अपर्याप्त समझते हैं, इसलिए उनका कहना है-

कभी सय्याद के डर से कभी मौसम से घबराकर,
परिन्दों ने नशेमन और कभी बागात बदले हैं।
गुलों की खैर चाहो तो निजामे गुलसितां बदलो,
निगेहबां के बदलने से कहीं हालात बदले हैं?

मासूम जी जैसे कवि/शायर वक्त की धरोहर होते हैं, समय को ये निरपेक्ष भाव से देखते हैं और अपना काम करते जाते हैं, जबकि वक्त इनकी वकत करता है और इनके प्रति सापेक्ष भाव प्रदर्शन करता है। वह ऐसे व्यक्तियों को अपने कैमरे की जद में और हद में कैद करके चलता है और इन्हें अपनी एक बेशकीमती धरोहर समझकर इतिहास के हवाले कर देता है।

कहीं महिलाओं के प्रति अपराध पर गम्भीर लेखन करते हुए राजनीतिज्ञों को इशारों में करते हुए दिल्ली के निर्भया कांड पर उनकी पंक्तियाँ सभी कवि सम्मेलन और मुशायरों में संचालकों के माध्यम

से फैलीं।
बच्चियाँ तक भी नहीं महफूज ये मुंसिफ बता,
कह उठी दिल्ली तो और किसकी गवाही चाहिए।
ऐ सदी इक्कीसवीं तू अब भी शर्मिन्दा नहीं,
और चेहरे को तेरे कितनी स्याही चाहिए।।

बाल मजदूरी का कितने सही ढंग से विरोध किया। साथ ही समाज को संदेश दिया। देखे इस शेर में...

खुशी से झूमती बारात को छोड़ो उन्हें देखो,
जिनको नाच-गाने का बहाना तक नहीं मिलता।
बारातों में जो अक्सर रोशनी का बोझ ढोते हैं,
उन्हीं बच्चों को बारातों में खाना तक नहीं मिलता।

साथ ही कभी-कभी समर्थ समाज जिसे पता नहीं कि अभाव क्या होता है जिस समाज को पसीना या श्रम का मोल तक नहीं मालूम उन पर भी सधे शब्दों से दर्पण दिखाना केवल मासूम जी जैसा कलमकार कर सकता है

बहारों में पले हो दर्द का मौसम नहीं देखा,
अभी जुल्फों से खेले हो किसी का गम नहीं देखा।

ये सादगी भरे लिबास को ओढ़े चलने वाली खूबसूरत जिंदगियां ही इतिहास के पन्नों पर जगह पाती हैं और जो लोग इनकी कीमत नहीं समझ पाये होते हैं, वो इतिहास के पन्नों पर इनके नामों को देखकर इतिहास पर खीजते हैं और अपने कर्म पर पछताते हैं ।

मासूम साहब इस आदर्श व्यवस्था को और तथागत जैसी गंभीरता को भारतीय धर्म और संस्कृति का एक अनमोल हीरा मानते हैं और इसी को समाज के हर व्यक्ति द्वारा स्वीकार कर तदानुसार अपने जीवन व्यवहार को सुधारने और संवारने की अपेक्षा करते हुए कहते हैं कि भारतीय संस्कृति महान है, और उसे हर व्यक्ति के दिल में कविता के माध्यम से उतारने की आज आवश्यकता है। इसलिए कविता में हास-परिहास और श्रंगार के वह एक सीमा तक तो पक्षधर हैं, पर हर समय और हर स्थिति-परिस्थिति में कविता को केवल इन्हीं नकारात्मक बिंदुओं के इर्द-गिर्द घुमाते रहने को समाज के लिए खतरे की घंटी मानते हैं। समाज में अश्लीलता परोसने वालों को वह आड़े हाथों लेते हुए कहते हैं-

''ये कैसे लोग हैं खुद को बचा लेने की कोशिश में,
दुपट्टा अपनी ही बेटी के सिर से खींच लेते हैं।''

मासूम जी मर्यादित जीवन शैली को ही व्यक्ति का धर्म मानते हैं और अमर्यादित जीवन शैली को आज के समाज के कोलाहल का महत्वपूर्ण कारण मानते हैं, समाज के अमर्यादित आचरण पर उनकी दमदार लेखनी क्या व्यंग्य करती है-

''ये क्या आंखों पे तुम अपनी अभी से हाथ रख बैठे।
हमारे नंगेपन की इंतिहां को कौन देखेगा?''

अतः जो लोग मर्यादा को तार-तार करने में मर्यादा की हदों को पार कर रहे हैं, उन्हें मासूम साहब पसंद नही करते। उनकी कविता प्रेरणा के लिए बनती है, और उसी पर खत्म होती है। मासूम जी कहते हैं कि वह संत मुरारी बापू के मुरीद हैं। बापू जी अपने प्रवचनों में मेरे शेरों को यदा-कदा बोल देते हैं। वह कहते हैं कि लक्ष्य निर्धारित करो और आगे बढ़ो मंजिल अवश्य मिलेगी। वह जोर देकर कहते हैं कि मंजिल मिलती ही उनको है जो मंजिल की ओर बढ़ते हैं, इसलिए कदम-कदम बढ़ते रहो, मंजिल अपने दर पर तुम्हारा इस्तकबाल खुद करेगी।

मासूम साहब ने कुछ अन्य समकालीन शायरों की तरह अपने कुर्ते पर ज्यादा सख्त कलफ नहीं चढ़ाया। उनसे कोई भी नन्हा कलमकार मशविरा कर सकता है और वो अन्य वरिष्ठ शायरों और कवियों को नये कलमकारों को हौंसला देने के लिए तत्पर रहने को बोलते हैं कुछ इस तरह,

ये नगमागर परिन्दे हैं जुबां मत काटिये इनकी,
जुबानों से इन्हीं की आपके किस्से बयां होंगे।
अभी पिछली कतारों के मुसाफिर ही सही लेकिन,
एक दिन वो भी आयेगा ये मीर-ए-कारवां होंगे।।

अंत में मेरी चार पंक्तियाँ जो मेरी कलम से सर्वप्रथम लिखी गई और जिसमें मासूम जी ने सुधार किया जब मैं, मासूम साहब, कवि/मंच संचालक अमित शर्मा कवि चेतन नितिन खरे आदरणीय गौ भक्त नयाल सनातनी जी के साथ एक कार्यक्रम के बाद हरिद्वार से गाजियाबाद लौट रहे थे तो उन्हें मैंने एक अपना मुक्तक सुनाया जिसमें उन्होंने सनम के स्थान पर मिलन का प्रयोग करने के लिए कहा।

चमन की बात करते हो अमन की बात कर लो तुम,
किसी बिछुड़े मुसाफिर से मिलन की बात कर लो तुम।
जमीं पर आज बैठे हैं दिखा देंगे तुम्हें एक दिन,
हमीं से है वतन जिन्दा वतन की बात कर लो तुम।।

मासूम जी के बारे में एक पंक्ति में कुछ कहना हो तो वो देशी गाय का मानवीय रूपांतरण हैं जिसमे शायरी का अमृत घट बिराजमान है।

'दोहे'

नगर डासना में बसी ले काली का रूप,
जिसके सम्मुख झुक गये बड़े–बड़े सुर भूप।(1)
मांगा जिसने प्रेम से बस दर्शन कर मात्र,
वो मानव ही बन गया माँ का कृपा पात्र।(2)
कवियों की वाणी रही गुंजित आंगन द्वार,
जिसके आंचल में लिया नरसिंह ने अवतार।(3)
सत्य सरोवर में खिले जहाँ कमल के फूल,
जिसके आंगन में उड़ी राष्ट्र प्रेम की धूल।(4)
मंदिर पूरे देश में ऐसा एक विशेष,
पूरा वर्जित हैं जहाँ मुस्लिम का प्रवेश।(5)
शिव शक्ति का है यहाँ ऐसा पावन धाम,
जिसके दर्शन थे किये कभी यहाँ घनश्याम।(6)
श्रद्धा से जो भी गया माँ काली के धाम,
उसके तो बस बन गये सारे बिगड़े काम।(7)

– :संदीप वशिष्ठ

पड़ी जरूरत देश को जब-जब राष्ट्रभक्त कुछ बन्दों की

दुष्यंत शुक्ला (सिंदनादी)

पड़ी जरूरत देश को जब–जब राष्ट्रभक्त कुछ बन्दों की।
उत्पत्ति हुई है भारत में तब–तब नरसिंहा नन्दों की ।

जनसंख्या अनियन्त्रित न हो नियम बने और पालन हो ।
धरती, अंबर, हवा और पानी सबको समुचित साधन हो।

आबादी है असन्तुलित प्रत्यक्ष असर है जीवन पर।
एक संत बैठा है चौदह दिन से भूखा अनशन पर ।

छद्म मीडिया नेक कर्म की खबरें नहीं दिखाता है ।
रणवीर–दीपिका के विवाह का टेलीकास्ट चलाता है ।

ब्रेकिंग न्यूजें बन जाती एंकर छटपटा रहा होता ।
काश कोई मौलाना अनशन आंसू बहा रहा होता ।

देश समूचा जान गया कि कमलनाथ जी क्या बोले ।
मारीशस में डिजिटल भारत पर मोदी जी क्या बोले ।

हिन्दू संत के अनशन पर मुंह दही जमाये बैठा है ।
महत्वपूर्ण यह खबर मीडिया वॉट लगाये बैठा है।

न्यूज चैनलों की यारों यह यार भरी मक्कारी है ।
यही तो लोकतन्त्र के चौथे खम्भे की गद्दारी है ।

हे वन्दनीय नरसिंहानन्द जी व्रत यह आपने ठाना है ।
हमने कुछ मित्रों से सांय खबर आज यह जाना है ।

तंग पजामें इसी तरह यदि देश मे बढ़ते जायेंगे ।
पक्का है फिर तिलक कलावा यहॉ नही रह पायेंगे ।

हिन्दू नामोनिशॉ का तब इतिहास ही पाठ पढ़ायेगा ।
वोट भिखारी लोकतन्त्र भी जीवित न रह पायेगा ।

मूँछहीन मुखड़े के नीचे दाढ़ी शेष घनी होगी ।
चन्दन पर होगा बबूल और नीचे नागफनी होगी ।

भयावा चच्चों–बच्चों से भारत भू पट जायेगी ।
हिन्दू विहीन होगा समाज शिखा शीश कट जायेगी।

हम दो और हमारे दो हम स्वंय नष्ट हो जायेंगे ।
दस–दस पैदा करके फिर से वह नवाब बन जायेंगे ।

हिन्दू हित की बात जो करते वह चुनाव में ऐंठे हैं ।
वोट पुजारी आज कान में रुई लगा कर बैठे हैं ।

अगर देश में इसी तरह जनसंख्या बढ़ती जायेगी ।
वह दिन दूर नही है अपनी भारत मॉ पछतायेगी ।

आबादी कानून बने अब निश्चित हो यह तय हो तय ।
खुला समर्थन सरस्वती नरसिंहानन्द की जय हो जय ।

न्यायपालिका ने जिन 16 PAC जवानों को सुनाई उम्रकैद

उन पर आरोप हैं दंगों में मुसलमानों को मारने का, तबाह हुए 16 परिवार की मदद करें हिन्दू संगठन

विक्रांत आर्य (गांव सैदपुर)

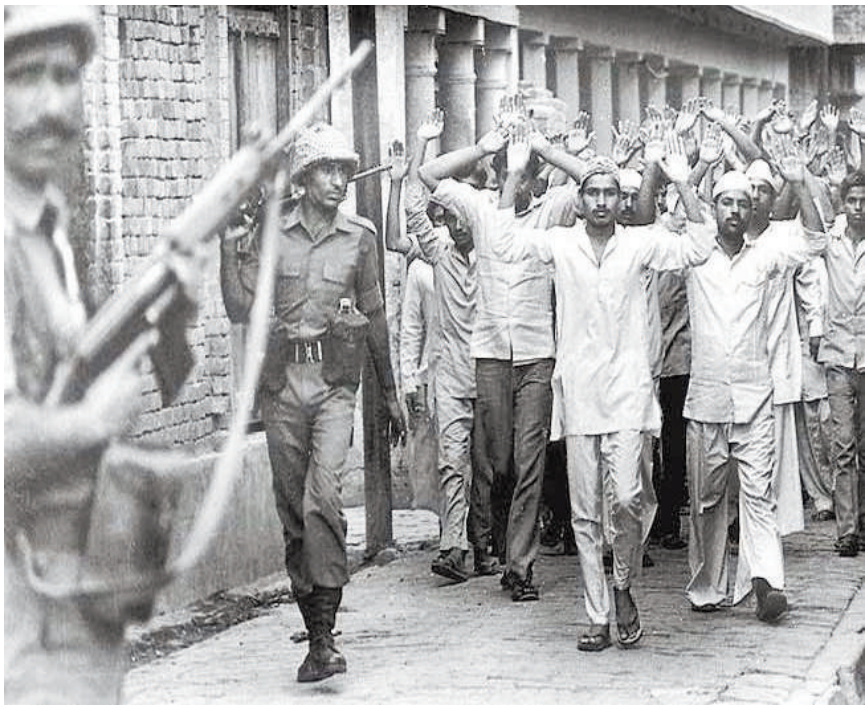

वो बेहद विकट समय था ,सन् 1987 में जब उन सभी जवानों की ड्यूटी हाशिमपुरा लगी थी, जो इलाका मुस्लिम बहुल माना जाता था ।वहां रह रहा हिन्दू समुदाय बेहद डरा और सहमा था । उन्हें कभी भी अपनी जान जाने का खतरा महसूस हो रहा था। हर कदम की आहट उन्हें मौत की आहट लग रही थी और वो किसी देवदूत के आ कर उन्हें बचा लेने मात्र की आशा कर रहे थे।

वो देवदूत उन्हें दिखे थे PAC वाले जवानों के रूप में जब उनके धमक ने तोड़ डाले कट्टरपंथियों और दंगाइयों के मंसूबे और हर कोई शांतिप्रिय सीना उठा कर चलने लगा , ये सोचकर कि अब PAC वाले आ चुके हैं।वृद्धों ने उन्हें आशीर्वाद दिया ।हर जुबान पर बस ये ही शब्द थे कि भैया आप लोग हमारे लिए किसी देवता से कम नही हो आप न आते तो हम जिंदा न बचते पूरे प्रदेश ही नही बल्कि पूरे भारत में ।उस समय पुलिस की PAC विंग की जय जयकार होने लगी..लेकिन ठीक उसी समय रची जाने लगी थी साजिश और खटकने लगी थी PAC जवानों की वीरता।

फिर अचानक से गर्म हुई राजनीति..मुद्दा ये नही बना कि वर्दी वाले इन फरिश्तों ने किन-किन को और कितनों को बचाया बल्कि मुद्दा ये बनाया गया कि इन्होंने कितनों को मारा । इन वर्दी वालों पर कितनी गोलियां चली, कितने पत्थर चले, कितने बलिदान हुए ,इसकी गिनती पिछले 30 सालों में एक बार भी नही हुई लेकिन पिछले 30 सालों में पूरी कोशिश इस बात की कर डाली गई कि कैसे इन रक्षकों को हत्यारा साबित किया जाए।

अगर कोई ये समझना और जानना चाहता है कि असल जिंदगी में फिल्मी दुनिया में दिखने वाले सिंघम क्यों नहीं दिखते तो मेरठ के हाशिमपुरा मामले में सजा पाए जवानों के जीवन में चल रही अग्निपरीक्षा से देख और समझ सकता है।राजनीति में कुछ लोग अपने राजनैतिक जीवन के 10 या 15 साल के संघर्षों के ढिंढोरा भले पीटते हो लेकिन PAC के इन जवानों ने 30 साल से ज्यादा समय तक वो अग्निपरीक्षा दी है, जो शायद सुन कर भी रोंगटे खड़े कर दे। आखिरकार 16 जवानों को हाईकोर्ट ने उम्रकैद की सजा दी ।न्यायाधीश महोदय 30 साल पुरानी उस घटना के होने से सहमत पाए

गए जिसका शायद ही कोई वीडियो रिकार्डिंग आदि मौजूद हो।

यहां राजनीति के एक और पहलू को ध्यान में रखने की जरूरत है । उत्तर प्रदेश की बीच में आई सरकारों में से एकाध ने कचेहरियो में हुए बम ब्लास्ट के दुर्दांत आतंकियों के केस वापस लेने की मुहिम छेड़ी थी लेकिन विगत 30 सालों में न जाने कितनी सरकारों के आने या जाने के बाद भी PAC के इन जवानों के मुकदमे वापस लेने की मुहिम तो दूर, इन्हें कितनी जल्दी सजा दिलाई जाय इसकी मुहिम जारी रही और आखिरकार वो मुहिम अंजाम तक पहुंच ही गयी ।

किसी ने अपनी जमीन बेच कर कानूनी लड़ाई लड़ी थी तो किसी ने अपनी पत्नी के गहने गिरवीं रख कर, किसी ने अपने बच्चों की फीस रोक कर वो सामान्य सिपाही थे और 1987 में वेतन भी इतना मिलता था। समाज की रक्षा और दंगाइयो से निबटने के लिए उस समय जान हथेली पर रख कर कूदे 16 जवान अब अपने जीवन के अंतिम सांस तक जेल काटेंगे। यदि आपको कश्मीर में लड़ रहे सेना के

यकीनन 30 साल से तिल-तिल कर के मर रहे इन जवानों के परिवार वालों के हालात आपको रुला देंगे। PAC के जवानों के मनोबल पर ये घटना क्या असर डालेगी इस पर मंथन माननीयों को गम्भीरता से जरूर करना चाहिए ।

जवानों के हालात बहुत विषम लगते हैं तो कृपया PAC के जवानों के हालात पर भी एक बार गौर कीजिए। यकीनन 30 साल से तिल-तिल कर के मर रहे इन जवानों के परिवार वालों के हालात आपको रुला देंगे। PAC के जवानों के मनोबल पर ये घटना क्या असर डालेगी इस पर मंथन माननीयों को गम्भीरता से जरूर करना चाहिए ।

यहां ध्यान रखने वाली बात ये है कि अब सजा पाए इन 16 जवानों के परिवार या इनका कोई भी नहीं है न इनके अधिकारी, न इनके शासक और न ही वो लोग जिनको दंगों से उस समय इन्होंने बचाया था। अब ये सभी 16 लोग आज सदा-सदा के लिए जेल चले गए हैं । दंगा, आतंक, अपराध से लड़ती एक जिंदगी का एक बेहद दर्दनाक अंत जिस दर्द का एहसास शायद ही इनके परिवार वालों और ऐसी आफत झेल रहे वर्दी वालों के अलावा किसी और को हो लेकिन सबसे ज्यादा दुख की बात यहां है कि जिस समय इन जवानों को सजा सुनाई गई है उस समय केन्द्र व प्रदेश दोनों जगह हिंदूवादियों की सरकार है । ये बात सभी नागरिक जानते हैं कि सरकार की ताकत बहुत अधिक होती है कुछ भी कर सकती हैं । सरकार बनने से पहले नेता कुछ बोलते हैं और सरकार बनाने पर कुछ और ही करते हैं ।

देश कुछ हिन्दू संगठन प्रति वर्ष धर्म रक्षा निधि व गुरु दक्षिणा के नाम पर बहुत बड़ी धनराशि इकट्ठा करते हैं यदि उस राशि का कुछ हिस्सा PAC के परिवार वालों को दिया जाए तो ये उस धनराशि का सबसे बड़ा सदुपयोग होगा।

क्या ...देवबंद मदरसा आतंकवाद का अड्डा है ?

हरिनारायण सारस्वत

महासचिव इन्द्रप्रस्थ सारस्वत ब्राह्मण समाज पंजी. दिल्ली

यह शीर्षक पढ़ कर कट्टरपंथी मुल्ला आक्रोशित अवश्य होंगे पर 'देवबंद मदरसा है आतंकवाद का अड्डा' शीर्षक से सच्चाई लिखने वाले कोई और नहीं प्रसिद्ध इस्लामिक विद्वान व लेखक श्री मुजफ्फर हुसैन हैं। इनके उपरोक्त शीर्षक से लिखे तथ्यपरक लेख को दिल्ली से प्रकाशित होने वाले हिंदी साप्ताहिक 'पाञ्चजन्य' ने 15 फरवरी 2009 को प्रकाशित किया था।

आज इसकी चर्चा का अवसर क्यों आया यह भी जानना आवश्यक है। अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन के 'यू एस कैपिटोल' में दिल्ली के थिंक टैंक कहे जाने वाली संस्था 'विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन' द्वारा 2 मार्च को आयोजित एक कार्यक्रम में वहां के एक प्रभावशाली सांसद एड रॉयस ने अपने स्पष्ट विचार व्यक्त किये। उन्होंने जिहाद को नियंत्रित करने के लिये पाकिस्तान को परामर्श देते हुए कहा कि ' पाकिस्तान को अपने यहां चल रहे देवबंदी मदरसों को बंद करने के लिए गंभीरता से सोचना चाहिये । उनके अनुसार ऐसे लगभग 600 देवबंदी मदरसे पाकिस्तान में हैं ,जो लोगों को भ्रमित करते हैं। जिससे ये लोग जिहाद के पक्ष में दलीलें देते रहते हैं या जिहाद करते हैं'। अमेरिकी सांसद ने पाकिस्तान को समझाते हुए यह भी कहा कि 'अगर वह आतंकवादी आक्रमणों के दोषियों को न्याय के कटघरे में किसी कारण वश नहीं लाना चाहता तो उन्हें अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ' हेग ' को सौप देना चाहिये, जिससे वहां उनके

विरुद्ध उचित कार्यवाही हो सके और सभी को न्याय मिले'। सांसद महोदय ने अपने कथन में लश्कर-ए-तोइबा जैसे आतंकी संगठनों पर कार्यवाही करने के साथ-साथ ऐसे परिसरों को भी बंद करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस प्रकार अमेरिकी सांसद ने अपनी प्रभावशाली शैली में मानवतावादी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिये देवबन्दी मदरसों की विचारधारा को प्रतिबंधित करने का एक सार्थक सुझाव देने का प्रयास किया है।

इसी देवबंद विचारधारा के संदर्भ में मुम्बई में 26 नवम्बर 2008 को हुए आतंकी हमलों के बाद अपने एक लेख में श्री मुजफ्फर हुसैन ने लिखा था। उसके अनुसार 'उस समय आतंकी हमलों के बाद जो अनेक गुप्त जानकारियां व सूचनायें मिल रही थीं उनसे पता चलता था कि देवबंद मदरसा आतंकवादियों का अड्डा है। यहां न केवल आतंकवादी जन्म लेते हैं बल्कि अन्य देशों में भी उनका निर्यात किया जाता है। क्योंकि देवबंद का मदरसा भारतीय उपखंड के मुसलमानों के लिए 'मक्का' के समान है, इसलिये हमारी सरकारें इसके प्रति उदासीन रहती हैं।

अगर कोई इसके विरुद्ध कुछ बोलता है तो तुरंत मुसलमान 'मजहब पर हमला' कहकर हल्ला मचाने लगते हैं। इस मदरसे में देश-विदेश से मौलाना व मुफ्ती बनने के लिये मुस्लिम विद्यार्थी आते रहते हैं। इस संस्थान को भारतीयों के अतिरिक्त अन्य (मुस्लिम) देशों से भी सहायता मिलती रहती है। इस देवबंदी मदरसे की छाप ऐसी है कि वह जो इस्लाम के विषय में कहता है उसे अंतिम शब्द माना जाता है। इसीलिये इस मदरसे के विरुद्ध बहावी और अहले हदीस पंथ का मुसलमान कुछ भी सुनना पसंद नहीं करता। भारत के मुसलमानों ने इसको जाने-अनजाने में इस्लामी शिक्षा का ठेकेदार बना दिया है। इस मदरसे के मौलाना कुछ भी कहें, उसे आसमान से उतरा हुआ सत्य समझ लिया जाता है। देवबंद केवल अपनी मजहबी शिक्षा के लिये ही प्रसिद्ध नहीं है बल्कि 'फतवे' जारी करने वाला भी सबसे बड़ा प्रतिष्ठान है। जब कभी उसके फतवे पर कोई मुसलमान अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तो भारत सरकार निष्क्रिय हो जाती है। फतवो के सामने भारतीय संविधान व भारतीय दंड संहिता की धाराओं का कोई महत्व नहीं रहता'।

इस मदरसे के मौलाना कुछ भी कहें, उसे आसमान से उतरा हुआ सत्य समझ लिया जाता है। देवबंद केवल अपनी मजहबी शिक्षा के लिये ही प्रसिद्ध नहीं है बल्कि 'फतवे' जारी करने वाला भी सबसे बड़ा प्रतिष्ठान है। जब कभी उसके फतवे पर कोई मुसलमान अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तो भारत सरकार निष्क्रिय हो जाती है।

लेखक महोदय ने आगे लिखा है कि 'जब 2008 में मुम्बई आतंकी हमला हुआ था तो सारी दुनिया सहम गयी थी। अनेक देश इस आतंकी हमलों को कैसे रोका जाये और आतंकवाद को किस प्रकार नष्ट किया जाये आदि पर विचार करने को विवश हो गये। संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) में पाकिस्तान के तत्कालीन प्रतिनिधि अब्दुल्ला हुसैन हारुन ने कहा कि ' यह देवबंदी उलेमाओं का दायित्व है कि उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेशों व कबाइली क्षेत्रों में आतंकवाद को समाप्त करने के लिये देवबंद पर शिकंजा कसें, क्योंकि आतंकवाद देवबंद मदरसे की कोख से जन्म लेता है'। उन्होंने आगे कहा कि 'भारत सरकार हम पर आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाती है, लेकिन वास्तविकता में पाकिस्तान में आतंकवाद का निर्यात भारत से होता है, जिसका जनक देवबंद मदरसा है'। उनके कहे अनुसार 'अफगानिस्तान व पाकिस्तान में जो आतंकवाद फल-फूल रहा है उसका एकमात्र जिम्मेदार देवबंद मदरसा ही है। साथ ही उन्होंने देवबंद के विरुद्ध मुस्लिम उलेमाओं को फतवा जारी करने को कहा, जिससे इस भूभाग पर जिहादी पैदा होने बंद हो जायें'। परंतु देवबंद के समर्थकों ने पाकिस्तान के इन आरोपों की तीव्र भर्त्सना की थी और उल्टा पाकिस्तान को ही आतंक का जनक व तालिबान की शरणगाह बताया था। उनके समर्थकों ने यह भी कहा कि पाकिस्तान देवबंद का उसी समय से विरोधी है जबसे देवबंदियों ने पाकिस्तान के निर्माण का विरोध किया था। देवबंद वालो ने पाकिस्तानी प्रतिनिधि को ही षड्यंत्रकारी बताया।

परंतु श्री मुजफ्फर हुसैन ने अपने लेख में स्पष्ट किया है कि 'पाकिस्तान के दूत ने जिस कड़वे सच को संयुक्त राष्ट्र संघ में उजागर किया उसे देवबंद के समर्थक व मौलाना कितना ही न माने लेकिन क्रोध में आदमी सच बोल जाता है। इस प्रकार पाकिस्तानी दूत हारुन ने दुनिया के सामने सच उगल दिया कि आतंकवाद का जनक केवल और केवल देवबंद है। अगर हारुन यह बात नहीं कहते तो भी दुनिया जानती है कि दुनिया में जिहाद का नारा कौन लगाता है ? एक मदरसे का काम पढ़ाना और छात्रों को बुद्धिमान बनाना होता है लेकिन देवबंद ने तो सारे मुसलमानों की हर बात का ठेका ले रखा है। वे सरकार और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों के विरुद्ध आंदोलन करें, सरकार क्या पढ़ायें उसका निर्णय करें आदि-आदि। संक्षेप में कहा जाये तो देवबंद का मदरसा शिक्षण संस्थान के साथ-साथ मुसलमानों की राजनीति का भी एक अड्डा बन चुका है। इसलिये अगर पाकिस्तानी दूत हारुन उन पर जो आरोप लगा रहें हैं, उससे वे दूर नहीं भाग सकते'। जिहाद, काफिर और दारुल-हरब जैसे घृणास्पद व वैमनस्यकारी मानसिकता बढ़ाने वाले शब्दों की सार्थकता क्या ये मदरसे वाले कभी मानवीय परिप्रेक्ष्य में प्रमाणित कर सकते हैं? क्या इसके विरुद्ध इन्होंने कोई आंदोलन चलाया है?

उपरोक्त लेख में दिये गये विवरण से अमेरिकी सांसद श्रीमान एड रॉयस की विचारधारा को जोड़ कर समझा जाये तो आतंकवाद पर अंकुश लगाने के लिये देवबंदी मदरसों की विचारधाराओं में या तो आवश्यक परिवर्तन किये जायें या फिर इनको प्रतिबंधित किया जाय, जिससे वैश्विक जिहाद से मानवता की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

A Home for Every one

Golden Wave Infratech Pvt. Ltd.

Visavi CO. PVT. LTD.

103, PANCSHEEL ENCLAVE, LAL KUAN, G.T. ROAD, GHAZIABAD Phone Office : +91-9871303060
E-mail : info@visavi.in | Web : www.visavi.in

Sanjay Yadav Director

Products List

SHIVORINE
Blood Purifire Syrup

SHIVOREX
Cough Syrup

SHIVOLIV 59
Syrup

SHIV-SUDHA
Uterine Tonic

SHIVONIGHT
Power Capsule

SHIV AYURVEDIC
Hair Oil

- कुर्मायासव
- अमृतारिष्ट
- अर्जुनारिष्ट
- पूर्नवारिष्ट
- दाक्षासव
- अशोकारिष्ट
- अश्वगंधारिष्ट
- खादिरिष्ट
- चंदनाआसव
- शिवारिष्ट
- दशमूलारिष्ट
- अभियारिष्ट
- वासारिष्ट
- कुर्टजारिष्ट

SHIV AYURVEDIC AUSHDHALAYA

Shiv Ayurvedic Aushdhalaya

Head Office : Sec-8/113, Chiranjeev Vihar, Ghaziabad
Branch Office : H. No.57, Nehru Chowk, Bhokerheri, Muzaffarnagar
B-5, Rkpuram, Govindpuram, Ghaziabad
Website : www.shivayurvedicaushdhalaya.com

सूर्या इन्क्लेव

सूर्या नगर

निकट बांके बिहारी डेन्टल कॉलेज
मसूरी, गाजियाबाद

- एन-24 से पैदल दूरी पर
- पानी-बिजली की समूचित व्यवस्था
- पक्की नाली व काली सड़कें
- स्कूल, अस्पताल, पार्क की भी व्यवस्था

हेड ऑफिस :- RDC राजनगर, गाजियाबाद

सम्पर्क सूत्र : 9654652505

सम्पूर्ण विश्व के प्राचीनतम तीर्थों में से एक विलुप्त शक्तिपीठ शिवशक्तिधाम, डासना के गौरव को पुनः स्थापित करने हेतु 100 दिवसीय भिक्षा यात्रा

भक्तगण,

गाजियाबाद में डासना स्थित शिवशक्तिधाम देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और जगदम्बा महाकाली की ऐसी शक्तिपीठ है, जो विश्व के सर्वाधिक पूजित तीर्थस्थलों में से एक है। शक्तिपीठ को विदेशी आक्रमणकारियों ने ध्वस्त कर दिया था। अपनी आदत के अनुसार हिन्दू शक्तिपीठ को भूल गये। यति नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज शक्तिपीठ को पुनः सनातन धर्म का सर्वाधिक शक्तिशाली पीठ बनाने के लिए कृतसंकल्पित हैं। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वो मकर संक्रांति 14 जनवरी 2019 से गाजियाबाद में सौ दिवसीय भिक्षा यात्रा कर रहे हैं। सभी भक्तों से अनुरोध है कि यात्रा में तन-मन-धन से सहयोग करने की कृपा करें। देवाधिदेव महादेव शिव और जगदम्बा महाकाली डासना वाली आप पर कृपा करें।

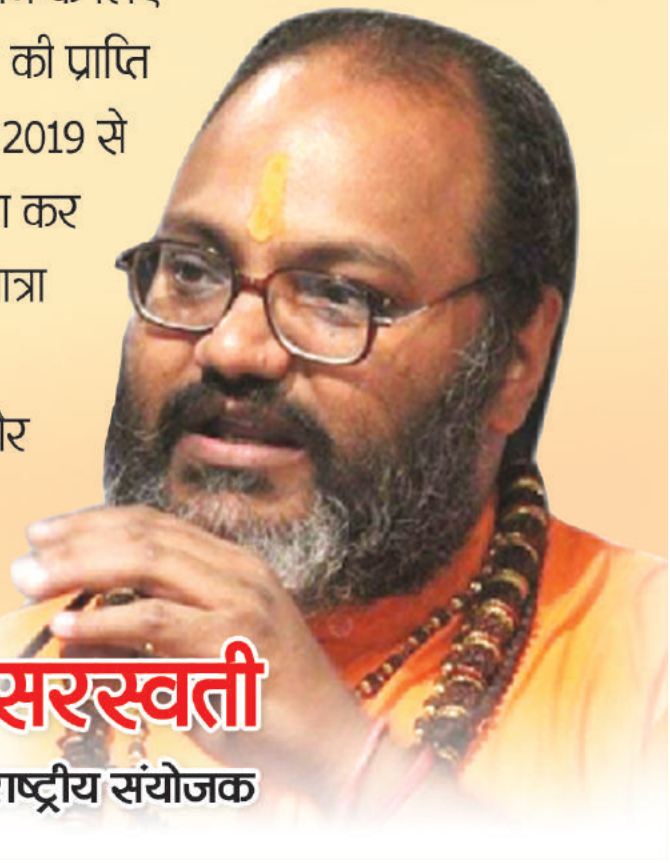

यति नरसिंहानंद सरस्वती

अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक